हंसवंशावतंस -श्रीमन्महामहिम - विद्यामार्तण्ड
निग्रहाचार्य - श्रीभागवतानंदगुरुकृता

धुरन्धरसंहिता

संस्कृत पाठ एवं हिन्दी अनुवाद सहित

लेखक
श्रीभागवतानंद गुरु

सम्पादक एवं अनुवादक
ब्रजेश पाठक 'ज्यौतिषाचार्य'
(लब्धस्वर्णपदक)

हरिहर ज्योतिर्विज्ञान संस्थान के सौजन्य से प्रकाशित
NOTION PRESS

NOTION PRESS
India. Singapore. Malaysia.

ISBN xxx-x-xxxxx-xx-x

First Published – 2021
Second Edition – November - 2021

श्रीभागवतानंद गुरु

हंसवंशावतंस – श्रीमन्महामहिम - विद्यामार्तण्ड
निग्रहाचार्य - श्रीभागवतानंदगुरुकृता

धुरन्धरसंहिता

संस्कृत पाठ एवं हिन्दी अनुवाद सहित

लेखक
श्रीभागवतानंद गुरु

सम्पादक एवं अनुवादक
ब्रजेश पाठक 'ज्यौतिषाचार्य'
(लब्धस्वर्णपदक)

हरिहर ज्योतिर्विज्ञान संस्थान के सौजन्य से प्रकाशित
NOTION PRESS

धर्मसंरक्षणार्थायाधर्मसंहारहेतवे | निग्रहाणाञ्च धर्माज्ञा लोके लोके प्रवर्द्धताम् ||



हंसवंशावतंश श्रीमन्महामहिम विद्यामार्तण्ड श्रीभागवतानंद गुरु (निग्रहाचार्य)

विषय सूची

सम्पादकीय

चैत्र कृष्ण एकादशी, दिन – बुधवार, तदनुसार 7 अप्रैल 2021 को मैंने सुबह-सुबह तड़के श्रीभागवतानंद गुरुजी को फोन लगाया और उनसे अपने स्वप्न के सम्बन्ध में चर्चा की। उस रात मैंने स्वप्न देखा था कि मैं किसी घनघोर जंगल में किसी ऋषि के आश्रम में हूँ और जिज्ञासु की भांति उनके समक्ष उपस्थित होकर अपने मन की जिज्ञासा पूछ रहा हूँ। मैंने उनसे पूछा था कि - हे महात्मन् ! श्रीभागवतानंद गुरुजी की उत्पत्ति का रहस्य क्या है ? जैसे ही मैंने यह प्रश्न रखा, मेरे साथ बैठे आश्रम के अन्य साधकों ने भी मेरे प्रश्न का समर्थन किया और कहा कि इस प्रश्न का उत्तर तो हम भी बहुत समय से जानना चाहते हैं, पर कभी पूछने का साहस नहीं कर पाए। ऋषि ने उत्तर दिया कि प्रकृति के रहस्यों को जानने का अधिकार किसी को नहीं है, जो भविष्य के गर्भ में है वह भविष्य के गर्भ में ही रहना चाहिए।

फिर भी क्योंकि यह प्रश्न किसी गुरु के समक्ष पूछा गया है और शिष्यों के द्वारा पूछा गया है, इस प्रश्न में किसी प्रकार की कोई बुरी भावना सम्मिलित नहीं है, इसलिए मैं इसका उत्तर प्रस्तुत कर रहा हूँ किन्तु आप लोग मेरा यह उत्तर स्मरण नहीं रख पाएंगे, यह आपको विस्मृत हो जाएगा। इस प्रश्न वाले स्वप्न के पटाक्षेप के बाद दूसरे स्वप्न में मैंने देखा कि मेरे हाथ में श्वेत मुखपृष्ठ वाली कोई पुस्तक है और मैं उस ग्रन्थ का अध्ययन कर रहा हूँ । उस ग्रन्थ का नाम है "धुरन्धर संहिता" । मैंने यह सारी बातें अगले दिन प्रातः काल उठते ही श्रीभागवतानंद गुरुजी को फोन पर बताया। क्योंकि जैसा कि उन महात्मा की चेतावनी थी कि हम लोग सब कुछ भूल जाएंगे, वह सब कुछ सत्य प्रतीत हो रहा था और जो कुछ जितना कुछ मुझे याद था वह मैंने शीघ्रातिशीघ्र श्रीभागवतानंद गुरुजी को बताया कि कहीं मैं सारी बात भूल ना जाऊं। स्वप्न की सारी बातें उनसे बताने के पश्चात् मैंने जानना चाहा कि धुरन्धरसंहिता नाम की कोई पुस्तक विद्यमान् भी है या नहीं ? क्योंकि मेरी दृष्टि में ऐसी कोई पुस्तक अभी तक नहीं आई थी।

श्रीभागवतानंद गुरु

श्रीभागवतानंद गुरुजी ने भी बताया कि इस नाम की कोई पुस्तक नहीं है, क्योंकि अब तक इस नाम के किसी ग्रन्थ की चर्चा संदर्भ रूप में या प्रकरण ग्रन्थ में मुझे कहीं नहीं मिली है। इस दूरभाषीय वार्ता के बाद मैं अपनी दिनचर्या में लग गया। सहसा दोपहर में श्रीभागवतानंद गुरुजी ने मुझे "धुरन्धरसंहिता" नामक ग्रंथ का मुख्य पृष्ठ तैयार करके ह्वाट्सएप पर भेजा और कहा कि आपके द्वारा चर्चा किए जाने के पश्चात् ग्रन्थ का नामकरण साक्षात् पुराण-पुरुषोत्तम भगवान् के द्वारा ही किया गया है ऐसा मानकर मेरे मन में एक हज़ार श्लोकों से सुसज्जित "धुरन्धरसंहिता" ग्रन्थ लिखने की अन्तःप्रेरणा उत्पन्न हो रही है और मैं इस कार्य को प्रारम्भ कर चुका हूँ। इस ग्रन्थ का सम्पादन-अनुवाद-टंकण आदि कार्य आपके सहयोग से पूरे होंगे।

स्वप्न सत्य होते हैं, ऐसा सुना है और अनुभव भी किया है किन्तु यह स्वप्न इतनी शीघ्रता और इस प्रकार से फलीभूत होगा मुझे इसका थोडा भी अनुमान नहीं था। उनके प्रस्ताव के बाद मैं बहुत रोमांचित हो गया और मैंने मानो खुशी के मारे उछलते हुए इस परम पुनीत कार्य के लिए स्वीकृति दी। यह कार्य पूर्ण हुआ और आज ग्रन्थ-परिणति रूप में आपके हाथों में शोभायमान हो रहा है। यद्यपि इस ग्रन्थ का सम्पादन-अनुवाद आदि कार्य इस अकिंचन के सामर्थ्य से बहुत परे था किन्तु श्रीभागवतानंद गुरुजी की कृपा ने असम्भव को भी सम्भव कर दिखाया है। इस ग्रन्थ में जो भी श्रेष्ठता है, वह सब निग्रहाचार्य श्रीभागवतानंद गुरुजी की नैष्ठिक तपस्या और ज्ञान का प्रतिरूप है तथा जो कमियाँ या अशुद्धियाँ हैं वे सभी मुझ मूढ़ की अज्ञानता के परिणाम हैं।

इस ग्रन्थ में बीस पटल हैं। प्रथम पटल में निग्रहागम के अव्यक्ताद्वैत सिद्धान्तों को प्रकाशित गया है। साथ ही इस पटल में ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन, सृष्टि प्रक्रिया, प्रकृति-पुरुष का स्वरूप, विष्णु-लक्ष्मी, शिव-पार्वती, इन्द्र-शची आदि देवताओं का वर्णन, जीव के स्वरूप का वर्णन, सृष्टि के सृजन-पालन एवं संहार प्रक्रिया आदि का

वर्णन, भारतवर्ष का माहात्म्य, ब्रह्म की शरणागति, योगमार्ग की विशेषता आदि विषय सन्निहित हैं। द्वितीय पटल में चेतन की गुण वृत्ति, काल का स्वरूप, काल की क्रियाएं, काल की गति, नारायण की महिमा, ब्रह्म की श्रेष्ठता, जीव और शिव की संज्ञा का विवेचन तथा जीव-ब्रह्म की एकता आदि विषय सन्निहित हैं। तृतीय पटल में आत्मा का स्वरूप, योग की विशेषता, अष्टांग योग, जप के प्रकार आदि विषय सन्निहित हैं। चतुर्थ पटल में शर्व, अन्तक, माया, प्राणवायु आदि की चेष्टाएँ, जंगम शरीर, दैव-पौरुष आदि कर्म, ब्रह्म की मानुषी मूर्तियां, ब्रह्म को प्राप्त करने के साधन, संसार का अस्तित्व, आशा की मीमांसा, भगवान् विष्णु और ब्रह्म की एकता और अभेद आदि विषय सन्निहित हैं।

पञ्चम पटल में सब विकारों का वर्णन, अहंकार की गति, आशा से हानि, मनुष्य के लिए कर्तव्याकर्तव्य, भगवान् विष्णु का महत्व, भगवान् विष्णु और शिव में अभेद, जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्ति अवस्थाएं, जीवन की व्यावहारिक शिक्षाएं, विविध आश्चर्य आदि विषय सन्निहित हैं। षष्ठ पटल में संसार की उत्पत्ति का कारण, परा प्रकृति, पवित्र भगवन्नाम का माहात्म्य, भगवान् शिव और नारायण में अभेद, भारतवर्ष की महिमा, परब्रह्म के व्यक्त देह, सात्विक-राजस आदि मार्ग, समत्व, ज्ञान और ध्यान की महिमा, गुरु की महिमा, अगले-अगले जन्मों का कारण आदि विषय सन्निहित हैं।

सप्तम पटल में सभी जातियों के कृत्य, पञ्चायतन देवताओं के ध्यान, दैनिक कार्यों को सम्पादित किए जाने के मन्त्र, नाम-संकीर्तन की महिमा, भगवद्भक्त की महिमा, किए गए कर्म का ब्रह्म के प्रति समर्पण आदि विषय सन्निहित हैं। आठवें से लेकर सोलहवें पटल तक शब्दब्रह्म की व्याख्या के अन्तर्गत दैवीय लिपिमालिका का वर्णोद्धार रहस्य, न्यास एवं पर्याय उनके मातृकाओं के स्वरूप के साथ प्रकाशित किया गया है जो अपने आप में अद्भुत है। सत्रहवें पटल में सत्य का महत्व, व्यक्ति के लिए कर्तव्याकर्तव्य, दम आदि तत्त्वों के विषय, गुरु की महिमा तथा गुरु की विभिन्न अवस्थाओं के बारे में बताया गया है।

श्रीभागवतानंद गुरु

अठारहवें पटल में सदाचार का वर्णन, मानव जीवन के विभिन्न कर्तव्याकर्तव्य, व्यावहारिक जीवन के दैनिक व्यवहार तथा संस्कार द्वारा सिखाए जाने वाले विषय समाहित हैं। उन्नीसवें पटल में सगुण ब्रह्म के अन्तर्गत गणेश, शारदा, लक्ष्मी, सूर्य आदि नवग्रह, इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति आदि दिक्पाल-मण्डल के देवता, बीसवें पटल में भगवान् शिव शम्भु का ध्यान, गौरी, आकाश, पृथ्वी, भैरव, वीरभद्र, स्कन्द, कालपुरुष, गरुड़, ज्वर, ब्रह्मा, ब्रह्माणी, प्रजापति आदि के ध्यान के साथ बताए गए हैं तथा ग्रन्थ लिखने का प्रयोजन आदि विषय समाहित हैं।

यद्यपि धुरन्धर शब्द दक्ष, श्रेष्ठ, पण्डित आदि अर्थों में लोक में प्रसिद्ध है किन्तु ग्रन्थ के शीर्षक के रूप में जो धुरन्धर शब्द दृष्टिगोचर है, अन्य अर्थ का वाचक है। वस्तुतः 'धुरं भारं वहति इति धुरन्धरः' इस व्युत्पत्ति के अनुसार धुर अम् उपपद रहते हुए धृ धातु से खच् प्रत्यय करके मुमागम करने पर धुरन्धर शब्द निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ होता है वृष। मनुस्मृति के आठवें अध्याय के सोलहवें श्लोक में स्पष्ट वर्णित है- 'वृषो हि भगवान् धर्मः'। भाष्यकार श्रीनिग्रहाचार्यजी ने भी परमाक्षरसूत्रों के सूत्रविस्तारभाष्य में 'वृषो हि भगवान् धर्म इति स्कान्दे' इस प्रकार वृष शब्द की धर्मपरक व्याख्या की है तथा इस ग्रन्थ में भी वृष के ही समान धर्म के चार चरणों का उल्लेख भी किया है।

ग्रन्थकार ने कालजिह्वाप्रशस्ति-गृहपतिसूत्रम् के सातवें सूत्र 'चत्वारः पादाः' के अन्तर्गत धर्म के चार चरणों की व्याख्या की है। इन तथ्यों के अनुसार धर्म को वृषरूप बताया गया है। संहिता का अर्थ संयोजन होता ही है अतः सनातन वैदिक धर्म के सिद्धान्तों तथा जीवनशैली का संयोजन एक हजार से कुछ अधिक श्लोकों में किए जाने से इस ग्रन्थ का नाम धुरन्धर संहिता बहुत सार्थक और उपादेय है। इस ग्रन्थ के टंकण आदि कार्य करते समय मुझे कई अद्भुत अलौकिक अनुभूतियाँ हुईं जिनका वर्णन शब्दों में सम्भव नहीं है। ऐसा लगा मानो मेरी शुद्धि हो गई हो, मेरे चित्त का शोधन हो गया हो और यही सब मैंने स्वप्न में पढा था।

श्रीभागवतानंद गुरु

पाँचवें पटल के सम्पादन के मध्य सर्वाधिक विस्मयकारी रोमाञ्चकारी अनुभूतियों से मैं इतना प्रभावित हुआ कि मैंने उसी दिन से इसको अपने दैनिक पूजन में शामिल कर लिया। मैं प्रतिदिन इसका पाठ कर रहा हूँ और मुझे विश्वास है कि इसका पाठ करने से एक न एक दिन मेरा जीवन अवश्य बदल जाएगा। इस ग्रन्थ को प्रत्येक सनातनी व्यक्ति को अवश्य पढना चाहिए। विशेषकर सातवें पटल में वर्णित दैनिक जीवनोपयोगी मन्त्रों का प्रयोग तो व्यक्ति के जीवन को अध्यात्म की विशेष ऊर्जा से भर सकता है।

इस संस्करण में विगत संस्करण के कुछ टंकण दोषों को भी संशोधित कर दिया गया है। इस पुस्तक का प्रकाशन अक्षय तृतीया को करने की योजना थी किन्तु इसका प्रकाशन नृसिंह चतुर्दशी को ही हो पाया, बाद में हमें ज्ञात हुआ कि नृसिंह भगवान् का एक नाम धुरन्धर भी है। मैं दावा कर सकता हूँ कि इसको पढने से पाठक के जीवन में बहुत से सार्थक बदलाव निश्चित रूप से आएँगे। यह ग्रन्थरत्न यशस्वी हो, अपने ज्ञान भण्डार से आप सब का कल्याण करता रहे, इसी कामना के साथ .... आपका ही ...

ब्रजेश पाठक 'ज्यौतिषाचार्य'

नृसिंह चतुर्दशी

*_*_*

हरिहर ज्योतिर्विज्ञान संस्थान

Mob.- 9341014225
Website - www.grahrasi.com
E-mail - astrograhrashi@gmail.com
Facebook- www.facebook.com/grahrashi
YouTube - www.youtube.com/c/Grahrashi

*_*_*

अथ प्रथमः पटलः

निग्रह उवाच

ब्रह्मज्ञानं प्रवक्ष्याम्यव्यक्ताद्वैतप्रकाशकम् |
अयमात्मा परंब्रह्म एवं ज्ञात्वा विमुच्यते ||०१||
आत्मा देहो न भवति देहस्तु त्रिगुणात्मकः |
आत्मा ब्रह्म परं ज्योतिर्देहाहङ्कारवर्जितः ||०२||
कामत्यागात्तु विज्ञानं सुखं ब्रह्म परं पदम् |
तज्ज्योतिः परमं ब्रह्म भर्गस्तेजो यतः स्मृतम् ||०३||

निग्रहाचार्य ने कहा - मैं अव्यक्त अद्वैत को प्रकाशित करने वाले ब्रह्मज्ञान को कहूँगा | यह आत्मा परब्रह्म है, यह जानकर मुक्त होता है | देह आत्मा नहीं होता है, देह तीनों गुणों से बना हुआ है | देह के अहंकार से रहित आत्मा परब्रह्म है | कामनाओं के त्याग से विशिष्ट ज्ञान होता है, वही सुख है, ब्रह्म और परमपद है | उसकी ज्योति ही परम ब्रह्म है क्योंकि उस ज्योति को ही तेज कहा गया है |

तदेव निष्कलं ब्रह्म निर्विकल्पं निरञ्जनम् |
विशुद्धोऽयं तथा रुद्रो निगमे शिव उच्यते ||०४||
शिवेन प्रकृतिर्दृष्टा शैवी शक्तिरनुत्तमा |
सर्गादौ सा गुणैर्युक्ता पुरा व्यक्ता स्वभावतः ||०५||
नमस्ते ब्रह्मबीजाय ब्रह्मगर्भाय ते नमः|
आनन्दं ब्रह्म विज्ञानं तत्त्वमस्यहमस्मि तत् ||०६||

वही निष्कल ब्रह्म निर्विकल्प और निरंजन है | यह विशुद्ध है, दुःखों का नाश करता है, इसे वेद में शिव कहा गया है | शिव के द्वारा सर्वोत्तमा शैवी शक्ति देखी जाती है | पहले सृष्टि के प्रारम्भ में वह गुणों से युक्त होकर स्वभावतः व्यक्त होती है | ब्रह्मबीज के लिए नमस्कार है, ब्रह्मगर्भ के लिए नमस्कार है | आनन्दरूपी विशिष्ट ज्ञान ब्रह्म है, वही तुम हो, वही मैं हूँ |

रजोगुणेन भुवनमानञ्ज सचराचरम् |
स पालयति सत्त्वेन तमसा बल्हते जगत् ||०७||
रूपेणाप्रतिमा तस्य माया सङ्क्ष्यकारिणी |
यस्मादनन्तफलदस्तस्मात्तं समुपासय ||०८||
गुणेन रूपेण श्रुतेन युक्तो जनाभिरामोऽखिललोकपालः |
स वासुदेवो महतो महीयानचिन्त्यकर्मागुविनाशदक्षः ||०९||
तेजसा वयसा साध्वी रूपेण च गुणेन च |
प्रकृतेः पूर्वसंस्कारैस्स्थित्यामव्यभिचारिता || १०||

रजोगुण के माध्यम से उसने चराचर के साथ इस संसार का निर्माण किया | वह सत्व के माध्यम से इसका पालन करता है और तम के द्वारा इसका नाश करता है | सबों का नाश करने वाली उसकी माया रूपदृष्ट्या अतुलनीया है | चूंकि वह ब्रह्म अनन्त फल को प्रदान करने वाला है, अतएव उसकी सम्यक् प्रकार से उपासना करो | गुणों के द्वारा, स्वरूप के द्वारा, कीर्ति आदि के द्वारा वे युक्त हैं | प्राणियों को प्रसन्न करने वाले एवं समस्त लोकों के स्वामी हैं | वे वासुदेव महान् जनों से भी अधिक महान् हैं | उनके कर्मों की कल्पना भी नहीं की जा सकती | वे अन्धकार को दूर करने में दक्ष हैं | तेज, आयु, गुण एवं रूप से प्रकृति साध्वी है | (केवल ब्रह्मपरायणा है) पूर्वसंस्कार के कारण ही प्रकृति की स्थिति में अव्यभिचारिता है |

पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाशमेव च |
अहङ्कारो महांश्चैव प्रकृतिः परमा तथा ||११||
सत्त्वं रजस्तमश्चैव गुणत्रयमुदाहृतम् ।
साम्यावस्थितिरेतेषां प्रकृतिः परिकीर्तिता ||१२||
पराभिभवसामर्थ्यं लोके तेज उदाहृतः |
पुमानात्मा तु तेजस्वी कथ्यते ब्रह्मवादिभिः ||१३||
पुमानेकाक्षरः शुद्धः सोऽप्यंशः परमात्मनः |
प्रकृतिः पुरुषश्चेतौ लीयेते परमात्मनि ||१४||

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश, अहंकार और महत्तत्त्व, ये सब परमा प्रकृति (के अंश) हैं | सत्वगुण, रजोगुण एवं तमोगुण, ये तीन गुण बताये गए हैं | इन तीनों की साम्यावस्था को प्रकृति कहा गया है | दूसरे के सामर्थ्य को पराभूत करने को संसार में तेज कहते हैं | पुरुषात्मा ब्रह्मवादियों के द्वारा तेजस्वी कहा जाता है | वह पुरुष एक है, अविनाशी और शुद्ध है | वह भी परमात्मा का अंश है | प्रकृति और पुरुष, ये दोनों परमात्मा में लीन होते हैं |

विष्णुस्तु पुरुषः प्रोक्तो रमा वै प्रकृतिः स्मृता |
पौलोमी प्रकृतिरिति पुरुषः पाकशासनः ||१५||
महादेवस्तु पुरुषः प्रकृतिर्हिमशैलजा |
हुताशनश्च पुरुषः स्वाहा च प्रकृतिः स्मृता ||१६||
कृष्णस्तु पुरुषो ज्ञेयः प्रकृतिर्वृषभानुजा |
प्रकृतिर्मैथिली ज्ञेया राघवः पुरुषः स्मृतः ||१७||

विष्णु को पुरुष कहा गया है और लक्ष्मी प्रकृति मानी गयी है | शची प्रकृति है और इन्द्र पुरुष हैं | महादेव पुरुष हैं एवं हिमालयपुत्री पार्वती प्रकृति हैं | आहुतियों का भक्षण करने वाले अग्नि पुरुष हैं एवं स्वाहा को प्रकृति कहा गया है | श्रीकृष्ण को पुरुष जानना चाहिए एवं वृषभानु की पुत्री राधा को प्रकृति | मैथिली सीता को प्रकृति जानना चाहिए और राघव श्रीराम पुरुष बताये गये हैं |

प्रियते पूर्यते तस्मात्पुरं देहस्तु कथ्यते |
पुर्षु वै पूरयन् शेते तस्माज्जीवस्तु पूरुषः ||१८||
पुरुषादपि यः श्रेष्ठः स्वयंकर्ता स्वयंप्रभः |
निरानन्दः सदानन्दः स ज्ञेयः पुरुषोत्तमः ||१९||
सोऽनन्तो नैव तस्यान्तः सङ्ख्यानं नापि विद्यते |
प्रकृतिः पुरुषश्चैव सर्वे नारायणात्मकाः ||२०||
श्रोत्ररन्ध्रेन्द्रियाणां वा शब्दादिविषयस्य च |
हेतुभूतमशेषस्य सा परा प्रकृतिर्भवेत् ||२१||

प्रिय लगता है और आवृत्त करके भरता है, अतएव देह को पुर कहा जाता है | इन पुरों को व्याप्त करके शयन करता है, अतएव जीव को पुरुष कहा गया है | इस जीवसंज्ञक पुरुष से भी जो श्रेष्ठ है, जो अपनी प्रभा एवं स्थिति का स्वयं ही कारण है, जो (अपेक्षित) आनन्द से रहित एवं (अनपेक्षित) आनन्द से युक्त है, वह पुरुषोत्तम के रूप में जाना जाता है | वह अनन्त है, उसका कोई अन्त या परिमाण भी उपलब्ध नहीं होता | प्रकृति और पुरुष, ये सभी नारायणरूपी हैं | कान-नाक आदि इन्द्रिय अथवा शब्द आदि विषय का, सब कुछ का हेतु / कारण वह परा प्रकृति ही होती है |

पुराणानि च शास्त्राणि तस्य सत्त्वेन बृंहिताः|
सत्त्वेन मुच्यते जन्तुः सत्त्वं नारायणात्मकम् ||२२||
श्रद्धया शौचसत्याभ्यां तथा शीलादिभिर्गुणैः |
सत्त्वेन चैव योगात्मा देहबन्धाद्विमुच्यते ||२३||
दौर्मनस्यं निरोद्धव्यं वैराग्येण परेण तु |
तमसा रजसा चैव संस्पृष्टं दुर्मनः स्मृतम् ||२४||
सिद्धा देवाश्च ऋषयः सत्त्वस्था ध्यानतत्पराः|
ध्यानेन सदृशन्नास्ति शोधनं पापकर्मणाम् ||२५||

पुराण एवं शास्त्र आदि सब उसके ही सत्वसामर्थ्य से विस्तृत हुए हैं | सत्वगुण का अवलम्बन करने से जन्तु मुक्त हो जाता है क्योंकि सत्व नारायण रूपी है | श्रद्धा से, पवित्रता एवं सत्याचरण से, शील आदि सद्गुणों के द्वारा एवं सत्वगुण के माध्यम से योगात्मा व्यक्ति देह के बन्धन से मुक्त हो जाता है | परम वैराग्य के द्वारा दुर्मन की भावना को नियन्त्रित करना चाहिए | तमोगुण एवं रजोगुण से संस्पृष्ट मन को दुर्मन कहा गया है | सिद्धगण, देवता और ऋषि भी सत्वगुण में स्थित होकर ध्यान में लगे रहते हैं | पाप कर्म करने वालों के लिए शुद्धि हेतु ध्यान के समान दूसरा उपाय नहीं है |

ध्यानबुद्ध्या तमोभावमट्टेत नियतेन्द्रियः |
तमसि निःसृते जीवे रजसा शुद्ध्यते ततः ||२६||
तमः प्रच्छाद्य रजसा रजः सत्त्वेन स्फिट्टयेत् |
ततः सत्त्वस्थितो भूत्वा योगं युञ्जीत योगवान् ||२७||
ईशानसंज्ञकं ब्रह्म तमसा कालरूपकम् |
रजसा सर्वलोकानां सर्गलीलाप्रवर्तकम् ||२८||

सर्गे च रजसा युक्तः सत्त्वस्थः प्रतिपालने |
प्रतिसर्गे तमोद्रिक्तः स एव त्रिविधः क्रमात् ||२९||
सृष्ट्यादौ रजसा विश्वं मध्ये सत्त्वेन पाति यः |
तमसोऽन्ते ग्रसेदेतत्तस्मै सर्वात्मने नमः ||३०||
हिरण्यगर्भो रजसा तमसा शङ्करः स्वयम् |
सत्त्वेन सर्वगो विष्णुः सर्वात्मत्वे महेश्वरः ||३१||

अपनी इन्द्रियों को नियन्त्रित रखने वाला व्यक्ति ध्यानबुद्धि से तमोभाव को नष्ट करे | जब जीव तमस् से निकल जाता है तो उसके बाद रजस् से भी शुद्ध हो जाता है | रजोगुण के द्वारा तमोगुण को ढककर फिर रजोगुण को सत्त्वगुण से आच्छादित करे | उसके बाद सत्त्व में स्थित होकर योगी योग का नियोजन करे | ईशानसंज्ञक ब्रह्म तमोगुण के द्वारा कालरूपी होते हैं और रजोगुण के द्वारा सभी लोकों की सृष्टि के बाद उसकी लीला को बढ़ाने वाले होते हैं | सृष्टि के समय रजोगुण से युक्त होते हैं, उसका पालन करने के समय सत्वगुण में स्थित होते हैं | प्रलयकाल में तमोगुण से युक्त हो जाते हैं, यह तीन प्रकार की स्थिति क्रम से होती है | जो सृष्टि के प्रारम्भ में रजोगुण से युक्त होते हैं, मध्यकाल में सत्त्व के माध्यम से जो रक्षा करते हैं एवं अन्त में तमोगुण के द्वारा सबों का भक्षण कर लेते हैं, ऐसे सर्वात्मा ब्रह्म को प्रणाम है | रजोगुण से हिरण्यगर्भ (ब्रह्मा), तमोगुण से शंकर, सत्त्व से सर्वत्र गतिमान् विष्णु और तीनों के सम्मिश्रण से महेश्वर होते हैं |

प्रधानपुरुषातीतं प्रलयोत्पत्तिवर्जितम् |
तमसा कालरुद्राख्यं रजसा कनकाण्डजम् ||३२||
सत्त्वेन सर्वगं विष्णुं निर्गुणत्वे महेश्वरम् |
सत्त्वेन सर्वभूतानां स्थापकं परमेश्वरम् ||३३||

स धाता सैव कर्त्तास्य स लोकान्सृजति प्रभुः |
तस्य प्रसादाद्देवेन्द्रः प्राप्तवान्नाकसम्पदम् ||३४||
निष्कामबुध्या पुरुषं पुरातनं प्रपूजयेद्यो भुवि मानवर्षभः |
मोक्षाश्रमं यश्चरते यथोक्तं शुचिस्सदा केन्द्रितबुद्धियुक्तः ||३५||
अनिन्धनं ज्योतिरिव प्रशांतस्स ब्रह्मलोकं श्रयते द्विजातिः |
सकामबुध्या यदि चेन्मनुष्यस्तदा दिवि स्वर्गफलानि भुङ्क्ते ||३६||
सार्द्धं सुरेन्द्रेण सुधारसं वै पिबन्स्वपुण्यक्षयसम्परीते |
तत्रोष्य भूमौ पुरुषत्वमेत्य राजा भवेद्ब्राह्मणपुङ्गवो वा ||३७||

प्रधान पुरुष (आत्मा) से परे और प्रलय एवं उत्पत्ति से रहित परब्रह्म तमोगुण से कालरुद्र नाम वाले, रजोगुण से स्वर्णिम अंडे से उत्पन्न ब्रह्मा एवं सत्त्व में सर्वत्र गतिमान् विष्णु होते हैं | किसी भी एक गुण से प्रभाव से रहित, निर्गुण स्थिति में महेश्वर कहाते हैं | सत्त्वगुण से सभी प्राणियों को स्थापित रखने वाले परमेश्वर हैं | वही सबों का स्वामी है, सबों का पोषण करने वाला है | वही सबों का निर्माण करता है | उसकी ही कृपा से इन्द्र ने स्वर्ग में स्वर्गीय सम्पदा को प्राप्त किया | जो नरश्रेष्ठ संसार में निष्काम बुद्धि का आश्रय लेकर पुरातन पुरुष की पूजा करता है, मोक्ष की कामना रखकर जैसा शास्त्रों में बताया गया है, वैसा आचरण करता है, सदैव पवित्र रहता है एवं इष्ट के प्रति केन्द्रित बुद्धि से युक्त रहता है, वह ब्राह्मण उसी प्रकार से शान्त हो जाता है, जैसे इन्धन के अभाव में ज्योति शान्त हो जाती है और वह ब्रह्मलोक को प्राप्त कर लेता है | यदि मनुष्य सकाम बुद्धि के द्वारा ऐसा ही उपक्रम करे तो आकाश में स्वर्गीय भोगफल का उपभोग करता है | देवराज इन्द्र के साथ अमृत का पान करता है एवं अपने पुण्य के क्षीण होने पर उस लोक का उपभोग करने के अनन्तर मर्त्यलोक में पुरुषत्व को प्राप्त करके राजा या श्रेष्ठ ब्राह्मण बनता है |

दिवि ते योगविभ्रष्टा भुक्त्वा भोगानमानुषान् |
शुचीनां श्रीमताङ्गेहे जायन्ते ब्रह्मवादिनः ||३८||
भारते जन्म सम्प्राप्य पुनर्योगबलान्विताः |
प्रार्थयन्ति परं ज्योतिर्योगगम्यं पुरातनम् ||३९||
योऽनन्तरूपोऽखिलविश्वरूपो गर्भेषु लोकान्वपुषा बिभर्त्ति |
प्रसीदतामेष स देवदेवः स्वमाययालोकितबालरूपः ||४०||
इन्द्राग्निकालासुरपाशिवायुसोमेशमार्त्तण्डधनेश्वराद्यैः|
यः पाति लोकान्परिपूर्णभावस्तमप्रमेयं शरणं प्रपद्ये ||४१||
एवं स्तुत्वा परंब्रह्म योगमार्गपथानुगाः |
सन्तरन्ति भवाम्भोधिं यथा सिन्धुं तिमिङ्गलः ||४२||

स्वर्ग में ऐसे योगभ्रष्ट जन अमानवीय (दिव्य) भोगों का उपभोग करके पवित्र आचरण एवं शोभा वाले जनों के घर में ब्रह्मवादी के रूप में जन्म लेते हैं | भारत में जन्म प्राप्त करके पुनः योगबल से सम्पन्न होकर योग के द्वारा जानने योग्य पुरातन परमज्योति की प्रार्थना करते हैं - 'जो अनन्त रूपों को धारण करते हैं, सम्पूर्ण संसार जिनका स्वरूप है, जो अपने शरीर में गुप्त रूप से सभी लोकों को धारण करते हैं, जो अपनी माया से स्वयं को बालक के रूप में प्रदर्शित करते हैं, ऐसे ये देवताओं के भी देवता प्रसन्न हों | इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, चन्द्रमा, ईशान, सूर्य, कुबेर आदि रूपों के द्वारा जो परिपूर्ण भाव से लोकों की रक्षा करते हैं, उस अतुल्य ब्रह्म की मैं शरण ग्रहण करता हूँ |' इस प्रकार से योगमार्ग के पथिक-जन परब्रह्म की स्तुति करके भवसागर को वैसे ही पार कर जाते हैं, जैसे समुद्र को तिमिंगल मत्स्य |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायां प्रथमः पटलः ||

| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में प्रथम पटल हुआ |

अथ द्वितीयः पटलः

निग्रह उवाच

ब्रह्मत्वे निर्गुणञ्चैव कालत्वे च रजस्तमः |
सात्विकं पुरुषत्वे च गुणवृत्तिः स्वयम्भुवः ||०१||
लोकान्सृजति ब्रह्मत्वे कालत्वे सङ्क्षिपत्यपि |
निशान्ते सृजते लोकान्नश्यन्ते निशि जन्तवः ||०२||
ततः संवर्त्तकः सर्वानतिक्रम्य महांस्तथा |
लोकान्दहति दीप्तात्मा रुद्रतेजोविजृम्भितः ||०३||
पुरुषत्वे ह्युदासीनस्तिस्रोऽवस्थाः प्रकीर्तिताः |
सर्वेषाञ्चैव भूतानां शास्ता वै कालपूरुषः ||०४||
न वेत्ति कोऽपि कालस्यायुःप्रमाणं सुनिश्चितम् |
न बलं न प्रभावं वा नैव कालस्य सूक्ष्मताम् ||०५||
न कालस्य प्रियः कश्चिद्द्वेष्यश्चास्य न विद्यते |
पूर्वनिर्माणबद्धा हि कालस्य गतिरीदृशी ||०६||

निग्रहाचार्य ने कहा - स्वयं प्रकट होने वाले चेतन की गुणवृत्ति इस प्रकार है - ब्रह्मत्व की स्थिति में वह निर्गुण होता है, कालत्व की स्थिति में रजोगुण एवं तमोगुण से व्याप्त होता है और पुरुषत्व की स्थिति में सत्वगुण से युक्त होता है | वह चेतन ब्रह्मत्व की स्थिति में संसार का निर्माण करता है, कालत्व की स्थिति में संसार का संहार करता है, रात्रिकल्प के अन्त में पुनः लोकों का सृजन करता है और रात्रिकल्प में जन्तुओं का नाश करता है | रात्रिकल्प में वह महान् संवर्तक सबों का अतिक्रमण करके रुद्र के तेज से युक्त होकर अत्यन्त दीप्त स्वरूप वाला

बनकर लोकों को जला देता है| पुरुषत्व की स्थिति में उदासीन होता है| उसकी तीन अवस्थाएँ बताई गई हैं| कालपुरुष ही सभी प्राणियों पर शासन करता है | काल की आयु का निश्चित प्रमाण कोई नहीं जानता, काल की सूक्ष्मता को भी नहीं जानता, उसके बल एवं प्रभाव को भी नहीं जानता | काल का कोई भी प्रिय नहीं है, काल का कोई द्वेषी नहीं है, अर्थात् काल किसी से प्रीति या द्वेष नहीं रखता | काल की ऐसी गति अनादि काल से निर्धारित नियमों के अधीन बताई गई है |

अहो हि कालस्य बलमहो कालो हि दुर्जयः |
कालः सृजति भूतानि कालः संहरति प्रजाः ||०७||
महाबलेर्महात्मानः प्रत्यूषश्च पितृप्रसूः |
प्राह्णापराह्णमध्याह्नाः कालस्य पञ्चशक्तयः ||०८||
सर्वे कालस्य वशगा न कालः कस्यचिद्वशे |
शिवस्य तु वशे कालो न कालस्य वशे शिवः ||०९||
यतोऽप्रतिहतं शम्भोस्तेजः काले प्रतिष्ठितम् |
महती तेन कालस्य मर्यादा हि दुरत्यया ||१०||

अहो ! काल का बल कैसा है ? अहो ! काल दुर्जय है | काल ही प्राणियों को उत्पन्न करता है और काल ही उनका संहार भी करता है | महाबली महात्मा काल की प्रत्यूष (प्रातः), पितृप्रसू, (सन्ध्या), प्राह्ण, अपराह्ण और मध्याह्न ये पाँच शक्तियाँ हैं | सभी काल के वश में हैं किन्तु काल किसी के वश में नहीं है | काल शिव के वश में है किन्तु शिव काल के वश में नहीं हैं क्योंकि शम्भु का तेज अप्रतिहत है, उसे जीता नहीं जा सकता और वही तेज काल में प्रतिष्ठित है, इसलिए काल की मर्यादा इतनी बड़ी और अजेया है |

कालस्य नियतिर्नाम सूक्ष्मा सर्वनियामका |
उदेति प्रथमं शक्तिर्विष्णुसङ्कल्पचोदिता ||११||
गतिः कालस्य सा येन सर्वं कालस्य गोचरम् |
अधर्मो ग्रसते धर्मं ततस्तिष्यः प्रवर्तते ||१२||
पुनर्भवति वै सत्यं यदा धर्मो विवर्द्धते |
तत्र कालस्य कर्त्तारं सहस्रांशु सुरोत्तमम् ||१३||
नमन्ति सिद्धसङ्घास्तं सर्वलोकनमस्कृतम् |
तं ध्यात्वा वै नरो कालजयी मृत्युञ्जयी भवेत् ||१४||

काल की नियति नाम की शक्ति अत्यन्त सूक्ष्म और सबों पर नियन्त्रण करने वाली है | यह सबसे पहले विष्णु के संकल्प से प्रेरित होकर उदित होती है | वही काल की गति है जिसके द्वारा काल प्रत्यक्ष होता है | जब अधर्म धर्म को ग्रास बना लेता है तब कलियुग प्रारम्भ होता है | जब धर्म वृद्धि को प्राप्त होता है तो सत्ययुग पुनः प्रतिष्ठित हो जाता है | सहस्रों किरणों वाले, देवताओं में श्रेष्ठ काल के कर्ता को मैं प्रणाम करता हूँ | सभी लोकों के द्वारा नमस्कार किए गए उन देव को सिद्धों के समूह भी प्रणाम करते हैं | उनका ध्यान करके मनुष्य कालजयी और मृत्युञ्जयी हो जाता है | उन्हें केवल सत्तामात्रात्मक ही जानना चाहिए अर्थात् केवल उनकी उपस्थिति का बोध होता है | आत्मा से परे ज्ञानरूपी विग्रह वाले ब्रह्म परमात्मा परेश्वर और परमधाम हैं |

सत्तामात्रात्मको ज्ञेयो ज्ञानात्मन्यात्मनः परे |
तद्ब्रह्म तत्परं धाम परमात्मा परेश्वरः ||१५||
नित्यशुद्धं बुद्धियुक्तं सत्यं ब्रह्म नमाम्यहम् |
एकं नारायणं ब्रह्म शून्यं शुद्धं निरामयम् ||१६||

अनामरूपसंभेद्यमवाङ्गनसगोचरम् |
पुराणैः सामसङ्गीतैर्ब्रह्म ध्येयं तदक्षरम् ||१७||
अजरश्चामरो देवो विभुः स्रष्टा परात्परम् |
योगिनां परमं ब्रह्म योगिनां योगवन्दितम् ||१८||

जो नित्यशुद्ध, बुद्धियुक्त और सत्यस्वरूप हैं, ऐसे ब्रह्म को हम प्रणाम करते हैं। एक नारायण ही ब्रह्म, शून्य, शुद्ध एवं निरामय (विकारों से रहित) हैं | उनका निश्चित नाम नहीं है, उनका निश्चित रूप नहीं है, उनका भेदन नहीं हो सकता तथा मन - वाणी इत्यादि से उन्हें जाना नहीं जा सकता | पुराणों के द्वारा एवं सामवेद के संगीतमय मन्त्रों के द्वारा उस अक्षर ब्रह्म का ध्यान होता है | सबों का निर्माण करने वाले वे परात्पर देव सबों के स्वामी, अजर और अमर हैं | योगियों के परम ब्रह्म और योगियों के योग के द्वारा वन्दित हैं |

योगिनां हृदि तिष्ठन्तं योगमायासमावृतम् |
अदुःखमसुखं ब्रह्म भूतभव्यभवात्मकम् ||१९||
तं पिबन्त्यक्षरं ब्रह्म शाश्वतं परमामृतम् |
स विष्णुः सर्वमेवेदं यतो नावर्तते पुमान् ||२०||

योगियों के हृदय में निवास करते हुए योगमाया से आवृत्त रहते हैं | जो घटना व्यतीत हो चुकी है, जो घटना घटने वाली है और जो घटना घटित हो रही है, इन तीनों रूपों में सुख एवं दुःख से रहित वह ब्रह्म ही स्थित है | उसी शाश्वत, अक्षर अमृतरूप ब्रह्म का लोग पान करते हैं। वह विष्णु ही इन सभी उपाधियों को धारण करता है, जिसके प्राप्त होने पर व्यक्ति पुनः इस संसार में वापस नहीं लौटता है |

यथा मतानि सर्वाणि तथैतान्योदिता मया |
आत्मन्याधाय चात्मानमैश्वरं भावमास्थितम् ||२१||
आगमोत्थं विवेकाच्च द्विधा ज्ञानं तथोच्यते |
शब्दब्रह्मागममयं परं ब्रह्म विवेकजम् ||२२||

जिस प्रकार से सभी मत हैं, उसी प्रकार से मेरे द्वारा ये कहे गए हैं | आत्मतत्व में अपनी आत्मा को स्थापित करके ऐश्वर भाव से युक्त होकर इन्द्रियों में समाहित होने वाला दो प्रकार का ज्ञान कहा जाता है - आगमजन्य एवं विवेकजन्य |जो शब्द ब्रह्म है, वह आगममय है, बुद्धि में आकर प्रभावित करता है। परमब्रह्म विवेक के द्वारा ज्ञात होता है |

यदद्वैतं परं ब्रह्म सदसद्भाववर्जितम् |
चिदानन्दात्मकं तस्मात्प्रकृतिः समजायत ||२३||
अदृश्यं सर्वभूतानां वाङ्मयं ब्रह्म संस्थितम् |
यत्सर्वव्यापकं देवं परमं ब्रह्म शाश्वतम् ||२४||
तन्निष्ठाः शान्तसंकल्पा नित्यं तद्भावभाविताः |
पश्यन्ति तत्परं ब्रह्म यत्तल्लिङ्गमिति श्रुतिः ||२५||
ध्यात्वा वरं ब्रह्म परं प्रधानं यत्सारभूतं यदुपासितव्यम् |
यत्तत्स्मृतं कारणमप्रमेयं तत्प्राप्य मुक्ता न पुनर्भवन्ति ||२६||

परब्रह्म अद्वैत है, सत् और असत् भाव से वर्जित है, चिदानन्दात्मक है | उसी से प्रकृति उत्पन्न हुई | सभी प्राणियों के लिए वह अदृश्य होते हुए भी वाणी के रूप में अर्थात् शब्द ब्रह्म के रूप में वह सबमें स्थित है | सबों को व्याप्त करने वाले परम-ब्रह्म शाश्वत देव हैं | उनमें निष्ठा रखने वाले, शान्त संकल्प वाले तथा सदैव उनकी

भावना से भावित रहने वाले जन उपर्युक्त लक्षणों वाले परब्रह्म को देखते हैं ऐसा वेद का वचन है | जो ब्रह्म सबों का सारभूत है, जिसकी उपासना करनी चाहिए, जो सबों का कारण है, जिसकी कोई तुलना नहीं है, जो सबों के द्वारा स्मरणीय है, ऐसे परमप्रधान श्रेष्ठ ब्रह्म का ध्यान करके, उसे प्राप्त करके, जो मुक्त हो जाते हैं, वे पुनः जन्म नहीं लेते |

अयं तन्मात्रजालात्मा जीवो देहेषु तिष्ठति |
स कृष्यते वासनया रज्वेव पशुपोतकः ||२७||
ज्ञानाद्विमुच्यते जीवो ज्ञानं मोक्षस्य कारणम् |
आत्मानं मन्यते ब्रह्म जीवो ज्ञानेन नान्यथा ||२८||

तन्मात्राओं के जाल में घिरा हुआ यह जीव देहों में निवास करता है, जिस प्रकार से पशुओं के बच्चे रस्सी के द्वारा बाँधकर खींचे जाते हैं, उसी प्रकार यह जीव भी वासनाओं के द्वारा आकृष्ट किया जाता है | ज्ञान से ही जीव मुक्त होता है क्योंकि ज्ञान ही मोक्ष का हेतु है | किसी और कारण से नहीं वरन् ज्ञान से ही जीव स्वयं को ब्रह्म मानता (अनुभव करता) है |

मुक्तो जीवो ब्रह्मणैवं सद्ब्रह्म ब्रह्म वै भवेत् |
अज्ञाननिद्राक्षुभितो जीवो यावन्न बोधितः ||२९||
तावत्पश्यति दुर्भेद्यं संसारारम्भविभ्रमम् |
अयमात्मा परं ब्रह्म तद्ब्रह्म त्वमसीति च ||३०||
गुरुणा बोधितो जीवो ह्यहं ब्रह्मास्मि वेणति |
निद्राव्यपगमे जन्तुर्यथा स्वप्नं न पश्यति ||३१||

जीवो हि भाविते सत्ये तथा देहं न पश्यति |
एवं देहे मृते जीवो ब्रह्म सम्पद्यते पुनः ||३२||

जो जीव मुक्त हो गया है, वह ब्रह्म ही है, जो सत् का विस्तार करता है, वह ब्रह्म ही होता है | जबतक अज्ञान और निद्रा के द्वारा अथवा अज्ञानरूपी निद्रा से क्षुब्ध जीव बोधित नहीं किया जाता, तब तक वह इस संसार और इसके आरम्भ के भ्रम-जाल में भ्रमित होकर इसे दुर्भेद्य समझता और देखता है | *'यह आत्मा परब्रह्म है और वह जो परब्रह्म है, वह तुम ही हो'*,इस प्रकार से जब गुरु के द्वारा वह जीव बोधित होता है, तो *मैं ब्रह्म हूँ* ऐसा वह जान जाता है | जिस प्रकार से नींद खुल जाने पर जन्तु स्वप्न को नहीं देखता वैसे ही सत्य का बोध होने पर जीव भी देह को नहीं देखता और देह के मृत हो जाने पर जीव पुनः ब्रह्मत्व को प्राप्त कर लेता है |

मनः सृजति वै देहान् गुणान्कर्माणि चात्मनः |
ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः ||३३||
यदा पश्यत्यभेदेन जीवो बद्धः परं पदम् |
विशेत्तुरीयमानन्दं तदा जीवो विमुच्यते ||३४||
जीवस्य गुणसङ्गेन कामक्रोधादयोऽरयः |
बध्नन्ति सर्वदा मुक्तं पाशैः संसाररूपिभिः ||३५||
पाशबद्धः सदा जीवः पाशमुक्तः सदाशिवः |
देहे जीवः परे ब्रह्म धारणास्थितिभेदतः ||३६||

मन ही देह का, गुण का और आत्मा के कर्मों का निर्माण करता है | ब्रह्म सत्य है, संसार मिथ्या है, जीव ब्रह्म ही है, कुछ और नहीं | जब बँधा हुआ जीव परमपद को अपने साथ अभेद बुद्धि से देखता है तो वह तुरीयानन्द में प्रवेश कर जाता है

और उसके बाद वह जीव मुक्त हो जाता है | गुणों के संग से जीव के कामक्रोधादि शत्रु संसाररूपी पाशों के द्वारा सर्वदा मुक्त जीव को भी बाँधते हैं | पाश से बद्ध चेतन जीव है और पाश से मुक्त चेतन शिव है | चेतन जब देह में होता है तो जीव कहलाता है और जब देह से परे होता है तो ब्रह्म कहलाता है | धारणा की स्थिति के भेद से चेतन की जीव और शिव संज्ञा होती है |

नाहं देहो न मे देहो जीवो नाहमहं हि चित् |
एवं विज्ञाय सन्तुष्टो जीवो जीवति तन्मयः ||३७||
मायाविष्टस्तथाजीवो देहोऽहमिति मन्यते |
मायानाशात्पुनः स्वीयरूपं ब्रह्मास्मि मन्यते ||३८||
स्वप्न एवात्र दृष्टान्तो दीर्घस्वप्नस्त्विदं जगत् |
जीवो यद्वासनासारस्तदेवान्तः प्रपश्यति ||३९||
भुङ्क्ते देहं नरो जीवो भोगोऽस्य सुखदुःखदृक् |
तस्माज्जीवेन वै भाव्यं ब्रह्मरूपन्तु नेतरम् ||४०||

'यह देह मैं नहीं हूँ, देह मेरा नहीं है, वस्तुतः मैं जीव भी नहीं हूँ, मैं चित्स्वरूप हूँ' ऐसा जानकर संतुष्ट हुआ जीव ब्रह्ममय होकर जीता है | माया से आविष्ट होकर जीव, *मैं देह हूँ* ऐसा मानता है और पुनः माया के नाश होने पर अपने स्वरूप को, *मैं ब्रह्म हूँ* ऐसा मानता है | यहाँ पर स्वप्न का दृष्टान्त दिया जाता है, यह संसार एक बहुत लम्बा और बड़ा स्वप्न है | वासना के सार से, वासना के प्रभाव से जीव इस स्वप्न को अपने अन्दर देखता है | मनुष्य जीवरूप में इस देह का उपभोग करता है और भोग ही इसे सुख और दुःख का दर्शन कराते हैं अतएव जीव के द्वारा अपने ब्रह्मरूप का ही भाव करना चाहिए, किसी अन्य रूप का भाव जीव के लिए विहित नहीं है |

ऊर्णनाभिर्यथा तन्तून्सृजते संहरत्यपि |
जाग्रत्स्वप्ने तथा जीवो गच्छत्यागच्छते पुनः ||४१||
अयमेव हि संसारी जीवो भोक्तैव दृश्यते |
भोग्यरूपमिदं सर्वं जगत्स्याद्भूतभौतिकम् ||४२||
जीवो ब्रह्मेति वाक्यार्थं यावदस्ति मनःस्थितिः |
शिव एव तथा जीवो जीव एव सदाशिवः ||४३||

जिस प्रकार से मकडी अपने नाभि के जाल से तन्तुओं से निर्माण करता है और पुनः उनका संहार भी करता है | उसी प्रकार यह जीव जाग्रत् और स्वप्न इन दोनों अवस्थाओं में आता जाता रहता है | संसार में स्थित जीव भोक्ता के रूप में और भौतिक भूतों से युक्त यह जगत् भोग्य रूप में देखा जाता है | जब तक मन की स्थिति *जीव ब्रह्म ही है* , इस वाक्य के अर्थ में स्थित होती है तब तक शिव सदा जीव है और जीव ही सदाशिव है |

सविकारस्तथा जीवो निर्विकारः सदाशिवः |
वासनावेगहीनोऽयं जीवो याति तदक्षरम् ||४४||
सकारञ्च हकारञ्च जीवो जपति सर्वदा |
षड्शतानि दिवारात्रौ सहस्राण्येकविंशतिः ||४५||
न सम्भवति जीवस्य सर्गादौ कर्म कस्यचित् |
पश्चात्स्वकर्म निर्माय भुङ्क्ते कल्पनया स चित् ||४६||

विकारयुक्त चेतन जीव कहलाता है और निर्विकार चेतन सदाशिव कहलाता है | वासना के वेग से हीन हुआ यह जीव उस अक्षर पद की ओर गमन करता है | सकार और हकार, इस प्रकार से **सोऽहं** अथवा **हंसः** इस मन्त्र को जीव सदैव जपता

रहता है | दिन और रात मिलाकर वह २१६०० आवृत्ति का जप करता है | सृष्टि के प्रारम्भ में जीव का कोई भी कर्म संभव नहीं है | बाद में अपने कर्म का निर्माण करके वह चिद्रूपी जीव अपनी कल्पना से स्वयं ही उसका उपभोग करता है |

स्वकर्मफलभोक्ता च जीवो हि सगुणः सदा |
विवेकनिपुणो जीवो नाशयेद्दोषमण्डलम् ||४७||
यदा करोति यत्नञ्च जीवो बन्धनखण्डने |
स्थितिं याते शमं याति जीवो निःस्नेहदीपवत् ||४८||
परं ब्रह्मेति यत्प्रोक्तं तद्योगैरेव गम्यते |
नास्ति योगसमा विद्या नास्ति योगसमं तपः ||४९||

सगुणावस्था को व्याप्त जीव अपने कर्म के फल का उपभोग करता है अतएव विवेक दृष्टि में निपुण जीव अपने दोषमण्डल का नाश करे | जब बन्धन को काटने के लिए जीव प्रयत्न करता है तो ब्रह्मस्थिति को प्राप्त करने पर वह वैसे ही शान्त हो जाता है, जैसे बिना तेल का दीपक शान्त हो जाता है | जिसे परमब्रह्म कहा गया है उसे योग से ही जाना जाता है | योग के समान विद्या नहीं है, योग के समान तपस्या भी नहीं है |

सर्वदा देहसम्बन्धो जीवस्य कालयोगतः |
देहभ्रान्तिरविद्या स्याद्विद्ययैषा निवर्तते ||५०||
तुषबद्धो व्रीहिरुच्यते जनैस्तुषहीनस्तण्डुलेति कथ्यते |
कर्मपाशवशगो जीवसंज्ञः कर्मपाशमुक्तचेतनः शिवः ||५१||
यदा तु ज्ञानदीपेन सम्यगालोक्य आगतः |
सर्वदोषविनिर्मुक्तो जीवः संसरते स्फुटम् ||५२||

काल के योग से ही जीव का सदैव देह से सम्बन्ध होता है। देह और जीव में एकात्मकता की भ्रान्ति अविद्या से ही होती है और विद्या के द्वारा इस अविद्या का मोचन होता है | जिस प्रकार से छिलके से आवृत्त रहने पर धान कहलाता है और व्यक्तियों के द्वारा छिलका से हीन किए जाने पर चावल कहा जाता है, उसी प्रकार से कर्मपाश के वश में चेतन की जीव संज्ञा होती है और कर्मपाश से मुक्त चेतन की शिव संज्ञा होती है | ज्ञानरूपी दीप के द्वारा अपनी स्थिति को अच्छी प्रकार से देखने पर सभी दोषों से मुक्त होकर जीव आगे की ओर बढ़ता है |

अनादिमायया सुप्तो यदा जीवः प्रबुध्यते |
छिन्नपाशस्तथा जीवः संसारं तरते तदा ||५३||
यत्सर्ववेदसिद्धान्तं यज्ज्ञानेनैव मोक्षणम् |
जीवस्य यच्च सम्पूर्णं तद्विष्णोः परमं पदम् ||५४||

जिस माया का कोई आदि नहीं, उस माया के द्वारा सुलाया गया जीव जब जागृत होता है तो वह अपने पाशों को छिन्न कर देता है एवं तत्पश्चात् ऐसा जीव संसार से तर जाता है | जो सभी वेदों का सिद्धान्त है, जिसके ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है और जो जीव का सर्वस्व है वही विष्णु का परमपद है |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायां द्वितीयः पटलः ||
| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में द्वितीय पटल हुआ |

अथ तृतीयः पटलः

निग्रह उवाच

आत्मा शुद्धोऽक्षरः शान्तो निर्गुणः प्रकृतेः परः |
महताञ्चैव भूतानां सर्वेषामिह भूपतिः ||०१||
पञ्चभूतसमाविष्टो देहोऽयं क्षेत्रसंज्ञकः |
अव्यक्तात्मा तु क्षेत्रज्ञः क्षेत्रस्यास्य निगद्यते ||०२||
क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः प्रधानं प्रकृतीश्वरः |
हृदिस्थः सर्व भूतानामात्मा वेद शुभाशुभम् ||०३||
भूतात्मा चेन्द्रियात्मा च प्रधानात्मा गुणान्वितः |
आत्मा च परमात्मा च ब्रह्मैव पञ्चधा स्थितः ||०४||
आत्मा न जायते नैव म्रियते न च दुःखभाक् |
निर्लेपः परिपूर्णश्च सच्चिदानन्दविग्रहः ||०५||

निग्रहाचार्य ने कहा - आत्मा शुद्ध है अविनाशी है, शान्त है, निर्गुण है, प्रकृति से परे है और यहाँ सभी महान् भूतों का राजा है | पञ्चभूतों से आविष्ट यह देह क्षेत्रसंज्ञक है, अव्यक्त आत्मा इस क्षेत्र का क्षेत्रज्ञ कहा जाता है | क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुष, प्रकृति का ईश्वर और प्रधान है | सभी प्राणियों के हृदय में स्थित आत्मा शुभ एवं अशुभ को जानता है | भूतात्मा, इन्द्रियात्मा, गुण से युक्त प्रधानात्मा, आत्मा और परमात्मा, इन पाँच प्रकार से ब्रह्म ही स्थित होता है | आत्मा न उत्पन्न होता है, न मरता है, न दुःख का भागी ही होता है | यह निर्लेप है, परिपूर्ण है और सत्, चित् एवं आनन्दरूपी विग्रह से युक्त है |

योगेन योगसम्पन्नाः प्रविशन्ति शिवं पदम् |
मनसा निर्गुणं सर्वात्मानं सर्वज्ञमीश्वरम् ||०६||
केवलेन तु योगेन दृश्यते पुरुषः परः |
योगं तु केवलं सम्यगपवर्गफलप्रदम् ||०७||
तं देवममृतं रुद्रं कर्मणा तपसा तथा |
स्वाध्यायेन च योगेन तं ध्यानेन यजेद्विभुम् ||०८||

योगसम्पन्न जन योग के माध्यम से परम कल्याणकारी पद में और मन के द्वारा सबों की आत्मा, सब कुछ जानने वाले, सबों के स्वामी निर्गुण ब्रह्म में प्रवेश करते हैं | केवल योग के द्वारा ही वह परमपुरुष देखा जाता है क्योंकि केवल योग ही भली प्रकार से मोक्ष का फल प्रदान करता है | कर्म के द्वारा, तपस्या के द्वारा, स्वाध्याय के द्वारा और योग के द्वारा उस अमृतरूपी देव का, जो कष्टों का हरण करने वाले हैं, उनका ध्यान से यजन करे ।

कविं पुराणमनुशासितारं सूक्ष्माच्च सूक्ष्मं महतो महान्तम् |
योगेन पश्यन्ति न चक्षुषा तं निरिन्द्रियं पुरुषं हैमवर्णम् ||०९||
योगी योगेन संयुक्तो योगिनामीश्वरं हरिम् |
सिद्धिं प्रयाति योगेनापुनरावृत्तिदुर्लभाम् ||१०||
यत्र तिष्ठति तद्ब्रह्म योगेन तु समन्वितम् |
तत्रैवात्मसमाधानं कुर्याद्योगेन योगवित् ||११||
चित्तवृत्तिनिरोधेन शान्तिर्योगेन जायते |
शान्त्या सञ्जायते ज्ञानं ज्ञानान्मुक्तिः प्रवर्तते ||१२||

यो यज्ञैरखिलैरीशो योगबुद्ध्या समर्च्यते |
सोऽविकल्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ||१३||
योगेन योगो ज्ञातव्यो योगो योगात्प्रवर्द्धते |
ध्यायन् भगवतो रूपं योगं कुर्याद्विचक्षणः ||१४||
गुरोर्मुखादधीतेन स योगी रमते चिरम् |
अज्ञानं नाशयेद्योगी योगेन मुनिसत्तमः ||१५||

जो बुद्धिमान है, अत्यन्त प्राचीन है, सबों पर शासन करने वाला है, सूक्ष्म से भी सूक्ष्म एवं महान् से भी महान् है, उस इन्द्रियों से रहित, स्वर्णप्रभा वाले पुरुष को नेत्रों से नहीं देखा जा सकता अपितु योग से ही देखा जाता है | योगीजन योग से संयुक्त होकर योगियों के स्वामी हरि को अथवा सिद्धिरूप हरि को प्रयाण करते हैं और योग के द्वारा पुनः उनकी पुनरावृत्ति दुर्लभ हो जाती है अर्थात् उनका पुनर्जन्म नहीं होता | जहाँ पर वह ब्रह्म योग से युक्त होकर स्थित रहता है, वहीं पर अपने आप को योग से जानने वाला योगी योग के माध्यम से स्थापित करे |

चित्तवृत्ति के निरोध से योग के माध्यम से शान्ति उत्पन्न होती है | शान्ति से ज्ञान उत्पन्न होता है और ज्ञान से मुक्ति प्रवर्तित होती है | जो ईश्वर सभी यज्ञों के द्वारा और यौगिक बुद्धि के द्वारा अर्चित होता है, वही निर्विकल्प योग के द्वारा योजित होता है, इसमें सन्देह नहीं है | योग के द्वारा ही योग को जाना जाता है और योग से ही योग वृद्धि को प्राप्त होता है | इसलिए भगवान के रूप का ध्यान करते हुए बुद्धिमान व्यक्ति योग का प्रयोग करे | गुरु के मुख से शिक्षा ग्रहण करके वह योगी चिरकाल तक रमण करता है | मुनियों में श्रेष्ठ योगी योग के द्वारा अज्ञान का नाश करे |

अष्टाङ्गैः सिद्ध्यते योगस्तानि वक्ष्यामि तत्त्वतः |
यमाश्च नियमाश्चैव आसनानि च सत्क्रियाः ||१६||
प्राणायामः प्रत्याहारो धारणा ध्यानमेव च |
समाधिश्चाष्टसंख्यानि योगाङ्गानि यथाक्रमम् ||१७||
सर्वेषामेव भूतानामक्लेशजननं हि यत् |
अहिंसा सा पुरा प्रोक्ता योगसिद्धिप्रदायिनी ||१८||
यथार्थकथनं यच्च धर्माधर्मविवेकतः |
सत्यं वदन्ति तत्त्वज्ञा नास्ति सत्यसमं शिवम् ||१९||
चौर्येण वा बलेनापि परस्वहरणं हि यत् |
स्तेयमित्युच्यते सद्भिरस्तेयं तद्विपर्ययम् ||२०||
सर्वत्र मैथुनत्यागो ब्रह्मचर्यं प्रकीर्त्तितम् |
मनसा कर्मणा वाचाचरणीयं महात्मभिः ||२१||

आठ अंगों के द्वारा योग सिद्ध होता है उन्हें मैं तत्त्वपूर्वक कहता हूँ | यम, नियम, आसन, ये सत्क्रियाएँ हैं | प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि, इन आठ संख्याओं में योग के अंगों का क्रम बताया गया है | सभी प्राणियों में जो अक्लेश को जन्म दे, वही योग की सिद्धि प्रदान करने वाली अहिंसा पूर्वकाल में कही गई है | जो धर्म और अधर्म के विवेक के माध्यम से यथार्थ का कथन है उसे ही तत्त्वज्ञों ने सत्य कहा है | सत्य के समान कल्याणकारी दूसरा कुछ नहीं है | चोरी के द्वारा, बल के द्वारा, जो दूसरे के धन एवं सम्पदा का हरण किया जाता है, वही स्तेय कहलाता है | उसके विपरीत सज्जनों के द्वारा अस्तेय बताया गया है | सभी स्थानों पर मैथुन का त्याग ब्रह्मचर्य कहा गया है | महात्माओं के द्वारा ब्रह्मचर्य का मन, वचन तथा वाणी के द्वारा आचरण किया जाना चाहिए |

द्रव्याणां यस्त्वनादानं त्यागबुद्ध्या मनीषिभिः |
अपरिग्रह इत्युक्तो योगसंसिद्धिकारकः ||२२||
आत्मनस्तु समुत्कर्षादतिनिष्ठुरभाषणम् |
क्रोधं धर्मविदाहैनं द्वारं नाशनमात्मनः ||२३||
धनाद्यैरधिकं दृष्ट्वा भृशं मनसि तापनम् |
असूया कीर्तिता सद्भिस्तत्त्यागो ह्यनसूयता ||२४||
एवं सङ्क्षेपतः प्रोक्ता यमा योगसहायकाः |
तपःस्वाध्यायसन्तोषाः शौचञ्च हरिपूजनम् ||२५||
सन्ध्योपासनमुख्याश्च नियमाः परिकीर्त्तिताः |
तीव्रव्रतादिभिर्यत्र शरीरस्य विशोधनम् ||२६||
तपो निगदितं सद्भिर्योगसाधनमुत्तमम् |
प्रणवस्योपनिषदां महावाक्यरवस्य च ||२७||
जपः स्वाध्याय उदितो योगसाधनमुत्तमम् |
जपस्तु त्रिविधः प्रोक्तो वाचिकोपांशुमानसः ||२८||

त्याग बुद्धि के द्वारा धन का संग्रह न करना मनीषियों के द्वारा अपरिग्रह बताया गया है | यह योग की सम्यक् सिद्धि का कारक है | अपने उत्कर्ष के कारण या उत्तेजना के कारण किया गया कटुभाषण धर्मज्ञों के द्वारा क्रोध शब्द से अभिहित है | यह क्रोध स्वयं के ही नाश का द्वार है | दूसरे के धन को अधिक मात्रा में देखकर स्वयं के मन में उत्पन्न हुई चिन्ता असूया संज्ञक है | विद्वानों के द्वारा असूया का त्याग अनसूया अथवा अनसूयता कहा गया है | इस प्रकार ये योग में सहायक यम संक्षिप्तरूप से बताए गए हैं | तपस्या, स्वाध्याय, संतोष, शौच, हरिपूजन, संध्योपासन ये मुख्य नियम बताए गए हैं | तीव्र व्रतों के द्वारा जहाँ पर शरीर की

शुद्धि की जाती है, उसे ही योग का उत्तम साधन तपस्या कहा गया है | प्रणव, उपनिषद और महावाक्य की ध्वनियों का जो जप है उसे ही योग के उत्तम साधन जप के रुप में अभिहित किया गया है | जप तीन प्रकार का होता है- वाचिक, उपांशु एवं मानस |

जपेन देवता नित्यं स्तुवतः सम्प्रसीदति |
यदृच्छालाभसंतुष्टिः सन्तोष इति गीयते ||२९||
असन्तुष्टस्त्रिलोकेशः सद्यो याति रसातलम् |
न जातुकामः कामानामुपभोगेन शाम्यति ||३०||
बाह्याभ्यन्तरभेदेन शौचं तु द्विविधं स्मृतम् |
मृज्जलाभ्यां बहिः शुद्धिर्भावशुद्धिस्तथान्तरम् ||३१||
अन्तःशुद्धिविहीनस्तु देवपूजापरो यदि |
तमेव दैवतं हन्ति नरकं समगच्छति ||३२||
कर्मणा मनसा वाचा स्तुतिश्रवणपूजनैः |
हरिभक्तिर्दृढा यस्य हरिपूजेति गीयते ||३३||
यमैश्च नियमैश्चैव स्थिरबुद्धिर्जितेन्द्रियः |
अभ्यसेदासनं सम्यग्योगसाधनमुत्तमम् ||३४||

जप के द्वारा जिस देवता की स्तुति की जाती है वह नित्य प्रसन्न होता है | जो भी प्राप्त हो जाए उसमें ही संतुष्ट रहना संतोष कहा गया है | जो यदि लोकपाल भी असंतुष्ट हो तो तुरन्त रसातल में चला जाता है | जिसकी कामनाएँ उत्पन्न होती हैं, वह उन कामनाओं का उपभोग करके उनका शमन नहीं कर सकता | बाह्य और आभ्यन्तर भेद से शौच अर्थात् पवित्रता के दो प्रकार बताये गये हैं | मिट्टी, जल

इत्यादि के द्वारा जो बाह्य शुद्धि है वह पहला प्रकार है और भाव की शुद्धि दूसरा प्रकार है | आन्तरिक शुद्धि से रहित कोई व्यक्ति यदि देवता की पूजा करता है तो वह देवता ही उसे मार डालता है और साधक नरकगामी हो जाता है | विष्णु में जिनकी दृढ भक्ति है, उनके द्वारा कर्म, मन, वाणी से स्तुति, श्रवण और पूजन हरिपूजा कही गई है | यम, नियम इत्यादि के द्वारा अपनी इन्द्रियों को जीतने वाला स्थिर बुद्धि का व्यक्ति आसन का सम्यक् प्रकार से अभ्यास करे, यह योग का उत्तम साधन है |

आसनानि ह्यसङ्ख्यानि कथितानि मुनीश्वरैः |
पद्मासनञ्च शीर्षाख्यं स्वस्तिकं वा सुखासनम् ||३५||
वज्रासनं तथा योनिमुद्राबद्धासनं वरम् |
वीरासनं गोमुखं सर्वाङ्गाख्यं भुजगासनम् ||३६||
एषामेकतमं बद्धा गुरुभक्तिपरायणः |
उपासको जयेत्प्राणान्द्वन्द्वातीतो विमत्सरः ||३७||

मुनिश्वरों के द्वारा असंख्य आसन कहे गए हैं | पद्मासन, शीर्षासन, स्वस्तिकासन, सुखासन, वज्रासन, योनिमुद्राबद्धासन, वीरासन, गोमुखासन, सर्वाङ्गासन, भुजगासन इत्यादि में से किसी भी एक आसन को गुरु-भक्ति से युक्त होकर, बाँधकर उपासक मत्सर और द्वन्द्व इत्यादि से रहित होकर अपने प्राणों पर विजय प्राप्त करे |

प्राणो वायुः शरीरस्थ आयामस्तस्य निग्रहः |
प्राणायाम इति प्रोक्तो द्विविधः समुदाहृतः ||३८||
अगर्भश्च सगर्भश्च द्वितीयस्तु तयोर्वरः |
इष्टध्यानं विनागर्भः सगर्भस्तत्समन्वितः ||३९||
रेचकः पूरकश्चैव कुम्भकः शून्यकस्तथा |

एवं चतुर्विधः प्रोक्तः प्राणायामो मनीषिभिः ||४०||
वामेन रेचयेद्वायुं रेचनाद्रेचकः स्मृतः |
पूरयेद्दक्षिणेनैव पूरणात्पूरकः स्मृतः ||४१||
स्वदेहपूरितं वायुं निगृह्य न विमुञ्चति |
सम्पूर्णकुम्भवत्तिष्टेत्कुम्भकः स हि विश्रुतः ||४२||
न गृह्णाति न त्यजति वायुमन्तर्बहिः स्थितम् |
कथ्यते शून्यकं नाम प्राणायामं यथास्थितम् ||४३||

प्राणवायु शरीर में स्थित होता है, उसके नियन्त्रण को आयाम कहते हैं | इस प्रकार से प्राणायाम दो भेदों वाला कहा गया है - अगर्भ और सगर्भ | इसमें सगर्भ जो है वह इन दोनों में श्रेष्ठ है | इष्ट का ध्यान यदि नहीं किया जाए, केवल प्राणायाम किया जाए, तो वह अगर्भ है | यदि इष्ट का ध्यान करते हुए प्राणायाम किया जाए तो वह सगर्भ कहा गया है | रेचक, पूरक, कुम्भक और शून्यक ये चार प्रकार के प्राणायाम मनीषियों के द्वारा कहे गए हैं | बाएँ नासाछिद्र से वायु का रेचन करे, रेचन करने के कारण रेचक कहा गया है | दक्षिण नासाछिद्र से पूरण करे, पूरण करने से ही पूरक कहा गया है | अपने शरीर में वायु को ग्रहण करके जो नहीं छोड़ता है, भरे हुए घड़े के समान स्थित रहता है, वह प्राणायाम कुम्भक प्राणायाम नाम से सुना गया है | अपने अन्दर और बाहर स्थित वायु को न ग्रहण करता है और न छोड़ता है, उसे यथा-स्थिति वाला शून्यक प्राणायाम कहा गया है |

विषयेषु प्रसक्तानीन्द्रियाणि यः समाहरेत् |
समाहृत्य निगृह्णाति प्रत्याहारी तु स स्मृतः ||४४|
विना गोनिग्रहं कृत्वा योगी ध्यानपरो भवेत् |

मूढात्मानञ्च तं विद्याद्ध्यानं तस्य न सिद्ध्यति ||४५||
यद्यत्पश्यति तत्सर्वं पश्येदात्मवदात्मनि |
प्रत्याहृतानीन्द्रियाणि धारयेत्सा तु धारणा ||४६||
योगाज्जितेन्द्रियग्रामस्तानि हृत्वा दृढं हृदि |
ध्यायेदात्मानमव्यक्तं परात्परतरं विभुम् ||४७||
ध्यानं सद्भिर्निगदितं प्रत्ययस्यैकतानता |
ध्यानं कृत्वा मुहूर्त्तं वा परं मोक्षं लभेन्नरः ||४८||
ततोऽमृतत्वं भवति ज्ञानामृतनिषेवणात् |
भवेन्निरन्तरं ध्यानादभेदप्रतिपादनम् ||४९||

जो विषयों में प्रसक्त इन्द्रियों का ग्रहण करके फिर उन्हें छोड़ देता है, उसे प्रत्याहारी कहा गया है | अपनी इन्द्रियों का निग्रह किए बिना यदि योगी ध्यान में तत्पर होता है तो उसे मूढ़ात्मा समझा जाना चाहिए, उसका ध्यान सिद्ध नहीं होता | जिस प्रकार वह अपने आप को देखता है, उसी प्रकार से यदि सबों को देखने लगे, जब ऐसी आत्मदृष्टि हो जाए तो उसकी सभी इन्द्रियाँ उसके नियन्त्रण में हो जाती हैं | नियन्त्रण में हुई इन्द्रियों को धारण करने वाली क्रिया धारणा कही जाती है | योग के द्वारा इन्द्रिय समूहों को जीतकर, उन्हें पकड़कर तथा हृदय में दृढ़ करके जो अव्यक्त परात्परतर परमेश्वर का ध्यान करता है, उसे ही वास्तव में सज्जनों के द्वारा ध्यान कहा गया है | इसका लक्षण है, ईश्वर और स्वयं की एकता का बोध होना | मुहूर्त मात्र के लिए भी इस विधि से ध्यान करने वाला व्यक्ति परलोक में मोक्ष का लाभ प्राप्त करता है | उसके बाद अमृतत्व का लाभ प्राप्त करता है | ज्ञानामृत के पान से अमृतत्व सिद्ध होता है | इसलिए अपने और अपने इष्ट में अभेद का प्रतिपादन ही सदैव ध्यान के माध्यम से संभव होता है |

सुषुप्तिवत्परानन्दयुक्तश्चोपरतेन्द्रियः |
निर्वातदीपवत्संस्थः समाधिरभिधीयते ||५०||
योगी समाध्यवस्थायां न शृणोति न पश्यति |
न जिघ्रति न स्पृशति न बाह्यमनुभूयते ||५१||
आत्मा तु निर्मलः शुद्धः सच्चिदानन्दविग्रहः |
सर्वोपाधिविनिर्मुक्तो योगिनां भात्यचञ्चलः ||५२||
न योगेन विना ज्ञानं योगस्तत्त्वार्थशीलनम् |
सतां योगेन मुक्तिः स्यात्तस्माद्योगं समाचर ||५३||

परानन्द से युक्त और इन्द्रियों की ओर से अपने मन को हटाने वाला व्यक्ति जब सुषुप्ति की अवस्था में परानन्द का आस्वादन करता है, जिस प्रकार से वायु के प्रवाह से रहित दीपक की लौ स्थिरभाव से जलती है, उसी प्रकार से लौ की भाँति स्थिर भाव की स्थिति समाधि के नाम से जानी जाती है | समाधि की अवस्था में योगी न कुछ सुनता है, न कुछ देखता है, न कुछ सूँघता है, न कुछ स्पर्श करता है और किन्हीं बाहरी क्रियाओं का अनुभव भी नहीं कर पाता है | आत्मा निर्मल है, शुद्ध है, सच्चिदानन्दविग्रह है और सभी प्रकार की उपाधि से निर्मुक्त है, योगियों के लिए अचञ्चल प्रतिभासित होता है |योग के बिना ज्ञान नहीं है क्योंकि योग से ही तत्वार्थ का अनुशीलन है | सज्जनों की मुक्ति योग से ही होती है, इसलिए योग का आचरण करो |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायां तृतीयः पटलः ||
| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में तृतीय पटल हुआ |

अथ चतुर्थः पटलः

निग्रह उवाच

चराचराणां भूतानां धाता विश्वम्भरात्मकः |
शर्व इत्युच्यते देवः सर्वशास्त्रार्थपारगैः ||०१||
सर्वेषामेव भूतानां यस्मादन्तकरो महान् |
स तस्मादन्तकः प्रोक्तः सर्वदेवैर्महाद्युतिः ||०२||
आदेहाच्च प्रमादाच्च देहान्ताद्विप्रमुच्यते |
हेतुयुक्तः सदोत्सर्गो भूतानां प्रलयस्तथा ||०३||

निग्रहाचार्य ने कहा - चराचर प्राणियों के पोषक और विश्व का भरण करने वाले देवता को सभी शास्त्र के अर्थ को जानने वाले जनों के द्वारा 'शर्व' ऐसा कहा जाता है | जो महान प्रकाश वाला है वह सभी प्राणियों का अन्त कर देता है, इसलिए उस महान देव को सभी देवों के द्वारा 'अन्तक' कहा जाता है | देह के अन्त हो जाने पर चेतन देह से भी और प्रमाद से भी मुक्त हो जाता है | वह चेतन सदैव प्राणियों के उत्सर्ग और प्रलय की हेतु से युक्त होता है |

सन्धारणार्थं भूतानां मायैषा विश्वनिर्मिता |
अनया मायया व्याप्तं त्रैलोक्यं सचराचरम् ||०४||
एषा माया निशा घोरा सर्वसंसारहारिणी |
कालरात्रीव भूतानां सर्वेषां दुरतिक्रमा ||०५||
योऽन्तस्तिष्ठति भूतानां बहिर्देवः प्रभञ्जनः |
शिवाज्ञयाऽसौ भूतानां शरीराणि बिभर्ति हि ||०६||

प्राणियों को धारण करने के लिए यह विश्व निर्मित माया है | इस माया के द्वारा सचराचर युक्त त्रिलोकी व्याप्त है | सम्पूर्ण संसार का हरण करने वाली माया घोर रात्रि है | इसका अति-क्रमण करना संभव नहीं है, सभी प्राणियों के लिए यह कालरात्रि के समान है | जो देवता सभी प्राणियों के अंदर और बाहर स्थित रहता है, वह वायु शिव की आज्ञा से भूतों के शरीर को धारण करता है |

एष आद्यः परञ्ज्योतिरेष सेतुरनुत्तमः |
सर्वेषामेव भूतानां हृदि निःस्वनकारणः ||०७||
प्राणिनां सर्वतो वायुश्चेष्टा वर्तयते पृथक् |
प्राणनाच्चैव भूतानां प्राण इत्यभिधीयते ||०८||
कर्म खल्विह कर्तव्यं न स्वकर्मदृशं तपः |
अकर्माणो हि जीवन्ति स्थावरा नेतरे जनाः ||०९||

वही परम ज्योति है, वही अत्यंत उत्तम सेतु है, वही आद्यशक्ति है | सभी प्राणियों के अंदर श्वास का कारण भी वही है | सभी प्राणियों के सभी ओर वायु अलग-अलग चेष्टाएं करता है | प्राणियों के अन्दर प्राण शक्ति का संचार करने के कारण उसे प्राण भी कहा जाता है | इस संसार में कर्म ही करना चाहिए | स्वकर्म के समान कोई दूसरी तपस्या नहीं है, क्योंकि बिना स्वकर्म के केवल वृक्ष इत्यादि ही जीवित रहते हैं, मनुष्य आदि दूसरे नहीं |

आमातृस्तनपानाच्च यावच्छय्योपसर्पणम् |
जङ्गमाः कर्मणा वृत्तिमाप्नुवन्ति शरीरिणः ||१०||
जङ्गमेषु विशेषेण मनुष्या देहधारिणः |
इच्छन्ति कर्मणा वृत्तिमवाप्तुं प्रेत्य चेह च ||११||

उत्थानमभिजानन्ति सर्वभूतानि भारते |
प्रत्यक्षं फलमश्नन्ति कर्मणां लोकसाक्षिकम् ||१२||

माता के स्तनपान से लेकर जब तक अंतिम शय्या पर व्यक्ति सो नहीं जाता, तब तक जो जंगम शरीरी हैं, वे प्राणी शारीरिक कर्म की वृत्ति को प्राप्त करते हैं | जंगम शरीर वाले प्राणियों में भी जो देह धारण करने वाले मनुष्य हैं, वे कर्म के द्वारा वृत्ति को प्राप्त करना चाहते हैं चाहे वह इस संसार में हो या परलोक में हो | सभी प्राणी भारत भूमि में अपने उत्थान को जानते हैं और लोक में साक्षीभूत से विद्यमान कर्म के फल का प्रत्यक्ष रूप से उपभोग भी करते हैं, अथवा लोक जिसका साक्षी है ऐसे कर्मों के फल का प्रत्यक्ष रुप से उपभोग भी करते हैं |

यच्चापि किञ्चित्पुरुषो दृष्टं नाम लभत्युत |
दैवेन विधिना लोके तद्दैवमिति निश्चितम् ||१३||
यत्स्वयं कर्मणा किञ्चित्फलमाप्नोति पूरुषः |
प्रत्यक्षञ्चक्षुषा दृष्टं तत्पौरुषमिति स्मृतम् ||१४||

कोई भी व्यक्ति जब भाग्य-वश (दैववश) विधाता की विधि के माध्यम से दृष्ट नाम से किसी फल का उपभोग करता है तो इस संसार में उसे दैव जानना चाहिए | जब अपने कर्म के द्वारा कुछ फल को पुरुष प्राप्त करता है, जिसका फल इस संसार में प्रत्यक्ष नेत्रों से देखा जाए तब उसे पौरुष कहा जाता है |

धातापि हि स्वकर्मैव तैस्तैर्हेतुभिरीश्वरः |
विदधाति विभज्येह फलं पूर्वकृतं नृणाम् ||१५||
यद्ध्ययं पुरुषः किञ्चित्कुरुते वै शुभाशुभम् |

तद्धातृविहितं लोके पूर्वकर्मफलोदयम् ||१६||
कारणं तस्य देहोऽयं धातुः कर्मणि कर्मणि |
स यथा प्रेरयत्येनं तथायङ्कुरुतेऽवशः ||१७||

विधाता भी अलग-अलग हेतुओं के माध्यम से ईश्वर द्वारा मनुष्यों के पहले किए गए कर्म के आधार पर फल रूप में बांटकर प्रदान करता है | यह पुरुष जो कुछ भी शुभ या अशुभ कर्म करता है, वह पूर्वकर्म के फलप्रदान के लिए ही विधाता के द्वारा इस संसार में विहित किया गया है | पूर्व कर्म के फल के कारण ही अलग-अलग कर्मों में यह देह प्रवृत्त होता है और विधाता जब अलग-अलग कर्म को फलीभूत करने के लिए व्यक्ति को प्रेरित करता है, तो व्यक्ति उसके वशीभूत होकर वैसा ही वैसा करता है |

तेषु तेषु हि कृत्येषु विनियोक्ता महेश्वरः |
कर्तृत्त्वादेव पुरुषः कर्मसिद्धौ प्रशस्यते ||१८||
अनारम्भे तु न फलं न गुणो दृश्यते क्वचित् |
यतः सृष्टानि भूतानि जायन्ते च म्रियन्ति च ||१९||

महान् ईश्वर उन-उन कृत्यों में मनुष्यों का विनियोजन करते हैं और इस कर्तृत्व क्रिया के कारण पुरुष कर्मसिद्धि में प्रशस्त होता है | कर्म के न होने पर अथवा सृष्टि के आरम्भ न होने पर न तो कोई गुण दिखता है न तो कोई फल दिखता है, क्योंकि इस सृष्टि में ही रचित प्राणी उत्पन्न होते रहते हैं और मरते रहते हैं |

अनादिनिधनो देवस्तथा तेभ्योऽजरामरः |
अव्यक्त इति विख्यातः शाश्वतोऽथाक्षयोऽव्ययः ||२०||
दुर्विज्ञेयो ह्यचिन्त्यात्मा सिद्धैरपि न संशयः |

स एष भगवान्विष्णुरनन्त इति विश्रुतः ||२१||
ब्रह्मणो मानसी मूर्तिर्या ब्रह्मत्वमुपागता |
तस्यासनविधानार्थं मेदिनी पद्ममुच्यते ||२२||
कर्णिका तस्य पद्मस्य मेरुर्गगनमुच्यते |
तस्य मध्ये स्थितो लोकान्सृजत्येष जगद्विधिः ||२३||

जो जन्म और मृत्यु दोनों से रहित है, इन प्राणियों में जो अजर और अमर है, जो अव्यक्त के रूप में विख्यात है, अविनाशी है, जिसका क्षय नहीं हो सकता, जिसका व्यय नहीं हो सकता, उसे जानना अत्यंत कठिन है | जो सिद्धों के द्वारा भी सरलता से चिंतनीय नहीं हैं, वही भगवान विष्णु 'अनन्त' नाम से सुने जाते हैं, बताए जाते हैं, इसमें संशय नहीं है | ब्रह्म की जो मानुषी मूर्ति है, जो ब्रह्मा के भाव से युक्त होती है, उसके आसन के रूप में पृथ्वी का विधान किया गया है और इस पृथ्वी को ही पद्म कहते हैं | इस पद्म की कर्णिका आकाशरूपी मेरु है | इसके मध्य में स्थित होकर विधाता ब्रह्मा इन लोकों का और इस जगत् का निर्माण करते हैं |

संरक्षणार्थं भूतानां सृष्टं प्रथमतो जलम् |
दिव्या सरस्वती तत्र सम्बभूव नभस्तलात् ||२४||
धरा शैलास्तथा मेघा मूर्तिमन्तश्च ये परे |
सर्वं तद्वारुणं ज्ञेयमापस्सर्वस्य कारणम् ||२५||

सभी प्राणियों की रक्षा के लिए सबसे पहले उन्होंने जल की रचना की और जब उन्होंने ऐसा संकल्प किया तो आकाश से दिव्य प्रवाह वाली सरस्वती उत्पन्न हुई | पृथ्वी, पर्वत, बादल और जो भी मूर्तिमान तत्त्व हैं, उन्हें 'वारुण' ऐसा जानना चाहिए, क्योंकि जल ही इन सबों का कारण है |

प्रादुर्भावङ्क्षयञ्चैव भूतस्य निधनं तथा |
ब्रह्म वै भूतभव्यस्य वर्तमानस्य सम्भवः ||२६||
कर्मणां हि तथा नाशं प्राणिनां नास्ति सम्भवः |
कर्ममार्गानुसारेण विधात्रा ते प्रचोदिताः ||२७||

इनकी उत्पत्ति, इनका विनाश, प्राणियों का मरण, भूतकाल, भविष्यकाल, वर्तमान काल, सबों का सम्भव कारण ब्रह्म ही है | प्राणियों के कर्म का नाश सम्भव नहीं होता है, क्योंकि कर्म के अनुसार ही विधाता के द्वारा वे प्रेरित किए जाते हैं |

सत्यं बृहद्दतमुग्रं तपञ्च ब्रह्म यज्ञं पृथिवीं धारयन्ति |
वेदा लोके शब्दब्रह्मेति सिद्धास्ते भूतेभ्यः शं पदमीषिषीरन् ||२८||
दिवं स्पृशति भूमिं च शब्दः पुण्यस्य कर्मणः |
यावत्स शब्दो भवति तावद्वै कीर्त्यते पुमान् ||२९||

जो सत्यरूपी, बृहद्रूपी, पवित्ररूपी, उग्ररूपी, तपोरूपी ब्रह्म को, यज्ञ को और पृथ्वी को धारण करते हैं, ऐसे वेद इस संसार में शब्द ब्रह्म के रूप में सिद्ध हैं और प्राणियों को कल्याणरूपी पद प्रदान करते हैं | पुण्य कर्म करने वाले का शब्द, स्वर्ग और पृथ्वी दोनों को स्पर्श करता है और जब तक वह कीर्तिशब्द विद्यमान रहता है, तब तक उस व्यक्ति की प्रशंसा होती रहती है |

कामो भूतस्य भव्यस्य सम्राडेको विराजति |
कामो बली समस्तानां स विश्वं प्रतिशासति ||३०||
सत्कर्म चार्चनं विष्णोस्तदन्यत्तु निरर्थकम् |
सत्तामात्रं परं ब्रह्म विष्ण्वाख्यमविशेषणम् ||३१||

दुर्विचिन्त्यं यतः पूर्वं तत्प्राप्त्यर्थमिहोच्यते |
वातोर्मिचञ्चलं चित्तमनालम्बनमस्थिरम् ||३२||

जो घटनाएं घटित हो चुकी है और जो घटनाएं घटित होने वाली हैं, इन दोनों में एक काम ही राजा के रूप में विराजित होता है | काम ही सभी प्राणियों में बली है और सारे विश्व का शासन करता है | इस संसार में भगवान् विष्णु का अर्चन ही सत्कर्म है, उसके अन्य सभी कर्म निरर्थक जानने चाहिए | स्थिति मात्र से ही कर्म का बोध होता है, वह बिना किसी विशेषण के या बिना किसी विशेषण पर आश्रित हुए, विष्णु के रूप में जाना जाता है | पूर्व काल में जैसा बताया गया है कि वह सरलता से चिंतनीय नहीं है, इसलिए उसकी प्राप्ति का उपाय बताता हूँ | जिस प्रकार से वायु का प्रवाह या वायु का वेग चञ्चल है, उसी प्रकार यह चित्त जो है वह एक जगह स्थिर नहीं रहता, एक तत्त्व का अवलम्बन नहीं करता, वायु के प्रवाह के समान चञ्चल है |

जन्मान्तरस्याभ्यासेन विज्ञानेन समाधिना |
गुरोर्कृपाप्रवाहेण विष्ण्वाख्यं ब्रह्म लभ्यते ||३३||
समाधिश्च परो योगो बहुभाग्येन लभ्यते |
गुरोः कृपाप्रसादेन प्राप्यते गुरुभक्तितः ||३४||
देहाद्भिन्नं मनः कृत्वा ऐक्यं कुर्यात्परात्मनि |
समाधिं तं विजानीयान्मुक्तसंज्ञो दशादिभिः ||३५||

जन्मांतर के अभ्यास से, विशेष ज्ञान से, समाधि से और गुरु की कृपा के प्रवाह से विष्णु संज्ञा वाला वह ब्रह्म प्राप्त हो जाता है |योग समाधि पर आश्रित है और बहुत भाग्य से प्राप्त होता है | गुरु की कृपा के प्रसाद से, गुरु की भक्ति से ही प्राप्त होता

है | देह से मन को हटाकर परमात्मा में लगाए और ऐसा करके जब दशा इत्यादि से वह मुक्त हो जाता है तो उसे ही समाधि जानना चाहिए |

अहं ब्रह्म न चान्योऽस्मि ब्रह्मैवाहं न शोकभाक् |
सच्चिदानन्दरूपोऽहमात्मानमिति भावयेत् ||३६||
आनन्दमयः सम्भूय ऐक्यं ब्रह्मणि सम्भवेत् |
अहं ब्रह्मेति वाद्वैतं समाधिस्तेन जायते ||३७||

मैं ब्रह्म हूँ, दूसरा कुछ नहीं हूँ | मैं ब्रह्म ही हूँ, शोक का भागी नहीं हूँ, सच्चिदानन्दरूप हूँ | अपनी आत्मा में ऐसी भावना करे और आनन्दमय होकर ब्रह्म में ऐक्य भाव का ध्यान करे | मैं ब्रह्म हूँ, इस प्रकार से जब अद्वैत बुद्धि होती है, तो उससे समाधि उत्पन्न होती है |

स्वकीयहृदये ध्यायेदिष्टदेवस्वरूपकम् |
चिन्तयेद्भक्तियोगेन परमाह्लादपूर्वकम् ||३८||
जले विष्णुः स्थले विष्णुर्विष्णुः पर्वतमस्तके |
त्रैलोक्यव्यापको विष्णुः सर्वं विष्णुमयञ्जगत् ||३९||
भूचराः खेचराश्चामी यावन्तो जीवजन्तवः |
सर्वं ब्रह्म विजानीयात्सर्वं पश्यति चात्मनि ||४०||
स्वदेहे पुत्रदारादिबान्धवेषु धनादिषु |
सर्वेषु निर्ममो भूत्वा समाधिं समवाप्नुयात् ||४१||
आसनं शयनं यानपरिधानगृहादिकम् |
वाञ्छत्यहोऽतिमोहेन सुस्थिरं स्वयमस्थिरः ||४२||

अपने हृदय में इष्टदेव के स्वरूप का ध्यान करके, परम आह्लाद के साथ भक्तियुक्त होकर चिन्तन करे | जल में विष्णु हैं, स्थल में विष्णु हैं, पर्वत के शिखर में विष्णु हैं, इस पूरी त्रिलोकी में भगवान विष्णु व्याप्त हैं, सम्पूर्ण संसार विष्णुमय है | धरती एवं आकाश में विचरण करने वाले जितने भी जीव-जन्तु हैं सबको ब्रह्म ही जानना चाहिए और जो सबों को इस प्रकार से अपनी आत्मा के अन्दर देखता है वह व्यक्ति अपने देह में पुत्र-स्त्री-बान्धव-धन इत्यादि में निर्मम (आसक्ति रहित) होकर समाधि को प्राप्त कर जाता है |

आगर्भजन्मबाल्यादिवयोऽवस्थादिवेदनम् |
श्रेयः परं मनुष्याणामुवाच जाह्नवी सरित् ||४३||
आध्यात्मिकादिदुःखानामाद्यन्तादिप्रतिक्रिया |
श्रेयः परं मनुष्याणां बभाषे जनको नृपः ||४४||

आसन (गद्दी) में, शयन (सुख) में, यान (वाहन), वस्त्र, घर इत्यादि में जो स्थिर भावना का दर्शन करता है और उनकी कामना करता है, वह अतिमोह से युक्त व्यक्ति स्वयं ही अस्थिर (अस्थिर चित्तवाला) है | गर्भकाल, जन्मकाल, बाल्यकाल में और अन्य भी अवस्थाओं की जो संवेदना है, इनमें मनुष्यों का कल्याण नहीं है | इनसे भी जो श्रेष्ठ है, मनुष्य का कल्याण उस श्रेष्ठ में निहित है, ऐसा गंगा नदी का वचन है | आध्यात्मिक आदि (आध्यात्मिक, आधिदैविक और अधिभौतिक) दुःखों के आदि और अन्त की जो प्रतिक्रिया है, उसमें भी मनुष्य का कल्याण नहीं है | मनुष्य का कल्याण तो परमब्रह्म में निहित है ऐसा राजा जनक ने कहा है |

अभिन्नयोर्भेदकरः प्रत्ययो यः परात्मनः |
तच्छान्तिपरमं श्रेय उवाच जलजासनः ||४५||

कामत्यागात्तु विज्ञानं सुखं ब्रह्म परं पदम् |
कामिनां न हि विज्ञानमूचुस्ते पञ्चहायनाः ||४६||

जो अभिन्न ब्रह्म और जीव में भेद की प्रतीति कराता है उसकी शान्ति ही परम कल्याण है, ऐसा कमलासन में बैठने वाले ब्रह्मा जी का वचन है | कामनाओं के त्याग से विशिष्ट ज्ञान की प्राप्ति होती है, सुख की प्राप्ति होती है, परमपद वाले ब्रह्म की प्राप्ति होती है | कामनाओं से युक्त व्यक्तियों को विशिष्ट ज्ञान नहीं होता, ऐसा पांच वर्ष की आयु वाले सनत्कुमार ने कहा है |

पुमांश्चाधिगतज्ञानो भेदं नाप्नोति सत्तमः |
ब्रह्मणा विष्णुसंज्ञेन परमेणाव्ययेन च ||४७||
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं सौभाग्यं रूपमुत्तमम् |
तपसा लभ्यते सर्वं मनसा यद्यदिच्छति ||४८||

श्रेष्ठ व्यक्ति ज्ञान की प्राप्ति होने पर भेद प्राप्त नहीं करता अर्थात् भेद नहीं देखता, विष्णुसंज्ञक परमब्रह्म और अव्यय ब्रह्म से वह पुनः भेद प्राप्त नहीं करता | व्यक्ति मन में जो भी इच्छा करता है उसे तपस्या के द्वारा प्राप्त कर लेता है, चाहे वह ज्ञान हो, विज्ञान हो, आस्तिकता हो, सौभाग्य हो अथवा उत्तम रूप हो |

नास्ति विष्णुसमन्ध्येयं तपो नानशनात्परम् |
अग्राह्यकमनिर्देश्यं सुप्रतिष्ठञ्च यत्परम् ||४९||
यत्तद्ब्रह्म यतः सर्वं यत्सर्वं तस्य संस्थितम् |
स वै विष्णुः परं ब्रह्म यतो नावर्त्तते पुनः ||५०||

भगवान् विष्णु के समान ध्येय (ध्यान योग्य) दूसरा नहीं है, निराहार व्रत के समान दूसरी तपस्या नहीं है | जो ग्रहण नहीं किया जा सकता, जिसका निर्देश्य नहीं किया जा सकता, जो सुप्रतिष्ठित है और परमब्रह्म है, जो सबों में है और सबकुछ जिसमें स्थित है, जिससे सब उत्पन्न हैं और जिसमें सबों की स्थिति है, वही विष्णु परमब्रह्म है, जहाँ से व्यक्ति पुनः वापस नहीं आता है |

नाराधयति यो विष्णुं नाम नोच्चरतीति वा |
न सत्पदमवाप्नोति संसारञ्चाधिगच्छति ||५१||
आत्मानं मन्यते ब्रह्म जीवो ज्ञानेन नान्यथा |
जीवो ह्यज्ञानतत्कार्यमुक्तः स्यादजरामरः ||५२||
नष्टेऽज्ञाने तदा जीवो मुक्तो भवति सर्वथा |
यथाण्डावरणे नष्टेऽण्डजा मुक्ता भवन्ति हि ||५३||

जो विष्णु का नामोच्चारण नहीं करता, जो विष्णु की आराधना नहीं करता, वह सत्पद को प्राप्त नहीं करता है और पुनः संसार में आ जाता है | जो जीव ज्ञान के ही माध्यम से स्वयं को ब्रह्म मानता है और अन्य उपायों से नहीं, वह जीव अज्ञान और उसके कार्यों से मुक्त होकर अजर-अमर हो जाता है | अज्ञान के नष्ट होने पर जीव सर्वथा मुक्त हो जाता है, जैसे अण्डे के आवरण के नाश होने पर उससे निर्गत होने वाले अण्डज मुक्त हो जाते हैं |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायां चतुर्थः पटलः ||
| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में चतुर्थ पटल हुआ |

अथ पञ्चमः पटलः

निग्रह उवाच

शान्ता जितारिषड्वर्गा योगेनाप्यनहङ्कृताः |
यजन्ति ज्ञानयोगेन ज्ञानरूपिणमव्ययम् ||०१||
तीर्थस्नानैर्विशुद्धा ये व्रतदानतपोमखैः |
यजन्ति कर्मयोगेन सर्वधातारमच्युतम् ||०२||
लुब्धा व्यसनिनोऽज्ञाश्च न यजन्ति जगत्पतिम् |
नाराधयन्ति विश्वेशं सर्वश्रेयोविधायकम् ||०३||
कष्टाशा वर्त्तते यस्य न स विद्वान्न पण्डितः |
सुशान्तोऽपि महामन्युर्बुद्धिमानपि मूढधीः ||०४||

निग्रहाचार्य ने कहा - जिन्होंने काम, क्रोध, मद, लोभ, मत्सर, अहंकार इत्यादि छः वर्गों वाले शत्रुओं को जीत लिया है, जो शान्त हैं, योग बुद्धि के द्वारा जिन्होंने अहंकार पर विजय प्राप्त कर लिया है, जो अहंकार से रहित हैं, ऐसे लोग ज्ञान योग के द्वारा अव्यय ज्ञानरूपी ब्रह्म की उपासना करते हैं | जो व्रत, यज्ञ, दान, तपस्या, तीर्थस्नान इत्यादि के द्वारा विशुद्ध हो चुके हैं, ऐसे लोग कर्मयोग के द्वारा सबों के धाता अच्युत ब्रह्म का यजन करते हैं | जो लोग लुब्ध हैं, व्यसनी और मूर्ख हैं, वे पूरे संसार के स्वामी की आराधना नहीं करते, सभी प्रकार के कल्याण को प्रदान करने वाले विश्वेश भगवान की वे आराधना नहीं करते हैं | जिसके पास आशा रूपी कष्ट विद्यमान है या कष्ट देने वाली आशा विद्यमान है, वह न विद्वान् है, न पण्डित है | ऐसा व्यक्ति सामान्यतया शान्त रहने पर भी अत्यन्त क्रोध करता है | वह बुद्धिमान् होने पर भी मूढ़ बुद्धि वाला है |

बलं तेजो यशो विद्यां धनं मानञ्च वृद्धताम् |
आरोग्यं सत्कुले जन्म हन्त्याशा चातिवेगतः ||०५||
आशाभिभूता ये मर्त्या महामोहा महोद्धताः |
अवमानादिकं दुःखं न जानन्ति कदाप्यहो ||०६||
आशा भङ्गकरी पुंसामजेयारातिसन्निभा |
तस्मादाशां त्यजेत्प्राज्ञो यदीच्छेच्छाश्वतं सुखम् ||०७||
भजेद्विष्णुं परं नित्यं स्मरेन्नारायणं प्रभुम् |
परापवादं पैशुन्यं कदाचिदपि नाचरेत् ||०८||

बल, तेज, यश, विद्या, धन, मान, वार्धक्य (बड़प्पन), आरोग्य और अच्छे कुल में जन्म, इन सभी उपलब्धियों को आशा अत्यंत वेग से नष्ट कर डालती है | जो लोग अत्यंत मोह से युक्त हैं और बहुत उद्धत स्वभाव वाले हैं, आशा के द्वारा अभिभूत हैं, वे कभी भी अपमान इत्यादि के दुख को नहीं जानते हैं अर्थात् सदा आशान्वित बने रहते हैं | ये जो आशा है वह प्राणियों के लिए अजेय शत्रु के समान है, ये सब कुछ भंग कर देती है, अतएव यदि शाश्वत सुख की कामना करता है, तो बुद्धिमान् व्यक्ति आशा को छोड़ दे | परमेश्वर भगवान् विष्णु का, नारायण प्रभु का, नित्य भजन करे, स्मरण करे | दूसरे की निन्दा और चुगली कभी भी नहीं करे |

परोपकारनिरतो भवेच्चैव महामतिः |
हरिपूजापरश्चैव त्यजेद्धूर्त्तसमागमम् ||०९||
दम्भाचारमहङ्कारं नैष्ठुर्यञ्च परित्यजेत् |
कुर्याद्दयां विनापेक्षां शुश्रूषाञ्च तथा सताम् ||१०||

पुराणश्रवणञ्चैव पुराणपठनं तथा |
वेदान्तचिन्तनञ्चैव नित्यङ्कुर्याद्विचक्षणः ||११||
कोऽहं मम क्रिया केति स्वस्यैवं वा विचिन्तनम् |
मनसो नात्मनो धर्मोऽहङ्कारो मनसि स्थितः ||१२||
अनौपम्यस्वभावस्य निर्गुणस्य परात्मनः |
निरूपस्याप्रमेस्य कथं वै नामनिश्चयम् ||१३||

परोपकार में निरत रहे और इस प्रकार से वह महामति धूर्तों के समागम को छोड़कर भगवान विष्णु की पूजा में लगा रहे | दम्भयुक्त आचरण, अहंकार तथा निष्ठुरता को छोड़ दे और बिना किसी अपेक्षा के प्राणियों पर सतत दया करे एवं सज्जनों की सेवा करे | पुराणों का श्रवण करे, पुराणों का पठन करे, वेदांत का चिंतन करे, इस प्रकार से बुद्धिमान व्यक्ति नित्य ही क्रिया में रत रहे | मैं कौन हूं, मेरी क्या क्रिया है, मेरा क्या कर्तव्य है, इस प्रकार से जो चिंतन है, ये सब मन के धर्म हैं, ये आत्मा के गुण नहीं हैं क्योंकि अहंकार की स्थिति मन में ही होती है | जो निर्गुण परमात्मा हैं, उनका स्वभाव उपमा से रहित है, अनुपम है | जो अनुपम है, जो अतुल्य है, जो रूप से रहित है, उसको किसी एक नाम से कैसे निश्चित किया जा सकता है ?

परञ्ज्योतिस्स्वरूपस्य परिपूर्णाव्ययात्मनः |
अविच्छिन्नस्वभावस्य कथ्यते च कथं क्रिया ||१४||
स्वप्रकाशात्मनो लोके नित्यस्य परमात्मनः |
अनन्तस्य क्रिया चैव कथं जन्म च कथ्यते ||१५||
ज्ञानैकवेद्यमजरं परं ब्रह्म सनातनम् |
परिपूर्णं परानन्दं तस्मान्नान्यदिह क्वचित् ||१६||

तत्त्वमस्यादिवाक्येभ्यो ज्ञानं मोक्षस्य साधनम् |
ज्ञाने त्वनाहते सिद्धे सर्वं ब्रह्ममयं भवेत् ||१७||
उपाधिरहितं ब्रह्म स्वप्रकाशं निरञ्जनम् |
अहमेवेति निश्चित्य परां शान्तिमवाप्तवान् ||१८||

जो परिपूर्ण है, अव्यय है, अव्ययात्मा है, परम ज्योति है, जिसका स्वभाव कभी भी क्षीण नहीं होता, उसकी क्रिया कैसे बताई जा सकती है ? जो परमात्मा नित्य है, अपने ही तेज से प्रकाशित और अनन्त है, उसका जन्म कैसे बताया जा सकता है ? जो अजर परब्रह्म सनातन है, केवल ज्ञान के द्वारा जिसे जाना जा सकता है, जो परिपूर्ण है, परानंद है, उसके अतिरिक्त यहाँ कोई दूसरा नहीं है | *तत्त्वमसि* , वह तुम ही हो इत्यादि वाक्यों के द्वारा ज्ञान मोक्ष का द्वार बनता है | जो किसी के द्वारा आहत न हो, ऐसे ज्ञान के सिद्ध होने पर सबकुछ ब्रह्ममय हो जाता है | उपाधि से रहित ब्रह्म, स्वप्रकाश और निरंजन होता है | *वैसा ब्रह्म मैं ही हूँ*, ऐसा निश्चित रूप से जानकर व्यक्ति परम शान्ति को प्राप्त कर गये|

भक्तिर्दृढा भवेद्यस्य देवदेवे जनार्दने |
श्रेयांसि तस्य सिद्ध्यन्ति भक्तिमन्तोऽधिकास्ततः ||१९||
रिपवस्तं न हिंसन्ति न बाधन्ते ग्रहाश्च तम् |
राक्षसाश्च न चेक्षन्ते नरं विष्णुपरायणम् ||२०||
सत्यं सत्यं पुनः सत्यमुद्धृत्य भुजमुच्यते |
तत्त्वं गुरुसमं नास्ति न देवः केशवात्परः ||२१||
सत्यं सत्यं पुनः सत्यमुद्धृत्य भुजमुच्यते |
न विष्णुशिवयोर्मध्ये क्वचिद्भेदोऽस्ति तत्त्वतः ||२२||

जिसकी भक्ति देवाधिदेव जनार्दन में दृढ़ हो गई है, उस भक्तिमान् पुरुष की अधिकाधिक कल्याणकारिणी इच्छाएं सिद्ध हो जाती है | शत्रु उसे नहीं मारते और ग्रह भी उसे बाधा नहीं पहुंचाते | राक्षस भी उसकी ओर दृष्टिपात नहीं करते, जो व्यक्ति भगवान विष्णु की शरण में रहता है | मैं सत्य कहता हूँ, सत्य कहता हूँ, भुजा उठाकर पुनः सत्य कहता हूँ कि गुरु के समान कोई तत्त्व नहीं है और विष्णु के समान कोई देवता नहीं है | मैं सत्य कहता हूँ, सत्य कहता हूँ, भुजा उठाकर पुनः सत्य कहता हूँ कि तत्त्व की दृष्टि से विष्णु और शिव के मध्य कोई भी भेद नहीं है |

सत्यं सत्यं पुनः सत्यमुद्धृत्य भुजमुच्यते |
हरकेशवयोर्मध्ये भेदं दृष्ट्वा न मुच्यते ||२३||
सत्यं सत्यं पुनः सत्यमुद्धृत्य भुजमुच्यते |
नीलकण्ठो वासुदेवः शर्वस्तु भुजगासनः ||२४||
सत्यं सत्यं पुनः सत्यमुद्धृत्य भुजमुच्यते |
रथाङ्गपाणिः शम्भुस्तु पिनाकी भगवान्हरिः ||२५||
सत्यं सत्यं पुनः सत्यमुद्धृत्य भुजमुच्यते |
दम्भाचारं परित्यज्य वासुदेवं समर्चयेत् ||२६||
तन्मनः संयुतं विष्णौ सा वाणी यत्परायणा |
ते श्रोत्रे तत्कथासारपूरिते लोकवन्दिते ||२७||

मैं सत्य कहता हूँ, सत्य कहता हूँ, भुजा उठाकर पुनः सत्य कहता हूँ कि विष्णु और शिव के मध्य जो व्यक्ति भेद देखता है, वह भेदद्रष्टा कभी मुक्त नहीं हो सकता | मैं सत्य कहता हूँ, सत्य कहता हूँ, भुजा उठाकर पुनः सत्य कहता हूँ कि नीलकंठ ही वासुदेव हैं और भगवान शिव ही शेष नाग पर शयन करते हैं | मैं सत्य कहता हूँ, सत्य कहता हूँ, भुजा उठाकर पुनः सत्य कहता हूँ कि भगवान् शिव ही सुदर्शन

चक्र को धारण करते हैं और भगवान् विष्णु पिनाक धनुष धारण करते हैं | मैं सत्य कहता हूँ, सत्य कहता हूँ, भुजा उठाकर पुनः सत्य कहता हूँ कि दंभयुक्त आचरण को छोड़कर, भगवान् विष्णु की भली प्रकार से आराधना करे | मन वही है जो भगवान विष्णु में लगा हुआ है | वाणी वही है जो उनमें (उनके गुणगान में) लगी हुई है | कान वही हैं जो उन (भगवान् विष्णु) के कथासार से भरे हुए हैं | यही कान संसार में पूजित भी होते हैं |

बाह्यैस्तु करणैर्युक्तो वर्त्ततेऽसौ यदा तदा |
जाग्रदित्युच्यते सद्भिरन्तर्यामी सनातनः ||२८||
यदान्तःकरणैर्युक्तः स्वेच्छया विचरत्यसौ |
स्वपन्नित्युच्यते ह्यात्मा यदा स्वप्नविवर्जितः ||२९||
न बाह्यकरणैर्युक्तो न चान्तःकरणैस्तथा |
अस्वरूपो यदात्मासौ पुण्यापुण्यविवर्जितः ||३०||
सर्वोपाधिविनिर्मुक्तो ह्यानन्दो निर्गुणो विभुः |
परब्रह्ममयो देवः सुषुप्त इति गीयते ||३१||

जब वह अंतर्यामी सनातन ब्रह्म बाह्यकरणों से युक्त होता है, तब उसे जागृत, ऐसा कहा जाता है | जब वह अंतःकरण से युक्त होकर स्वेच्छानुसार विचरण करता है, तब वह स्वप्न वाला आत्मा कहलाता है | जब स्वप्न से वर्जित हो जाता है, बाह्यकरण और अंतःकरण दोनों से जब रहित हो जाता है, तब किसी स्वरूप में आश्रित नहीं होता और पुण्य एवं पाप से विवर्जित हो जाता है | जब सभी प्रकार की उपाधि से विनिर्मुक्त हो जाता है, आनन्दमय हो जाता है, निर्गुण हो जाता है, तब वह परब्रह्ममय देवता सुषुप्त, ऐसा कहा जाता है |

सत्यं वच्मि हितं वच्मि सारं वच्मि पुनःपुनः |
संसारेऽसाररूपेऽस्मिन् सत्यं हरिसमर्चनम् ||३२||
सत्यं वच्मि हितं वच्मि सारं वच्मि पुनःपुनः |
नास्ति विष्णुसमं लोके पापकृज्जनमोक्षदः ||३३||
सत्यं वच्मि हितं वच्मि सारं वच्मि पुनःपुनः |
नास्ति शम्भुसमं लोके ज्ञानविज्ञानबोधकः ||३४||
सत्यं वच्मि हितं वच्मि सारं वच्मि पुनःपुनः |
गणेशसूर्यकौमाररूपेषु रमते हरिः ||३५||
सत्यं वच्मि हितं वच्मि सारं वच्मि पुनःपुनः |
वीर्यं गुहो गणेशो धीश्चक्षुषी भगवान् रविः ||३६||
सत्यं वच्मि हितं वच्मि सारं वच्मि पुनःपुनः |
हरिः श्रद्धावतां तुष्येन्न धनैर्न च बान्धवैः ||३७||
सत्यं वच्मि हितं वच्मि सारं वच्मि पुनःपुनः |
देवताभेदद्रष्टारो यान्ति ब्रह्म निरामयम् ||३८||

मैं सत्य कहता हूँ, हितकारी वचन कहता हूँ, सार को बारंबार कहता हूँ कि इस असाररूपी संसार में भगवान् विष्णु की पूजा ही एक सत्य है | मैं सत्य कहता हूँ, हितकारी वचन कहता हूँ, सार को बारंबार कहता हूँ कि पापियों को मोक्ष देने के विषय में भगवान् विष्णु के समान दूसरा कोई नहीं है | मैं सत्य कहता हूँ, हितकारी वचन कहता हूँ, सार को बारंबार कहता हूँ कि भगवान शिव के समान ज्ञान और विज्ञान का बोध कराने वाला संसार में दूसरा कोई नहीं है | मैं सत्य कहता हूँ, हितकारी वचन कहता हूँ, सार को बारंबार कहता हूँ कि गणेश, सूर्य, कार्तिकेय इत्यादि के रूपों में भगवान् विष्णु ही रमण करते हैं | मैं सत्य कहता हूँ, हितकारी

वचन कहता हूँ, सार को बारंबार कहता हूँ कि भगवान् कार्तिकेय विष्णु के बल हैं, भगवान् गणेश विष्णु की बुद्धि हैं और भगवान् सूर्य विष्णु के दोनों नेत्र हैं | मैं सत्य कहता हूँ, हितकारी वचन कहता हूँ, सार को बारंबार कहता हूँ कि भगवान् विष्णु केवल श्रद्धावानों के द्वारा ही संतुष्ट होते हैं, धन और बान्धवों के द्वारा नहीं | मैं सत्य कहता हूँ, हितकारी वचन कहता हूँ, सार को बारंबार कहता हूँ कि देवताओं में जो भेद नहीं देखते हैं (देवताओं में जो अभेद दृष्टि रखते हैं) वही लोग निरामय ब्रह्मपद को प्राप्त करते हैं |

आनन्दमक्षरं शून्यमवस्थात्रितयैरपि |
आकाशमध्यगं विष्णुं माधवं भज सन्ततम् ||३९||
या तु नारी पतिप्राणा पतिपूजापरायणा |
तस्यास्तुष्टो जगन्नाथो ददाति स्वपदं ध्रुवम् ||४०||

जो आनन्दरूपी हैं, अक्षर हैं, शून्य हैं, तीनों अवस्थाओं में जो शून्य रूप में स्थित रहते हैं, ऐसे आकाश के मध्य में स्थित भगवान् विष्णु, जो लक्ष्मी के पति हैं, उन का निरन्तर भजन करो | जो स्त्री अपने पति को ही प्राणों के समान मानती है, पति की पूजा में लगी रहती है, उससे भगवान जगन्नाथ संतुष्ट हो जाते हैं और उसे निश्चय ही अपना अविनाशी पद प्रदान करते हैं |

असूयारहिता ये तु ह्यहङ्कारविवर्जिताः |
देवपूजापराश्चैव तेषां तुष्यति केशवः ||४१||
नामसङ्कीर्त्तनं विष्णोः क्षुत्तृट्प्रस्खलितादिषु |
वर्तन्ते यस्य तस्यैव तुष्यते जगतां पतिः ||४२||
शरीरं मृत्युसंयुक्तं जीवनं चातिचञ्चलम् |

राजादिभिर्धनं बाध्यं सम्पदः क्षणभङ्गुराः ||४३||
संसारेऽसारभूतेऽस्मिन्नानादुःखसमन्विते |
विश्वासो नात्र कर्त्तव्यो निश्चितं मृत्युसङ्कुले ||४४||

जो लोग अहंकार से वर्जित हैं, जो ईर्ष्या से रहित हैं, देवताओं की पूजा में लगे रहते हैं, उनसे भगवान् केशव संतुष्ट होते हैं | भूख-प्यास की अवस्था हो या गिरने की अवस्था में, फिसलने आदि किसी भी अवस्था में हो, जो व्यक्ति भगवान् विष्णु का नाम संकीर्तन करता है, संसार के स्वामी भगवान् विष्णु उससे संतुष्ट होते हैं | यह शरीर मृत्यु से युक्त है, जीवन अति चञ्चल है | यह धन राजा (सरकार) इत्यादि के द्वारा ले लिया जाएगा, संपत्तियां क्षणभंगुर होती हैं ऐसा जानकर नाना दुखों से समन्वित इस असारभूत संसार में किसी पर भी विश्वास नहीं करना चाहिए, क्योंकि यहाँ मृत्यु निश्चित है |

शरीरं भोगनिलयं मलाद्यैः परिदूषितम् |
किमर्थं शाश्वतधिया कुर्यात्पापं नरो वृथा ||४५||
यथा हस्तिपदे सर्वं पदमात्रं प्रलीयते |
तथा चराचरं विश्वं विष्णावेव प्रलीयते ||४६||

यह शरीर भोग का घर है, मल इत्यादि के द्वारा दूषित कर दिया गया है, इसके लिए शाश्वतबुद्धि के माध्यम से व्यक्ति वृथा ही पाप करता है | जिस प्रकार से हाथी के पाँव के नीचे सबों के पदचिह्न विलीन हो जाते हैं, वैसे ही यह सम्पूर्ण चराचर विश्व भगवान् विष्णु में ही जाकर लीन हो जाता है |

मानुष्यं दुर्लभं प्राप्य यो हरिं नार्चयेत्सकृत् |
मूर्खः कोऽस्ति परस्तस्माज्जडबुद्धिरचेतनः ||४७||

दुर्लभं प्राप्य मानुष्यं नार्चयन्ति च ये हरिम् |
तेषामतीव मूर्खाणां विवेकः कुत्र तिष्ठति ||४८||

जो चेतन मनुष्य योनि को प्राप्त करके भी भगवान विष्णु की सत्क्रिया के द्वारा अर्चना नहीं करता, उससे अधिक जड़बुद्धि, अचेतन और मूर्ख भला कौन होगा | जो दुर्लभ मनुष्य जन्म को प्राप्त करके भी भगवान् विष्णु की अर्चना नहीं करते, उन महामूर्खों का विवेक भला रहता कहाँ है, अर्थात् उनमें विवेक नहीं होता है |

अहो मौर्ख्यमहो मौर्ख्यमहो मौर्ख्यं दुरात्मनाम् |
हृदये संस्थितं विष्णुं न जानन्त्यघबान्धवाः ||४९||
अहो चित्रमहो चित्रमहो चित्रमिदं महत् |
हरिनाम्नि स्थिते लोके संसारः परिवर्त्तते ||५०||
अहो धैर्यमहो धैर्यमहो धैर्यमहो नृणाम् |
स्थिते विष्णौ जगन्नाथे न भजन्ति मदोद्धताः ||५१||

अहो ! कितनी बड़ी मूर्खता है, अहो !! यह कितनी बड़ी मूर्खता है, अहो !!! दुरात्माओं की यह कितनी बड़ी मूर्खता है कि पाप को ही अपना बंधु मानने वाले ये लोग हृदय में स्थित भगवान् विष्णु को नहीं जान पाते | अहो ! ये कैसी विचित्रता है ? अहो !! यह कैसी विचित्रता है ?? अहो !!! यह कैसी महान् विचित्रता है कि भगवान् का नाम इस संसार में विद्यमान् है, फिर भी लोगों का पुनर्जन्म हो जा रहा है | अहो ! यह कैसा धैर्य है ? अहो !! यह कैसा धैर्य है ?? अहो !!! यह लोगों का कैसा धैर्य है कि सम्पूर्ण संसार के स्वामी भगवान् विष्णु स्थित हैं, फिर भी मद में उद्धत लोग उनका भजन नहीं करते हैं |

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः |
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ||५२||
काममूलमिदं जन्म कामः पापस्य कारणम् |
यशःक्षयङ्करः कामस्तस्मात्तं परिवर्जयेत् ||५३||
क्रोधमूलो मनस्तापः क्रोधः संसारबन्धनम् |
धर्मक्षयङ्करः क्रोधस्तस्मात्तं परिवर्जयेत् ||५४||
समस्तदुःखजालानां लोभो वै कारणं स्मृतम् |
दुर्गतेस्साधनञ्चैव तस्मात्तं परिवर्जयेत् ||५५||

काम, क्रोध और लोभ, ये तीन प्रकार के नरक के द्वार हैं, जो आत्मा का नाश करते हैं, अतएव इन तीनों को छोड़ देना चाहिए | काम इस जन्म का मूल है अर्थात् यह जन्म काम के ही कारण हुआ है, काम ही पाप का भी कारण है | यह काम यश का क्षय करता है, इसलिए इसे छोड़ दे, इसकी परिवर्जना कर दे | क्रोध मन के संताप का मूल है और क्रोध ही संसार में बांधने वाला है | क्रोध धर्म का क्षय कराता है, इसलिए क्रोध को छोड़ दे, उसकी परिवर्जना कर दे | सभी दुखों का जो जाल है, उसमें लोभ ही कारण बताया गया है और यह दुर्गति का साधन भी है | इसलिए उसको भी छोड़ दे |

मातुर्गर्भाद्विनिष्क्रान्तो यदा जन्तुस्तदैव हि |
मृत्युः सन्निहितो भूयात्तस्माद्धर्मपरो भवेत् ||५६||
पापमूलमयं देहः पापकर्मरतस्तथा |
एतद्विदित्वा सततं पूजनीयो जनार्दनः ||५७||

जिस समय जन्तु माता के गर्भ से निकलता है, उसी समय उसे समझ लेना चाहिए कि मेरी मृत्यु आ गई है, ऐसा जानकर उसे धर्मपरायण हो जाना चाहिए | यह देह पापमूलमय है और पापकर्म में लगा रहता है, ऐसा जानकर सदैव भगवान् विष्णु का पूजन करना चाहिए |

विद्युल्लोलश्रिया मत्ताः क्षणभङ्गुरशालिनः |
नाराधयन्ति विश्वेशं पशुपाशविमोचकम् ||५८||
धिग्जन्म भक्तिहीनानां देवदेवे जनार्दने |
दम्भादिरहिता ये च तेषां तुष्यति केशवः ||५९||

यह जो संपत्ति है वह बिजली की चमक के समान चंचल मानी गई है तथापि क्षणभंगुर जीव इसी में मत्त रहते हैं और पशु (जीव) को पाश (बंधन) से मुक्त कर देने वाले विश्वेश (भगवान् विष्णु) की आराधना नहीं करते | जो लोग देवताओं के भी देवता भगवान् जनार्दन में भक्ति नहीं रखते, उनके जन्म को धिक्कार है | जो दम्भ इत्यादि से रहित हैं भगवान केशव तो उन्हीं से संतुष्ट होते हैं |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायां पञ्चमः पटलः ||
| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में पञ्चम पटल हुआ |

अथ षष्ठः पटलः

निग्रह उवाच

इच्छाशक्तिः परा विष्णोर्जगत्सर्गादिकारिणी |
व्यक्ताव्यक्तस्वरूपेण जगद्व्याप्य व्यवस्थिता ||०१||
विद्याविद्येति ब्राह्मीति मायेति च तथा परे |
प्रकृतिश्च परा चेति तां वदन्ति मनीषिणः ||०२||
प्रकृतिश्चपुमांश्चैव कालश्चेति विधिस्थितिः |
सृष्टिस्थितिविनाशानामेकः कारणतां गतः ||०३||
स देवः परमः शुद्धः सत्त्वादिगुणभेदतः |
देवत्रयं समापन्नः सृष्टिस्थित्यन्तकारणम् ||०४||
अन्तर्यामी जगद्व्यापी सर्वसाक्षी निरञ्जनः |
भिन्नाभिन्नस्वरूपेण स्थितो वै परमेश्वरः ||०५||

निग्रहाचार्य ने कहा - विष्णु की जो परा इच्छाशक्ति है, वह संसार की उत्पत्ति का कारण है, वह व्यक्त और अव्यक्त स्वरूप से संसार को व्याप्त करके व्यवस्थित रहती है | दूसरे मनीषी गण उसे परा, प्रकृति, माया, ब्राह्मी, विद्या, अविद्या इत्यादि नामों से पुकारते हैं | प्रकृति, पुरुष और काल, यह विधि और स्थिति हैं | सृष्टि, स्थिति और विनाश के यही मूल कारण हैं | वह देव परम शुद्ध है, सत्वादि गुणों के भेद से तीन प्रकार के देवताओं का स्वरूप धारण करता है | सृष्टि, स्थिति और अंत का कारण है, अंतर्यामी है, संसार में व्याप्त होता है | सबों का साक्षी है, निरंजन है और अविनाशी है | भिन्न और अभिन्न स्वरूप से वह परमेश्वर स्थित रहता है |

परमात्मा परानन्दः सर्वोपाधिविवर्जितः |
ज्ञानैकवेद्यः परमः सच्चिदानन्दविग्रहः ||०६||
नारायणेति कृष्णेति वासुदेवेति यो वदेत् |
अहिंसादिपरः शान्तः सोऽपि वन्द्यः सुरोत्तमैः ||०७||
शिवेति नीलकण्ठेति शङ्करेति च यः स्मरेत् |
सर्वभूतहितो नित्यं सोऽपि वन्द्यः सुरोत्तमैः ||०८||
वेदार्थश्रवणे बुद्धिः पुराणश्रवणे तथा |
सत्सङ्गेऽपि च यस्यास्ति सोऽपि वन्द्यः सुरोत्तमैः ||०९||
गुरुभक्तः शिवध्यानी स्वाश्रमाचारतत्परः |
पवित्रात्मा शुचिर्दक्षो यः स वन्द्यः सुरोत्तमैः ||१०||

परमात्मा परमानन्दस्वरूप है, सभी उपाधियों से वर्जित है | केवल ज्ञान के द्वारा ही वह जाना जा सकता है तथा सत्, चित्, आनन्द से संयुक्त है | कृष्ण, नारायण, वासुदेव, इस प्रकार से जो कहता है, अहिंसा आदि से युक्त है, शांत है, वह व्यक्ति देवताओं के द्वारा भी वन्दनीय है | शिव, नीलकंठ, शंकर इत्यादि नामों का जो स्मरण करता है और सभी प्राणियों के हित में नित्य लगा रहता है, वह देवताओं के द्वारा भी वन्दनीय है | वेदार्थ के श्रवण में जिसकी बुद्धि है तथा पुराण के श्रवण में जो लगा रहता है, सत्संग में भी जिसकी बुद्धि लगी रहती है वह देवताओं के द्वारा भी वन्दनीय है | जो गुरुभक्त है, शिव का ध्यान करता है, अपने आश्रम के आचार में तत्पर रहता है, पवित्रात्मा है, पवित्रता में जो निपुण है, वह देवताओं के द्वारा वन्दनीय है |

अभेददर्शी देवेशे नारायणशिवात्मके |
अपरिग्रहशीलश्च देवपूज्यो नरो भवेत् ||११||

सम्प्राप्य भारते जन्म शुभकर्मपराङ्मुखः |
पीयूषकलशं त्यक्त्वा विषभाण्डमुपाश्रितः ||१२||
शुभं कर्म समुत्सृज्य दुष्कर्माणि करोति यः |
कामधेनुं परित्यज्य खरीक्षीरं स याचते ||१३||
कर्मयोनिं समासाद्य यो न धर्मं समाचरेत् |
स च सर्वाधमः प्रोक्तो निगमागमपारगैः ||१४||

जो नारायण और शिव नाम वाले देवताओं में अभेद दर्शन करता है, अपरिग्रह से युक्त है, ऐसा व्यक्ति देवताओं के द्वारा पूजनीय होता है | भारत में जन्म लेकर जो शुभ कर्म से विमुख हो गया है, वह वैसा ही है जैसे कोई व्यक्ति अमृत कलश को छोड़कर विष के बर्तन का आश्रय ग्रहण करे | शुभ कर्मों को छोड़कर जो दुष्कर्म करता है, वह वैसा ही है जैसे कोई कामधेनु को छोड़कर गधी के दूध की याचना करे | कर्मयोनि अर्थात् मनुष्ययोनि को प्राप्त करके जो व्यक्ति धर्म का आचरण नहीं करता, वेद और तन्त्र को जानने वालों के द्वारा उसे सबसे अधम कहा गया है |

निष्कामो वा सकामो वा कुर्यात्कर्म यथाविधि |
स्वाश्रमाचारशून्यश्च पतितः प्रोच्यते बुधैः ||१५||
वेदोदितानि कर्माणि करोतीश्वरतुष्टये |
यथाश्रमं त्यक्तुकामो लभते पदमव्ययम् ||१६||
आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरुत्पत्तिकारकाः |
निष्कामकर्मकर्ता यः स प्राप्नोति परं पदम् ||१७||
विष्णुर्विधाता त्रिपुरान्तकश्च त्रयः परब्रह्मप्रकाशदेहाः |
व्याप्तं हि तैरेव विचित्रविश्वं तान्देवदेवान्प्रणमेन्मनुष्यः ||१८||

निष्काम हो अथवा सकाम हो, जैसा शास्त्रों में बताया गया है, उसी प्रकार से कर्म करे | अपने आश्रम के आचार से शून्य होकर व्यक्ति बुद्धिमानों के द्वारा 'पतित', नाम से पुकारा जाता है | वेद में जो कर्म कहे गए हैं, उनका जो ईश्वर की तुष्टि के लिए क्रियान्वयन करता है, कामनाओं का परित्याग करके अपने आश्रम के आचार का पालन करता है, वह अव्यय पद को प्राप्त करता है | ब्रह्मलोक तक के सभी लोक पुनर्जन्म के कारक हैं, जो निष्काम कर्म करने वाला है वही व्यक्ति परमपद को प्राप्त करता है | विष्णु, विधाता और त्रिपुरासुर का अंत करने वाले शिव, ये तीनों परब्रह्म के व्यक्त देह हैं, प्रकाशित शरीर हैं | इन्हीं तीनों के द्वारा ये विचित्र विश्व व्याप्त है, इन देवदेवों को मनुष्य प्रणाम करे |

सर्वेषामेव भक्तानामिष्टस्तस्य प्रियस्तथा |
यो हि ज्ञानेन तं नित्यमाराधयति नान्यथा ||१९||
ज्ञानेन तदभिन्नेन परिज्ञातेन निश्चयः |
जायते ब्रह्मसंसक्तिस्तस्माज्ज्ञानं समभ्यसेत् ||२०||
वेदस्वाध्यायनं यज्ञं दानानि विविधानि च |
तदर्पणधिया कुर्यात्स तद्भक्तश्च तत्प्रियः ||२१||
न विना ज्ञानविज्ञानं मोक्षस्याधिगमो भवेत् |
न विना गुरुसम्बन्धाज्ज्ञानस्याधिगमस्तथा ||२२||

सभी भक्तों में उनका (परमात्मा का) वही प्रिय है, वही इष्ट है, जो ज्ञान के द्वारा सदैव उनकी आराधना करता है, अन्य उपाय से नहीं | अभिन्न बुद्धि से, ज्ञान के माध्यम से और निश्चय पूर्वक उनका बोध हो जाने से ब्रह्म में आसक्ति या संरक्ति उत्पन्न हो जाती है, इसलिए ज्ञान का सम्यक् प्रकार से अभ्यास करना चाहिए | वेद का स्वाध्याय, यज्ञ और विविध प्रकार का दान उनके (परमात्मा के) प्रति अर्पण

बुद्धि से जो करता है, ऐसा ही भक्त उन्हें प्रिय होता है | ज्ञान और विज्ञान के बिना मोक्ष का अधिगम प्राप्त नहीं होता और गुरु के सम्बन्ध के बिना ज्ञान का अधिगम प्राप्त नहीं होता |

अनुच्छेदाय लोकानामनुच्छेदाय कर्मणाम् |
कृत्वा शुभाशुभं कर्म मोक्षो नात्रेह लभ्यते ||२३||
राजसांस्तामसांश्चैव नित्यं दोषान्विसर्जयेत् |
सात्त्विकं मार्गमास्थाय पश्येदात्मानमात्मना ||२४||
सर्वभूतेषु चात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि |
सम्पश्यन्नैव लिप्येत वारिमध्ये झषो यथा ||२५||
न बिभेति परो यस्मान्न बिभेति पराच्च यः |
यश्च नेच्छति न द्वेष्टि ब्रह्म सम्पद्यते नरः ||२६||

लोकों से विरक्ति के लिए, कर्मपाश से विरक्ति के लिए, शुभ और अशुभ कर्म को करके यहां पर व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकता अर्थात् लोकों के अनुच्छेद के लिए और कर्मों के अनुच्छेद के लिए व्यक्ति यदि शुभ और अशुभ कर्म करता रहे तो मोक्ष को प्राप्त नहीं होता | राजस और तामस इत्यादि दोषों का हमेशा त्याग करे और सात्विक मार्ग में स्थित होकर अपने आत्मा के ही द्वारा आत्मतत्त्व का दर्शन करे | जो व्यक्ति सभी प्राणियों में अपने आपको और अपने में सभी प्राणियों को देखता है, वह उसी प्रकार से संसार में लिप्त नहीं होता जिस प्रकार से जल में रहते हुए मछली जल से प्रभावित नहीं होती अर्थात् जल में डूबती नहीं है | जो व्यक्ति दूसरे से नहीं डरता है और जिस व्यक्ति से कोई अन्य भी नहीं डरता है, जो किसी प्रकार की इच्छा या द्वेष नहीं रखता, ऐसा ही व्यक्ति ब्रह्म का सम्पादन करता है |

संयोज्य तपसात्मानमीर्ष्यामुत्सृज्य मोहिनीम् |
त्यक्त्वा लोभञ्च कामञ्च ततो ब्रह्मत्वमश्नुते ||२७||
यदा निन्दां स्तुतिं वापि समानत्वेन पश्यति |
समो भवति निर्द्वन्द्वो ब्रह्म सम्पद्यते तदा ||२८||
नास्ति ज्ञानसमं दानं नास्त्यज्ञानसमं भयम् |
नास्ति ज्ञानसमं चक्षुर्नास्ति त्यागसमं सुखम् ||२९||
सर्वः सर्वं न जानाति सर्वज्ञो नास्ति कश्चन |
नैकत्र परिनिष्ठास्ति ज्ञानस्य पुरुषे क्वचित् ||३०||

अपने आपको तपस्या से संयोजित करके और मोहित करने वाली ईर्ष्या को त्याग कर, मोह और काम का परित्याग करके, व्यक्ति ब्रह्मपद का उपभोग करता है | जो व्यक्ति समान भाव से निंदा एवं स्तुति का दर्शन करता है और समभाव का पालन करता है, वह निर्द्वंद्व हो जाता है, तभी ब्रह्म का संपादन हो जाता है और ब्रह्म को प्राप्त हो जाता है | ज्ञान के समान दान नहीं है और अज्ञान के समान भय नहीं है | ज्ञान के समान नेत्र नहीं हैं, त्याग के समान सुख नहीं है | कोई भी व्यक्ति यहां पर सब कुछ नहीं जानता है, कोई भी व्यक्ति सर्वज्ञ नहीं है, क्योंकि ज्ञान में किसी भी व्यक्ति की एकत्र परिनिष्ठा नहीं है |

जपयज्ञसहस्रेभ्यो ध्यानयज्ञो विशिष्यते |
ध्यानयज्ञात्परो नास्ति ध्यानं ज्ञानस्य साधनम् ||३१||
नास्ति ज्ञानसमो दीपः सर्वान्धस्य विनाशने |
स्वर्गे भूमौ च पाताले क्षेत्रे क्षेत्रेऽनुभूयते ||३२||
देहमध्ये स्थितं ज्ञानं न जानन्ति कुबुद्धयः |

ज्ञानस्थानं प्रवक्ष्यामि यस्माज्ज्ञानं प्रजायते ||३३||
प्राणिनां हृदये नित्यं निहितञ्च तिरोहितम् |
तत्त्वमूलमिदं ज्ञानं निर्मलं सर्वदर्शकम् ||३४||

हजारों जपयज्ञों से ध्यानयज्ञ विशेष बताया गया है | ध्यान यज्ञ से अधिक कुछ भी नहीं है क्योंकि ध्यान ही ज्ञान का साधन है | संसार में अन्धकार का विनाश करने के लिए ज्ञान के समान दीपक दूसरा नहीं है | यह ज्ञान स्वर्ग में, भूमि में और पाताल में क्षेत्र-क्षेत्र में अनुभूत होता है | कुबुद्धि वाले व्यक्ति इस देह के मध्य में स्थित ज्ञान को नहीं जानते | मैं ज्ञान के स्थान को कहता हूँ, जहाँ से ज्ञान उत्पन्न होता है | प्राणियों के हृदय में नित्य तिरोहित भाव से छिपे रूप में ज्ञान निहित होता है, यह ज्ञान ही तत्त्व का मूल है, निर्मल है और सब कुछ दिखाने वाला है |

मैत्री नैव प्रकर्तव्या वैरं दूरे परित्यजेत् |
निःसङ्गो निःस्पृहो भूत्वा एकान्तस्थानमाश्रितः ||३५||
एकध्यानस्थितो योगी त्रैलोक्ये यद्भविष्यति |
सर्वप्रकाशको ज्ञानी सर्वदर्शी भविष्यति ||३६||

किसी भी व्यक्ति से अधिक मैत्री न करे, वैर को तो दूर से ही छोड़ दे | निस्संग और निस्पृह होकर एकांत स्थान का आश्रय लेकर रहे | एक तत्त्व में जो योगी ध्यान लगाता है, एकाग्र होकर ध्यान में स्थित रहता है, जो व्यक्ति भी त्रिलोक में ऐसा होगा, सब कुछ प्रकाशित करने वाला वह ज्ञानी सब कुछ देखने वाला हो जाएगा |

संसर्गाज्जायते पापं संसर्गात्पुण्यमेव हि |
तस्माद्विवर्जयेद्योगी संसर्गमलपातकम् ||३७||

मरणे यादृशो भावः प्राणिनां परिजायते |
तादृशाः स्युस्तु जीवास्ते तद्रूपास्तत्परायणाः ||३८||
तीर्थं गुरुसमं नास्ति बन्धच्छेदकरं भुवि |
गुरुं विना भवाम्भोधेर्पारगन्ता न विद्यते ||३९||
कामबुद्धिमतिक्रम्य यावज्ज्ञानञ्च तिष्ठति |
ब्रह्मानुभूयते तावन्नात्र कार्या विचारणा ||४०||

संसर्ग से ही पाप होता है, संसर्ग से ही पुण्य भी उत्पन्न होता है, इसलिए योगी को चाहिए कि वह संसर्गजन्य मलरूपी पातक का विसर्जन कर दे | मृत्यु के समय प्राणियों का जैसा-जैसा भाव उत्पन्न होता है, वैसा ही वैसा स्वरूप, वैसा ही वैसा भाव लेकर जीव आगे वैसे ही रूपों को धारण करता है | गुरु के समान बंधन का छेदन करने वाले, बंधन को काटने वाले तीर्थ नहीं हैं | गुरु के बिना इस संसाररूपी समुद्र को पार करने वाला व्यक्ति उपलब्ध नहीं है | इसलिए कामनाओं का अति-क्रमण करके जबतक ज्ञान स्थित रहता है, तभी तक ब्रह्म का अनुभव होता है | इसमें और कोई अन्य विचार नहीं करना चाहिए |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायां षष्ठः पटलः ||
| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में षष्ठ पटल हुआ |

अथ सप्तमः पटलः

निग्रह उवाच

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि नृणां कार्यार्थसिद्धये |
येन मन्त्रेण भावेन कुर्यान्नित्यक्रियां द्विजः ||०१||
ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय प्रणम्य शिरसा विभुम् |
हरिञ्च सर्वलोकेशं मन्त्रमेनमुदीरयेत् ||०२||
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुडध्वज |
त्वयि सुप्ते जगत्सुप्तमुत्थिते चोत्थितं जगत् ||०३||

निग्रहाचार्य ने कहा - लोगों के कार्य की सिद्धि के लिए जिन मन्त्र और भाव के माध्यम से द्विजातीय जन अपनी नित्यक्रिया को करें, अब मैं उनको कहता हूँ | ब्राह्ममुहूर्त में उठकर मस्तक से भगवान हरि को प्रणाम करके, जो सभी लोकों के स्वामी हैं, इस मन्त्र को बोले - हे गोविंद आप उठ जाएँ ! आप उठ जाएँ ! हे गरुड़ध्वज ! आप उठ जाएँ ! आपके सोए रहने पर सारा संसार सोया रहता है, आपके जगने पर संसार भी जग जाता है |

शैवः शाक्तोऽथवा सौरो नाथो वैनायकोऽपि वा |
कौमारो हनुमद्भक्तो मन्त्रानेतानुदीरयेत् ||०४||
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ भूतेश उत्तिष्ठ गिरिजापते |
त्वयि सुप्ते जगत्सुप्तमुत्थिते चोत्थितं जगत् ||०५||
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश्युत्तिष्ठ हे महिषान्तके |
त्वयि सुप्ते जगत्सुप्तमुत्थिते चोत्थितं जगत् ||०६||

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ मार्त्तण्ड दीप्तांशो तिमिरान्तक |
त्वयि सुप्ते जगत्सुप्तमुत्थिते चोत्थितं जगत् ||०७||
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ नाथादिमीनगोरक्षविग्रह |
त्वयि सुप्ते जगत्सुप्तमुत्थिते चोत्थितं जगत् ||०८||
उत्तिष्ठ लम्बोदर दीर्घकर्णैकदन्त सिद्धिप्रद चाग्रपूज्य |
आखुस्थितोत्तिष्ठ महागणेश त्वया विना विश्वमिदं प्रसुप्तम् ||०९||
उत्तिष्ठ कृत्तिकासूनो देवसेनापते गुह |
त्वयि सुप्ते जगत्सुप्तमुत्थिते चोत्थितं जगत् ||१०||
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ वज्राङ्ग कपीश हनुमत्प्रभो |
त्वयि सुप्ते जगत्सुप्तमुत्थिते चोत्थितं जगत् ||११||

जो व्यक्ति भगवान शिव का भक्त हो अथवा शाक्त हो, सूर्य का उपासक हो, नाथ सम्प्रदाय से हो, गणेश जी का उपासक हो, कुमार कार्तिकेय का आराधक हो, या हनुमान् जी का भक्त हो, वह इन निम्न मंत्रों का उच्चारण करें – हे भूतों के स्वामी आप उठ जाएँ ! आप उठ जाएँ ! हे गिरिजापति ! आप उठ जाएँ ! आपके सोए रहने पर संसार सो जाता है, आपके उठने पर संसार भी उठ जाता है | हे देवी ! आप उठ जाएँ ! आप जग जाएँ ! हे महिषासुर का अंत करने वाली ! आप उठ जाएँ ! आपके सोए रहने पर संसार सो जाता है और आपके उठने पर संसार भी उठ जाता है | हे मार्तण्ड ! आप उठ जाएँ ! हे प्रदीप रश्मि वाले ! आप उठ जाएँ हे अंधकार का नाश करने वाले आप उठ जाएँ ! आपके सोए रहने पर संसार सोया रहता है, आपके उठने पर संसार भी उठ जाता है | हे श्रीनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, गोरक्षनाथ, इत्यादि स्वरूपों को धारण करने वाले ! आप उठ जाएँ ! आप उठ जाएँ आपके सोए रहने पर संसार सोया रहता है, आपके जागने पर संसार भी जग जाता है | हे लम्बोदर ! आप उठ जाएँ | दीर्घकर्ण ! एकदन्त ! सिद्धियों को देने वाले !

अग्रपूज्य ! मूषक पर स्थित महागणेश ! आप उठ जाएँ | आपके बिना यह विश्व सोया हुआ रहता है । हे कृत्तिकाओं के पुत्र ! हे देवताओं के सेनापति ! हे गुह ! आप उठ जाएं, आपके सोने पर संसार सोया रहता है, आपके जगने पर संसार जग जाता है | हे वज्र के समान दृढ अङ्गों वाले ! कपियों के स्वामी ! हे प्रभु हनुमान् ! आप उठ जाएं, उठ जाएं | आपके सोये रहने पर संसार सोया रहता है, आपके उठने पर संसार भी उठ जाता है |

ततो हस्तौ समानीय मुक्तपङ्कजसन्निभौ |
दृष्ट्वा पाणितलौ ध्यायेद्ब्रह्मलक्ष्मीसरस्वतीः ||१२||
कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती |
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम् ||१३||
एवमुक्त्वा तथा शय्यां त्यक्त्वा नत्वा वसुन्धराम् |
पादस्पर्शापराधार्थं भूम्या वै क्षामयेद्बुधः ||१४||
समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डले |
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ||१५||

उसके बाद दोनों हाथों को विकसित कमल के समान अपने सामने लाकर हथेलियों में ब्रह्मा, लक्ष्मी और सरस्वती का ध्यान करें | हाथों के अग्रभाग में लक्ष्मी निवास करती हैं, हाथ के मध्य में सरस्वती और हाथ के मूल में ब्रह्मा स्थित हैं, इसीलिए प्रातःकाल में हाथों का दर्शन करना चाहिए | इस प्रकार से कह कर अपनी शय्या को छोड़कर, पृथ्वी को प्रणाम करके अपने पैरों के स्पर्श के अपराध के लिए बुद्धिमान् व्यक्ति भूमि से क्षमा याचना करे | हे समुद्ररूपी वस्त्र को धारण करने वाली देवी ! हे पर्वतरूपी स्तनमंडल वाली देवी ! हे भगवान् विष्णु की पत्नी ! आपके लिए प्रणाम है, आप मेरे चरणस्पर्श से होने वाले अपराध को क्षमा करें |

त्यागाय मलमूत्राणां क्रियार्थं दन्तधावनम् |
क्षौरकर्मक्रियानिष्ठ उच्चरेन्निम्नमन्त्रकान् ||१६||
गच्छन्तु ऋषयो देवाः पिशाचा ये च गुह्यकाः |
पितृभूतगणाः सर्वे करिष्ये मलमोचनम् ||१७||
आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजा पशुवसूनि च |
ब्रह्मप्रज्ञाञ्च मेधाञ्च त्वन्नो देहि वनस्पते ||१८||
यन्मे केशेषु दौर्भाग्यं सीमन्ते यच्च मूर्द्धनि |
कूर्चश्मश्रुगतं पापं तं क्षुरेण निवर्तये ||१९||

मलमूत्रों के त्याग लिए या दन्तधावन (मुंह धोने) के लिए या क्षौरकर्म क्रिया करने के लिए निम्न मंत्रों का उच्चारण करें – ऋषि, पिशाच, देवता और जो गुह्यकगण हैं, पितृगण, भूतगण हैं, वे यहाँ से चले जाएँ, क्योंकि यहाँ मैं मल का परित्याग करूँगा | हे वनस्पते ! आप हमें आयु, बल, यश, तेज, प्रजा, पशु, धन, ब्रह्मप्रज्ञा और मेधा यह सब दें | जो भी मेरे केशों में दुर्भाग्य है, जो मेरे मूर्द्धा और सीमन्त भाग में है और भी जो मेरे दाढ़ीमूँछ में पाप निवास करता है, मैं इस छुरे के द्वारा उसे हटाता हूँ |

गत्वा कूपं तडागं वा सागरं वा महानदीम् |
गङ्गायाः स्मरणं कृत्वा स्नानशुद्धिं समाचरेत् ||२०||
गङ्गे त्रिपथगे देवि शम्भुमौलिविहारिणि |
जाह्नवि पापहन्त्रि त्वं ममाशौचं निवारय ||२१||
अमृतस्यारणिस्त्वं हि देवयोनिरपां पते |
वृजिनं हर मे सर्वं तीर्थराज नमोऽस्तुते ||२२||

इसके बाद कुएँ में, तालाब में, नदी में, या सागर में जाकर गंगा जी का स्मरण करके स्नान-शुद्धि का आचरण करे | हे गंगे ! तीनों लोकों में विचरण करने वाली ! हे शम्भु की जटाओं में विहार करने वाली, हे जह्नुपुत्री जाह्नवी ! हे पापों का हरण करने वाली ! मेरी अशुद्धि को दूर करें | हे देवस्वरूप ! हे जल के स्वामी ! आप अमृत की उत्पत्ति के स्थान हैं | हे तीर्थराज ! आपको हमारा नमस्कार है, आप मेरे सभी पापों को हरण करें |

वेणी प्रोक्ता तु नारीणां पुरुषाणां शिखा स्मृता |
मन्त्रद्वयं प्रवक्ष्यामि तयोर्बन्धनहेतवे ||२३||
देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम् |
जूटिके पाशसम्बद्धे रूपवृद्धिं कुरुष्व मे ||२४||
ब्रह्मनादसहस्रेण रुद्रनादशतेन च |
विष्णोर्नादसहस्रेण शिखाबन्धं करोम्यहम् ||२५||
चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजःसमन्विते |
तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ||२६||

स्त्रियों के लिए वेणी और पुरुषों के लिए शिखा कही गई है | इन दोनों के बन्धन के लिए दो मंत्र बता रहा हूँ | मुझे सौभाग्य और आरोग्य प्रदान करें, परम सुख प्रदान करें, हे जूडे ! तुम पाश (रस्सी) से बंधी होकर मेरी शुद्धि करो | ब्रह्मा के हजारों नादों से, शिव के सैकड़ों नादों से और विष्णु के हजारों नादों से मैं शिखा का बन्धन करता हूँ | हे चिद्रूपिणि ! हे महामाया ! हे दिव्य तेजसंयुक्ता देवि ! आप मेरे शिखा के मध्य स्थित होकर मेरी तेज की वृद्धि करें |

गायत्र्या वा शिखाबन्धं कुर्युस्तस्यास्तु जापकाः |
शिखामोचनकं मन्त्रं पठित्वा मोचयेच्छिखाम् ||२७||
ब्रह्मपाशसहस्रेण रुद्रशूलशतेन च |
विष्णोश्चक्रसहस्रेण शिखामुक्तिं करोम्यहम् ||२८||
गच्छन्तु सकला देवा ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः |
तिष्ठत्वत्राचला लक्ष्मीः शिखामुक्तं करोम्यहम् ||२९||
जपे स्नाने तथा दाने होमे वा पितृपूजने |
स्वाध्यायाध्यापने काले न शिखां मोचयेत्पुमान् ||३०||
सम्भोगे वा मलत्यागे शयने भोजने तथा |
रोगेऽशौचे सदा मुक्ता शिखा प्रोक्ता मनीषिभिः ||३१||

अथवा गायत्रीमन्त्र के जापक गायत्री से शिखा का बन्धन करें, शिखामोचन का मन्त्र पढ़कर शिखा को मुक्त करें | ब्रह्मा के हजारों पाशों से, रुद्र के सैकड़ों शूलों से और विष्णु के हजारों चक्रों से शिखा को मुक्त करता हूँ | सभी देवता, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर आदि यहां से चले जाएँ | केवल अचला लक्ष्मी की यहां स्थिति रहे, मैं शिखा को मुक्त करता हूँ | जप में, हवन में, दान में, यज्ञ में, पितरों के पूजन में, स्वाध्याय में, अध्यापन काल में व्यक्ति शिखा को मुक्त नहीं करे | सम्भोग में, मलत्याग में, शयन में, भोजन में, रोग में और अशुद्धि में मनीषियों के द्वारा सदा शिखा मुक्त कही गई है |

सौभाग्यसंयुता नारी सिन्दूरसमलङ्कृता |
पुमाञ्चन्दनसंलिप्तो देववद्राजते सदा ||३२||
सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम् |

शुभदङ्कामदञ्चैव सीमन्ते धारयाम्यहम् ||३३||
चन्दनं वन्द्यते नित्यं पवित्रं पापनाशनम् |
आपदां हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसति सर्वदा ||३४||

सौभाग्यवती नारी सिन्दूर से अलंकृत रहे और पुरुष चन्दन से युक्त रहे, तो वह देवताओं के समान सुशोभित होता है | सिन्दूर शोभन और लाल वर्ण का है, सुख और सौभाग्य बढ़ाने वाला है, शुभ कामनाओं को प्रदान करने वाला है, इसलिए मैं इसे अपनी माँग में धारण करती हूँ | चन्दन प्रतिदिन वन्दनीय है, पवित्र है, पापों का नाश करने वाला है, आपत्तियों का निवारण करता है और इसमें सदैव लक्ष्मी का वास है |

सिन्दूरञ्चन्दनं वापि एवमुच्चार्य धारयेत् |
अर्घ्यं सूर्याय वै दद्याततो लोकहितैषिणे ||३५||
एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते |
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ||३६||
त्रिगायत्र्याथवा स्मृत्वाधिकारी सन्निवेदयेत् |
ताम्रपात्रे जलं गन्धं पुष्पं भक्त्या नियोजयेत् ||३७||
प्रातःकाले तथा सायंकालेऽर्घ्यं रवये श्रणेत् |
एवं कृत्वा नरः सद्यो मुच्यते सर्वपातकात् ||३८||

सिन्दूर और चन्दन को इसी प्रकार से उच्चारण करके धारण करे, फिर समस्त लोक के हित की इच्छा रखने वाले भगवान् सूर्य के लिए अर्घ्य दान करे | हे सूर्य ! हे हजारों किरणों से युक्त ! हे तेजोराशि ! हे संसार के स्वामी ! हे दिवाकर ! आप मेरे ऊपर कृपा करें और मेरे द्वारा भक्तिपूर्वक दिए जाने वाले इस अर्घ्य को आप ग्रहण

करें | जो गायत्री का अधिकारी है, वह तीन बार गायत्री पढ़कर सूर्य को अर्घ्य दे | ताम्रपात्र में जल, गन्ध, पुष्प इत्यादि भक्ति के द्वारा नियोजित करे | प्रातःकाल तथा सायंकाल में सूर्य के लिए अर्घ्य दान करे, ऐसा करके व्यक्ति तुरंत ही सभी पातकों से मुक्त हो जाता है |

ततो विप्राय गुरवे याचकाय महामतिः |
यथाशक्तिस्तथा दानं दद्यात्धर्मानुपालकः ||३९||
दक्षिणासम्प्रदाने तु सर्वदोषो विनश्यति |
दानेन दह्यते पापं तस्माद्दानं ददाम्यहम् ||४०||

फिर धर्म का पालन करने वाला महामति व्यक्ति अपनी शक्ति के अनुसार ब्राह्मण के लिए, गुरु के लिए और याचकों के लिए दान करे | दक्षिणा प्रदान करने से सभी प्रकार के दोषों का नाश होता है | दान पाप का दहन करता है, इसलिए मैं दान देता हूँ |

ततः स्वशाखामाश्रित्य स्वाध्यायं प्रपठेद्द्विजः |
इतिहासपुराणानामागमानां विशेषतः ||४१||
सरस्वति महाभागे विद्ये कमललोचने |
विश्वरूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तु ते ||४२||

फिर अपनी शाखा का आश्रय लेकर ब्राह्मण स्वाध्याय का पाठ करे | इतिहास, पुराण और आगमों को विशेषरूप से पढ़े | हे सरस्वती ! हे महाभागे ! हे विद्या ! हे कमल के समान नेत्र वाली ! हे विश्वरूपे ! हे विशाल नेत्रों वाली ! आप मुझे विद्या प्रदान करें, मैं आपको प्रणाम करता हूँ |

अतिथीन्बालकान्भृत्यान्वृद्धान्कन्याः सुवासिनीम् |
भोजयित्वा ततः स्निग्धं भोजनं भोजयेद्बुधः ||४३||
त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये |
गृहाण सुमुखो भूत्वा प्रसीद परमेश्वर ||४४||

बुद्धिमान् व्यक्ति अतिथि, बालक, सेवक, वृद्ध, कन्या और सुवासिनी स्त्रियों को भोजन कराकर फिर स्वयं मधुर भोजन ग्रहण करे | हे गोविन्द ! ये आपकी ही वस्तु है, आपको ही समर्पित करता हूँ, आप सुमुख (प्रसन्न मुख होकर) इसे ग्रहण करें | हे परमेश्वर ! अप प्रसन्न हों |

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् |
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना ||४५||
मैथुने दन्तशुद्धौ च त्यागे मूत्रपुरीषयोः |
भोजने च जपे स्नाने षड्सु मौनं समाचरेत् ||४६||

ब्रह्म को मैं अर्पण करता हूँ, ब्रह्म ही हवि है, ब्रह्मरूपी अग्नि में ब्रह्म के द्वारा ही द्वारा हवन किया जाता है और वह ब्रह्म के प्रति गमन करता है | इस प्रकार से समाधि के द्वारा ब्रह्म-कर्म किया जाता है | मैथुन में, दांत साफ करने में, मल-मूत्र त्यागने में, भोजन में, जपकाल में, स्नान में इन छः कार्यों में व्यक्ति को मौन धारण करना चाहिए |

कदाचिद्रोगसंयुक्तो महाविष्णुं सदा स्मरेत् |
मृत्युञ्जयं महाकालीं धन्वतरिणमश्विनौ ||४७||
अच्युतानन्तगोविन्दनामोच्चारणभेषजात् |
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ||४८||

कभी यदि रोग से युक्त हो तो भगवान महाविष्णु का निरन्तर स्मरण करे | मृत्युंजय, महाकाली, धन्वन्तरि और अश्विनीकुमारों का स्मरण करता रहे | अच्युत, अनन्त एवं गोविन्द, इन नामोच्चारण रूप औषधि से सभी प्रकार के रोगों का नाश होता है, ऐसा मैं सत्य सत्य कहता हूँ |

गार्हस्थ्यसाफल्यधिया मनुष्य उमामहेशौ भृगुजामुकुन्दौ |
नित्यं यजेत्कीर्तनपूर्वकं वा स्मरेच्च नामानि मनोहराणि ||४९||
श्रीवत्सधारिन् श्रीकान्त श्रीधामन् श्रीपतेऽव्यय |
गार्हस्थ्यं मा प्रणाशं मे यातु धर्मार्थकामदम् ||५०||

अपने गृहस्थ धर्म के सफलता की कामना वाला व्यक्ति उमा और महेश, लक्ष्मी और नारायण का नित्य कीर्तन पूर्वक पूजन करे अथवा उनके मनोहर नामों का स्मरण करे | हे श्रीवत्स के चिन्ह को धारण करने वाले ! हे लक्ष्मीपति ! हे लक्ष्मी-निवास ! हे लक्ष्मी के स्वामी ! हे अव्यय ! (कभी विनाश को प्राप्त न होने वाले) मेरे गृहस्थाश्रम का कभी नाश न हो | यह गृहस्थाश्रम मुझे धर्म, अर्थ और काम की सिद्धि कराने वाला बने |

संसाराजगरं ज्ञात्वा यो वैराग्यमुपासते |
औदासीन्यं समाधिञ्च सुखं शेते हि मानवः ||५१||
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्याद्यवस्थायां रमते सदा |
विश्वतैजसप्राज्ञाख्यञ्चेतनं तं नमाम्यहम् ||५२||

संसाररूपी अजगर को जानकर, जो वैराग्य का आश्रय लेता है और सभी भावों के प्रति उदासीन रहता है, जो समाधि का आश्रय लेता है, वही मानव सुखपूर्वक

सोता (जीवन का उपभोग करता) है | जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति आदि अवस्थाओं में जो सदा रमण करता है, उस विश्व, तैजस एवं प्राज्ञ नाम वाले चेतन को मैं प्रणाम करता हूँ |

यत्करोति यदश्नाति यज्जुहोति ददाति यत् |
विष्णवे योजतेत्सर्वं यस्माद्वै स परा गतिः ||५३||
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा निजधर्मवृत्या |
करोति सर्वं हरयेऽर्पयेत्स क्रियाप्रवृत्तिं हरते जनस्य ||५४||
समन्त्रकं सदा कर्म कुरुते यो नरर्षभः |
सर्वान्कामानवाप्नोति ब्रह्मलोके महीयते ||५५||

व्यक्ति जो भी करता है, जो भी खाता है, जो भी हवन करता है, जो भी दान करता है, उन सभी कर्मों को भगवान् विष्णु में ही योजित कर दे, क्योंकि वही परमगति हैं | शरीर के द्वारा, वाणी के द्वारा, मन के द्वारा, बुद्धि के द्वारा, स्वार्थ के द्वारा अथवा स्वधर्म के पालन करने के अन्तर्गत व्यक्ति जो भी कर्म करता है, उसे विष्णु भगवान् को ही अर्पित कर दे क्योंकि वही क्रियाप्रवृत्ति और कर्मपाश का हरण करते हैं | इस प्रकार से जो श्रेष्ठ मनुष्य प्रत्येक कर्म को मन्त्रपूर्वक करता है, वह व्यक्ति समस्त मनोकामनाओं को प्राप्त कर ब्रह्मलोक में प्रतिष्ठित होता है |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायां सप्तमः पटलः ||
| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में सप्तम पटल हुआ |

अथाष्टमः पटलः

निग्रह उवाच

जीवात्मनः प्रवेशश्च नियन्तृत्वश्च तान्प्रति |
श्रूयते यस्य वेदेषु तद्ब्रह्मेत्यवधारय ||०१||
सृष्टेः पूर्वं महानादः सुव्यक्तः शब्दलक्षणः |
ओमोमिति पुराकाले बभूव प्लुतमानकः ||०२||
आद्यं वर्णमकाराख्यमुकारं चोत्तरं ततः |
मकारं मध्यतश्चैव नादमन्तेऽस्य चोमिति ||०३||
सूर्यमण्डलवद्दृष्टो वर्णमाद्यं तु दक्षिणे |
उत्तरे पावकप्रख्यमुकारञ्च महोज्ज्वलम् ||०४||
शीतांशुमण्डलप्रख्यं मकारं तस्य मध्यतः |
तस्योपरि महानासीच्छुद्धस्फटिकसुप्रभम् ||०५||

निग्रहाचार्य ने कहा - वेदों में जिसे जीवात्मा का प्रवेश स्थान और उन जीवात्माओं के प्रति नियंत्रण की शक्ति से युक्त बताया गया है, उसे ही ब्रह्म जानो | सृष्टि के पूर्व में अच्छे प्रकार से व्यक्त और शब्दायमान, जो प्लुत उच्चारण से युक्त था, वह विशाल शब्द महानाद – ॐ… ॐ… इस प्रकार से उत्पन्न हुआ | पहले अकार था, उसके बाद उकार हुआ, बीच में मकार था और अंत में नाद ध्वनि हुई, जिसे ओम कहते हैं | जो प्रथम वर्ण था वह अकार दक्षिण में सूर्यमण्डल के समान देखा गया और उत्तर में अग्नि के समान उकार देखा गया जो कि बहुत ही उज्जवल था | चंद्रमा के मंडल के समान बीच में मकार देखा गया और उसके ऊपर शुद्ध स्फटिक के समान प्रभा वाला महानाद देखा गया |

तुरीयातीतममलं निष्कलं निरुपद्रवम् |
निर्द्वंद्वं केवलं शून्यं बाह्याभ्यन्तरवर्जितम् ||०६||
आदिमध्यान्तरहितमानन्दस्यापिकारणम् |
सत्यमानन्दममृतं परं ब्रह्मपरायणम् ||०७||
एकाक्षरेण तद्वाक्यममृतं सर्वकारणम् |
आनन्दममृतं सत्यमतीतं परमाक्षरम् ||०८||
एकाक्षरादकाराख्याद्भगवान्कनकाण्डजः |
एकाक्षरादुकाराख्याद्धरिर्लोकेश्वरो विभुः ||०९||

यह तुरीय से भी अतीत है, निर्मल है, कलारहित है, उपद्रव रहित है, निर्द्वन्द्व है, एकमात्र है, शून्य है और बाह्य-आभ्यंतर भेदों से वर्जित है | इसका आदि नहीं, इसका मध्य नहीं, इसका अंत नहीं, यह आनन्द का भी कारण है | यह परब्रह्म का परायण होकर स्थित रहता है, सत्य-आनन्दरूपी और अमृतरूपी है | उस एकाक्षर वाक्य से ही सबों को उत्पन्न करने वाला अमृतत्व उद्भूत हुआ | आनन्द-अमृतरूपी, सत्य और सबों से अतीत परमाक्षर भी उत्पन्न हुआ | एकाक्षर के अकार को ही स्वर्ण-अण्ड से उत्पन्न ब्रह्मा भी कहते हैं | एकाक्षर के उकार से ही भगवान् विष्णु उत्पन्न हुए, जो सभी लोकों के पालक एवं स्वामी हैं |

एकाक्षरान्मकाराख्याद्भगवानन्धकान्तकः |
सर्गकर्ता त्वकाराख्यो ह्युकाराख्यस्तु मोहकः ||१०||
मकाराख्यस्तु यो नित्यमनुग्रहकरोऽभवत् |
मकाराख्यो विभुर्बीजी ह्यकारो बीज उच्यते ||११||

उकाराख्यो हरिर्योनिः प्रधानपुरुषेश्वरः |
बीजी च बीजं तद्योनिर्नादाख्यश्च महेश्वरः ||१२||
यः स्रष्टा सर्वलोकानां य एव त्रिविधः प्रभुः |
तस्याङ्गानि प्रवक्ष्यामि महापुरुषलक्षणैः ||१३||

एकाक्षर के मकार से ही अंधकासुर का अन्त करने वाले भगवान् शिव उत्पन्न हुए | अकार को उत्पत्तिकर्ता कहते हैं, उकार को मोहक कहते हैं और मकार नित्य अनुग्रह करने वाला हुआ | मकार बीजी है अर्थात् बीज का स्वामी है और अकार बीज कहलाता है, उकार प्रधान-पुरुष और सबों का ईश्वर विष्णुरूपी होता है | बीज और बीजी, दोनों का सम्मिलित रूप तथा योनि और नाद, दोनों के द्वारा भगवान् महेश्वर बोधित किये जाते हैं | जो सभी लोकों का स्रष्टा है, वह प्रभु तीन प्रकार का है | उसके अंगों को महापुरुष के लक्षणों के साथ बताता हूँ |

अकारस्तस्य मूर्द्धा हि ललाटो दीर्घ उच्यते |
इकारो दक्षिणं नेत्रमीकारो वामलोचनम् ||१४||
उकारो दक्षिणं श्रोत्रमूकारो वाम उच्यते |
ऋकारो दक्षिणं तस्य कपोलं परमेष्ठिनः ||१५||
वामं कपोलं दीर्घन्तु लृलॄ नासापुटे उभे |
एकारश्चोष्ठ ऊर्द्धश्च ह्यैकारस्त्वधरो विभोः ||१६||

मूर्धा अकार है, ललाट आकार है, इकार दक्षिण नेत्र है, ईकार वाम नेत्र है, उकार दक्षिण श्रोत्र है, ऊकार वाम श्रोत्र (कर्ण/कान) कहा जाता है | ऋकार उस परमेष्ठी का दक्षिण गाल है, बायाँ गाल ॠ (दीर्घ ऋकार) है | लृ और लॄ (दीर्घ लृकार) दोनों नासाछिद्र हैं | एकार ऊर्ध्व ओष्ठ है, ऐकार विभु का अधर है |

ओकारश्च तथौकारो दन्तपङ्क्तिद्वयं क्रमात् |
अमस्तु तालुनी तस्य देवदेवस्य शूलिनः ||१७||
कादिपञ्चाक्षराण्यस्य पञ्चहस्ताश्च दक्षिणे |
चादिपञ्चाक्षराण्येवं पञ्चहस्तास्तु वामतः ||१८||
टादिपञ्चाक्षरं पादास्तादिपञ्चाक्षरं तथा |
पकार उदरं तस्य फकारः पार्श्व उच्यते ||१९||
बकारो वामपार्श्वस्तु भकारः स्कन्ध उच्यते |
मकारो हृदयं शम्भोर्ब्रह्मणः परमेष्ठिनः ||२०||

ओकार एवं औकार उसके ऊपर और नीचे के दोनों क्रमपूर्वक दन्तपंक्तियाँ हैं | अंकार उस शूलधारी देवता के तालु हैं | कवर्गादि में जो पांच अक्षर हैं, ये उनके दाहिनी ओर के पांच हाथ हैं | चवर्गादि जो पांच अक्षर हैं वो बाईं ओर के पांच हाथ हैं | टवर्गादि पांच अक्षर उस परमेश्वर के दाहिनी ओर के पांच पैर हैं | तवर्गादि पांच अक्षर बायीं ओर के पांच पैर हैं | पकार उसका उदर है | फकार दाहिना पार्श्व कहा जाता है | बकार बायां पार्श्व एवं भकार कन्धा कहा जाता है | उस परमेष्ठी ब्रह्म शम्भु का मकार हृदय है |

यकारादिसकारान्ता विभोर्वै सप्तधातवः |
हकारो नाभिरूपो हि क्षकारो घ्राण उच्यते ||२१||
एवं शब्दमयं रूपमगुणस्य गुणात्मनः |
वर्णदेहगुणाकारं शब्दब्रह्मतनुं शिवम् ||२२||

य से लेकर स तक जो सात वर्ण हैं, ये उसकी सात धातुएँ रक्त, मज्जा, अस्थि इत्यादि हैं | हकार नाभिरूप है और क्षकार नासिका है | इस प्रकार से उस अगुण परब्रह्म का गुणात्मक शब्दमय वर्णदेह युक्त आकार बताया गया है और यही उस शिव का शब्द ब्रह्ममय शरीर है |

दुर्ज्ञेया वैष्णवी माया सर्वेषां प्राणिनामिह |
भक्तं विनार्पितात्मानं तया सम्मोह्यते जगत् ||२३||
दुर्ज्ञेया शाम्भवी माया सर्वेषां प्राणिनामिह |
भक्तं विनार्पितात्मानं तया सम्मोह्यते जगत् ||२४||
धन्या धन्या महामाया महामोहा जगत्प्रसू |
यया विना न पश्यन्ति मुनयो ब्रह्ममन्दिरम् ||२५||

सभी प्राणियों में जो वैष्णवी माया है, उसे जाना नहीं जा सकता | बिना अपने आप को समर्पित किए भक्त उसे नहीं जान सकता, उसी के द्वारा संसार भ्रमित होता है | इसी प्रकार शाम्भवी माया भी सभी प्राणियों में दुर्ज्ञेया है, उसे जाना नहीं जा सकता | भक्त जब तक अपने आप को समर्पित न करे तब तक उस माया के द्वारा जगत् सम्मोहित होता रहता है | संसार को उत्पन्न करने वाली और महान् मोह से ग्रस्त करने वाली यह महामाया धन्य है ... धन्य है, जिसके बिना मुनिगण ब्रह्म के स्थान को नहीं देख पाते |

प्रबला भाविनी कर्म गतिर्ज्ञेया विचक्षणैः |
न निवार्या जनैः कैश्चिदपीच्छा सैव शाङ्करी ||२६||
शिवेच्छा यादृशी लोके भवत्येव हि सा तदा |
तदधीनं जगत्सर्वं सदेवासुरमानुषम् ||२७||

बुद्धिमान जनों को, कर्म की गति प्रबल है, अवश्यम्भावी है, ऐसा जानना चाहिए | ये भगवान शंकर की इच्छा के द्वारा ही प्रेरित होती है और लोग इसका निवारण नहीं सकते हैं | जैसी संसार में शिव की इच्छा होती है, यह उसी प्रकार से हो जाती है | देवता, असुर और मनुष्यों से युक्त यह सम्पूर्ण जगत् उसी के अधीन है |

कृते धर्मश्चतुष्पादस्त्वधर्मः पादविग्रहः |
स्वधर्मनिरताः सर्वे जायन्ते तत्र मानवाः ||२८||
विप्राः स्थिता धर्मपरा राजवृत्तौ स्थिता नृपाः |
कृष्यामभिरता वैश्याः शूद्राः शुश्रूषणे रताः ||२९||
तदा सत्यं दया शौचं धर्मश्चैव विवर्धते |
सद्भिराचरितं कर्म क्रियते ख्यायते सदा ||३०||

सत्ययुग में धर्म चार चरणों से और अधर्म एक चरण से स्थित रहता है | वहाँ पर सभी मानव अपने अपने धर्म में रत रहते हैं | ब्राह्मण स्वधर्म में स्थित रहते हैं, राजागण राज्य आदि कार्य में स्थित रहते हैं, वैश्य इत्यादि कृषि में लगे रहते हैं और सेवा भाव में शूद्र निरत रहते हैं | उसके बाद सत्य, दया, पवित्रता, धर्म इत्यादि की वृद्धि होती है और सज्जनों के द्वारा किया गया स्वकर्म का आचरण और स्थापन होता है |

त्रेतायां सत्यसत्वौ च यान्ति दौर्बल्यमाश्रमाः |
द्वाभ्यामधर्मः पादाभ्यां त्रिभिर्धर्मो व्यवस्थितः ||३१||
द्वापरेऽर्थपराः सर्वे प्राणिनो रजसावृताः |
सर्वे नैष्कृतिकाः क्षुद्रा जायन्ते पापकारिणः ||३२||

त्रेता में सत्य और सत्व यह दोनों दुर्बलता को प्राप्त हो जाते हैं | दो चरणों से अधर्म और तीन चरणों से धर्म व्यवस्थित रहते हैं | द्वापर युग में सभी लोग रजोगुण से आवृत्त होकर अर्थ-परायण हो जाते हैं और सभी लोग क्षुद्रता एवं लघुता को तथा अकर्मण्यता को प्राप्त हो जाते हैं, साथ ही पापियों का उद्भव होने लगता है |

द्वाभ्यां धर्मः स्थितः पद्भ्यामधर्मस्त्रिभिरुत्थितः |
विपर्ययाच्छनैर्धर्मः क्षयमेति कलौ युगे ||३३||
यत्राधर्मश्चतुष्पादो धर्मः पादैकविग्रहः |
अहङ्कारगृहीताश्च जायन्ते तत्र मानवाः ||३४||

द्वापर युग में दो चरणों से धर्म और तीन चरणों से अधर्म स्थित रहता है और इसी प्रकार से धर्म क्षीण होते हुए कलियुग में विपरीत भाव को प्राप्त होता है | कलियुग में अधर्म चार चरणों से और धर्म एक चरण से स्थित रहता है | कलियुग में सभी मनुष्य अहंकार से ग्रस्त हो जाते हैं |

नैव वर्णाश्रमो नैव सत्यं दया वेदपाठी द्विजो नैव दानं क्षमा |
नैव सन्तोषयुक्तो यतिर्भूपतिर्नैव रक्षापरो दृश्यते दुष्कलौ ||३५||

कलियुग में वर्णाश्रम नहीं दिखता, सत्य नहीं दिखता, दया नहीं दिखती, वेदपाठी ब्राह्मण नहीं दिखते, दान और क्षमा नहीं दिखते, संतोष से युक्त संन्यासी नहीं दिखते और रक्षा करने वाला राजा भी इस दुष्कर कलियुग में नहीं दिखाई पड़ता |

वेदे तु विहितो धर्मः स्मृतौ तादृश एव च |
प्रवृत्तिलक्षणो धर्मो व्यवहारविदो विदुः ||३६||

जिस प्रकार से वेद में धर्म बताया गया है, स्मृति में भी वैसा ही बताया गया है | धर्म प्रवृत्ति लक्षण से युक्त है, ऐसा व्यवहार को जाने वाले लोग कहते हैं |

श्रेयो धर्मः परे लोके लोकेऽपीह सुखप्रदः |
तस्मिन् समाश्रितः सत्सु पूज्यस्तेन सुखी भवेत् ||३७||

धर्म परलोक में भी कल्याण करता है और इस लोक में भी सुख देता है | उस पर आश्रित रहने वाला व्यक्ति ही सज्जनों में पूजनीय होता है और उसी के माध्यम से सुखी भी होता है |

देवा दैत्यास्तथा विद्याधरा गन्धर्वगुह्यकाः |
सिद्धाः किम्पुरुषाः पितृगणाः मानवराक्षसाः ||३८||
ऋषयश्च पिशाचाश्च ह्येता द्वादशयोनयः |
तासां नैसर्गिकं धर्मं प्रवक्ष्यामि निशामय ||३९||

देव, दैत्य तथा विद्याधर, गन्धर्व, गुह्यक, सिद्ध, किम्पुरुष, पितृगण, मनुष्य, राक्षस, ऋषि और पिशाच, यह १२ योनियां होती हैं, उनके नैसर्गिक धर्म को कहता हूँ ध्यानपूर्वक सुनो |

देवानां परमो धर्मः सदा यज्ञादिकाः क्रियाः |
स्वाध्यायवेदवेत्तृत्वं विष्णुपूजारतिः स्मृता ||४०||

देवताओं का परम धर्म है- सदा यज्ञादि क्रियाओं में लगे रहें, स्वाध्याय करें, वेद का ज्ञान रखें और भगवान् विष्णु की पूजा करें |

दैत्यानां बाहुशालित्वं मात्सर्यं युद्धसत्क्रिया |
वेदनं नीतिशास्त्राणां हरभक्तिरुदाहृता ||४१||

बाहुबल का प्रदर्शन करें, मात्सर्य करें, युद्ध इत्यादि में लगे रहें, नीति शास्त्रों को पीड़ा दें और भगवान् शिव की भक्ति करें यह दैत्यों का धर्म कहा गया है |

सिद्धानामुदितो धर्मो योगयुक्तिरनुत्तमा |
स्वाध्यायं ब्रह्मविज्ञानं भक्तिर्द्वाभ्यामपि स्थिरा ||४२||

सिद्धों का धर्म यह कहा गया है कि जो उत्तम योगयुक्ति है, उस में लगे रहें | स्वाध्याय करें, ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करें और भगवान् शिव और विष्णु दोनों में भक्ति रखें |

उत्कृष्टोपासनं ज्ञेयं नृत्यवाद्येषु वेदिता |
सरस्वत्यां स्थिरा भक्तिर्गान्धर्वो धर्म उच्यते ||४३||

गन्धर्वों का यह धर्म कहा गया है कि वे उत्कृष्ट कलाओं की आराधना करें | नृत्य और वाद्ययन्त्रों का ज्ञान रखें तथा सरस्वती देवी में स्थिर भक्ति रखें |

विद्याधरत्वमतुलं विज्ञानं पौरुषे मतिः |
विद्याधराणां धर्मोऽयं दुर्गायां भक्तिरेव च ||४४||
गन्धर्वविद्या वेदित्वं भक्तिर्भानौ तथा स्थिरा |
कौशल्यं सर्वशिल्पानां धर्मः किम्पुरुषः स्मृतः ||४५||

विद्याधरों का धर्म है विज्ञान की प्राप्ति और पुरुषत्व में मति रखें और दुर्गा देवी में भक्ति रखें | गन्धर्वों की सभी विद्याओं को जानना और सूर्य भगवान् की आराधना

करना, सभी शिल्प-कर्मों में अपनी कुशलता प्रकाशित करना, यह किम्पुरुषों का धर्म कहा गया है |

परस्त्रीमर्दनञ्चैव परद्रव्ये च लोलुपा |
स्वाध्यायं त्र्यम्बके भक्तिर्धर्मोऽयं राक्षसः स्मृतः ||४६||
ब्रह्मचर्यममानित्वं योगाभ्यासरतिर्दृढा |
सर्वत्र कामचारित्वं धर्मोऽयं पैतृकः स्मृतः ||४७||

दूसरे की स्त्री का बलपूर्वक उपभोग करना, दूसरे के धन का बलपूर्वक अपहरण कर लेना और भगवान् त्र्यम्बक में भक्ति रखते हुए अपने स्वाध्याय में लगे रहना राक्षसों का धर्म कहा गया है | ब्रह्मचर्य का पालन, अहंकार का परित्याग, योगाभ्यास में दृढ़रति और सर्वत्र अपनी इच्छा के अनुसार विचरण करना, यह पितरों का धर्म कहा गया है |

ब्रह्मचर्यं यताशित्वं ध्यानं सद्ज्ञानसञ्चयम् |
नियमाद्धर्मवेदित्वमृषीणां धर्ममुच्यते ||४८||
धनाधिपत्यं भोगानि स्वाध्यायं शङ्करार्चनम् |
अहङ्कारमशौण्डीर्यं धर्मोऽयं गुह्यको भवेत् ||४९||
अज्ञानमविवेकत्वं शौचहानिरसत्यता |
पिशाचानामयं धर्मः सर्वदा कुणपाशनम् ||५०||

संतुलित आहार ग्रहण कर ब्रह्मचर्य का पालन करना, ध्यान करना, अच्छे ज्ञान का संचय करना और नियमों के द्वारा धर्म के ज्ञान को धारण करना, यह ऋषियों का धर्म कहा गया है | धन का अधिकार रखना, भोगों का उपभोग करना, स्वाध्याय

करना, भगवान् शिव का अर्चन, अहंकार का प्रदर्शन और मद्यपान नहीं करना, यह गुह्यकों का धर्म कहा गया है | अज्ञान, अविवेकता, पवित्रता की हानि, असत्य का पालन, सदैव शवों का भक्षण करना, यह पिशाचों का धर्म कहा गया है |

स्वाध्यायं ब्रह्मचर्यञ्च दानं यजनमेव च |
अकार्पण्यमलोलुप्त्वं दयाहिंसा क्षमा दमः ||५१||
जितेन्द्रियत्वं शौचञ्च माङ्गल्यं भक्तिरच्युते |
शङ्करे भास्करे देव्यां धर्मोऽयं मानवः स्मृतः ||५२||

स्वाध्याय करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना, दान-यज्ञादि करना, कृपणता और लोभ का प्रदर्शन नहीं करना, दया करना, अहिंसा, क्षमा, इन्द्रियों का दमन एवं निग्रह, पवित्रता और भगवान् विष्णु की मांगल्यपूर्ण भक्ति करना, भगवान् शिव-सूर्य-देवी में भक्ति रखना, यह मनुष्यों का धर्म कहा गया है |

योनयो द्वादशैवैतास्तासु धर्माश्च निश्चिताः |
ब्रह्मणा कथिताः पुण्याः स्वात्मयोनिगतिप्रदाः ||५३||

यह बारह योनियां कही गई हैं, उनके-उनके धर्म निश्चित बताए गए हैं | यह पूर्व काल में ब्रह्माजी के द्वारा कहे गए थे और अपने अपने योनियों को गति प्रदान करने वाले पुण्य धर्म हैं |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायामष्टमः पटलः ||
| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में अष्टम पटल हुआ |

अथ नवमः पटलः

निग्रह उवाच

शब्दब्रह्म प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया |
वर्णोद्धारे पुराणेषु स्वच्छन्दे वामकेश्वरे ||०१||
कामधेनौ यथा प्रोक्तं रहस्यं परमाद्भुतम् |
कौथुमस्य पुराख्यानं यथा सुतनुभाषितम् ||०२||
मातृकां नैव जानाति मन्त्रसिद्धिः कथं भवेत् |
अक्षरास्तु द्विपञ्चाशन्मातृकायाः प्रकीर्तिताः ||०३||

निग्रहाचार्य ने कहा- मैं लोकों के हित की कामना से शब्द ब्रह्म को कहता हूँ | वर्णोद्धारतन्त्र, स्वच्छन्दतन्त्र, वामकेश्वरतन्त्र, कामधेनुतन्त्र और पुराणों में यह परम अद्भुत रहस्य जिस प्रकार से कहा गया है और पूर्व काल में कौथुम का जो आख्यान सुतनु के द्वारा कहा गया है, उसे मैं कहता हूँ | जो व्यक्ति मातृकाओं को नहीं जानता, उसे मन्त्रसिद्धि कैसे प्राप्त हो सकती है ? अक्षर ५२ प्रकार के बताए गए हैं और मातृकाएँ भी उतनी ही हैं |

अकारश्च ककारश्च चटकारौ तथैव च |
तपकारौ यकारश्च वर्गाद्याः परिकीर्त्तिताः ||०४||
सप्ताः स्युर्मातरः सर्वाः कवर्गे कमलोद्भवा |
चवर्गे तु महेशानी टवर्गे तु कुमारिका ||०५||
नारायणी तवर्गे तु वाराही तु पवर्गिका |
ऐन्द्री चैव यवर्गस्था चामुण्डा तु शवर्गिका ||०६||

अकार, ककार, चकार, टकार, तकार, पकार और यकार ये वर्ग बताए गए हैं | इन वर्गों की सात मातृकाएँ होती हैं | कवर्ग की मात्रिका कमलोद्भवा है, चवर्ग की मात्रिका का नाम महेशानी है, टवर्ग की मातृका कुमारिका है, नारायणी तवर्ग में स्थित रहती है, वाराही पवर्ग की मात्रिका है, ऐन्द्री यवर्ग में स्थित रहती है, चामुण्डा शवर्ग में स्थित रहती है |

एताः सप्तमहामातृः सप्तलोकव्यवस्थिताः |
अवर्गे तु महालक्ष्मीः साक्षाल्लोकहितैषिणी ||०७||
आदिः षोडशभेदेन साक्षाद्वै भैरवः स्मृतः |
अकारद्याः क्षकारान्ता वर्णा ह्येते प्रकीर्तिताः ||०८||
अकारो ह्यक्षरो ज्ञेय उकारः सहितः स्मृतः |
मकारसहितोङ्कारस्त्रिमात्र इति संज्ञितः ||०९||

ये सभी सात महामातृकाएँ हैं, जो सात लोकों में व्यवस्थित रहती हैं |अवर्ग में सभी लोगों का हित करने की इच्छा रखने वाली महालक्ष्मी साक्षात् रहती हैं | 'अ' इत्यादि जो सोलह स्वर हैं, वह साक्षात् भैरव कहे गए हैं | अकार से प्रारम्भ करके क्षकार के अन्त तक जितने हैं, सभी वर्ण कहे गए हैं | अकार को अक्षर जानना चाहिए वह उकार और मकार के साथ युक्त रहता है और इस प्रकार ॐकार तीन मात्राओं वाला बताया गया है |

अकारो नयते विश्वमुकारश्चापि तैजसम् |
मकारश्च पुनः प्राज्ञं नामात्रे विद्यते गतिः ||१०||
अकारो भगवान्ब्रह्माप्युकारः स्याद्धरिः स्वयम् |
मकारो भगवान् रुद्रोऽप्यर्द्धमात्रा महेश्वरी ||११||

अकार विश्वसंज्ञक चेतन का नयन (सर्ग/उत्पत्ति) करता है, उकार तैजससंज्ञक चेतन का और मकार प्राज्ञ नामक चेतन का नेता होता है | बिना मात्रा के कोई भी गति नहीं है | अकार भगवान ब्रह्मा हैं, उकार स्वयं भगवान श्रीहरि हैं और मकार रुद्र हैं, जो नादात्मिका अर्द्धमात्रा है, वह महेश्वरी है |

अकारो बीजमाख्यातमुकारः शक्तिरुच्यते |
मकारः कीलकं प्रोक्तं मोक्षार्थे विनियुज्यते ||१२||
अकारश्च तथोकारो मकारश्चाक्षरत्रयम् |
एतास्तिस्त्रस्ततो मात्राः सत्त्वराजसतामसाः ||१३||
अकारो दक्षिणः पक्ष उकारस्तूत्तरः स्मृतः |
मकारं पुच्छमित्याहुरर्द्धमात्रा तु मस्तकम् ||१४||
एवमोङ्कारमाहात्म्यं श्रुतिरेषा सनातनी |
ॐकारस्य च माहात्म्यं याथात्म्येन न शक्यते ||१५||

अकार को बीज कहते हैं, उकार को शक्ति कहते हैं और मकार को कीलक कहते हैं और इनका विनियोजन मोक्ष के लिए होता है | अकार, उकार और मकार ये तीनों जो अक्षर हैं, ये तीनों सात्विक, राजस और तामस मात्राएँ कही गईं हैं | अकार दाहिना पक्ष है, उकार बायां पक्ष है और मकार पूँछ है, अर्द्धमात्रा प्रणव ब्रह्म का मस्तक है | इस प्रकार से वेदों में सनातनी उक्ति कही गई है और यह ॐकार का माहात्म्य है | ॐकार का माहात्म्य यथावत् सम्पूर्णतया नहीं कहा जा सकता |

त्रिमात्रं त्रिपदं चैव त्रियोगं चैव शाश्वतम् |
एवं तदक्षरं ब्रह्मा चिन्तयामास वै प्रभुः ||१६||
तस्मात्तदक्षरं सोऽथ ब्रह्मरूपं स्वयम्भुवः |

चतुर्द्दशमुखं देवं पश्यते दीप्ततेजसम् ||१७||
तमोङ्कारं स कृत्वादौ विज्ञेयः स स्वयम्भुवः |
चतुर्मुखमुखात्तस्मादजायन्त चतुर्दश ||१८||

तीन मात्रा, तीन पद और शाश्वत त्रियोगों से युक्त अक्षर का ब्रह्मदेव ने चिन्तन किया | उस अक्षर से स्वयं ही उत्पन्न होने वाले वे ब्रह्मरूप चौदह मुखों वाले देवता के रूप में दीप्तिमान होकर दिखने लगे | उनमें से स्वयं ही उत्पन्न होने वाला ॐकार पहला जानना चाहिए और फिर चार मुखों से ही चौदह मुख हो गए |

नानावर्णाः स्वरा दिव्यमाद्यं तच्च तदक्षरम् |
तस्मात्त्रिषष्टिवर्णा वै अकारप्रभवाः स्मृताः ||१९||
अःकारान्ता अकाराद्या मनवस्ते चतुर्दश |
स्वायम्भुवश्च स्वारोचिरौत्तमो रैवतस्तथा ||२०||
तामसश्चाक्षुषः षष्ठस्तथा वैवस्वतोऽधुना |
सावर्णिर्ब्रह्मसावर्णी रुद्रसावर्णिरेव च ||२१||
दक्षसावर्णिरेवापि धर्मसावर्णिरेव च |
रौच्यो भौत्यस्तथा चापि मनवोऽमी चतुर्दश ||२२||

उन चौदह मुखों से अलग-अलग प्रकार से दिव्य और अक्षर संज्ञक स्वर वर्ण उत्पन्न हुए, इस प्रकार से ६३ वर्ण अकार से ही उत्पन्न कहे जाते हैं | 'अः' में अन्त होने वाले और 'अ' से प्रारम्भ होने वाले अर्थात् अ से लेकर अः तक ये जो चौदह स्वर हैं, वे चौदह मनु कहे गए हैं - स्वायम्भुव मनु, स्वारोचिष मनु, उत्तम मनु, रैवत मनु, तामस मनु, छठे चाक्षुष मनु, वर्तमान के वैवस्वत मनु, सावर्णि मनु, ब्रह्म सावर्णि, रुद्रसावर्णि, दक्षसावर्णि, धर्मसावर्णि, रौच्य और भौत्य, ये १४ मनु हैं |

ककाराद्य हकारान्तास्त्रयस्त्रिंशच्च देवताः |
ककाराद्याष्ठकारान्ता आदित्या द्वादशः स्मृताः ||२३||
धाता मित्रोऽर्यमा शक्रो वरुणश्चांशुरेव च |
भगो विवस्वान्पूषा च सविता दशमस्तथा ||२४||
एकादशस्तथा त्वष्टा विष्णुर्द्वादश उच्यते |
अनादिश्चैव सर्वेषामादित्यानां गुणाधिकः ||२५||

ककार से प्रारम्भ करके हकार तक जो ३३ देवता हैं | उनमें से ककार से लेकर ठकार तक १२ आदित्य बताए गए हैं, इन बारह आदित्यों के नाम हैं – धाता, मित्र, अर्यमा, शक्र, वरुण, अंशु, भग, विवस्वान्, पूषा, दसवें सविता, ग्यारहवें त्वष्टा और बारहवें विष्णु | यह जो विष्णु हैं वो अनादि हैं और सभी आदित्यों में गुणों की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ हैं |

डकाराद्या बकारान्ता रुद्राश्चैकादशैव तु |
कपाली पिङ्गलो भीमो विरूपाक्षो विलोहितः ||२६||
अजकः शासनः शास्ता शम्भुश्चण्डो भवस्तथा |
भकाराद्याः षकारान्ता अष्टौ हि वसवो मताः ||२७||
ध्रुवो घोरश्च सोमश्च आपश्चैव नलोऽनिलः |
प्रत्यूषश्च प्रभासश्च अष्टौ ते वसवः स्मृताः ||२८||
सहौ चेत्यश्विनौ ख्यातौ त्रयस्त्रिंशदिमे स्मृताः |
ब्रह्मकोशस्तारनामा व्यापी ओङ्कार ईरितः ||२९||

डकार से प्रारम्भ करके बकार तक जो ग्यारह वर्ण हैं, वे ग्यारह रुद्र कहे गए हैं | इन ११ रुद्रों के नाम हैं - कपाली, पिङ्गल, भीम, विरूपाक्ष, विलोहित, अजक,

शासन, शास्ता, शम्भु, चण्ड और भव | भकार से प्रारम्भ करके षकार तक जो ८ वर्ण हैं, वे अष्ट वसु कहे गए हैं | इनके नाम हैं - ध्रुव, घोर, सोम, आप, नल, अनिल, प्रत्यूष और प्रभास | सकार और हकार ये दोनों अश्विनी कुमार के नाम से कहे गए हैं और इस प्रकार से ३३ वर्ण ही ३३ देवता हैं | इन सभी वर्णों में ब्रह्मकोश नामका तारसंज्ञक ॐकार ही व्याप्त कहा जाता है |

स्त्रीशूद्रद्विजबन्धूनां नाधिकारोऽस्ति वर्त्तुले |
तेषां स्मृतः पुराणोक्तस्तारः सार्द्धद्विमात्रकः ||३०||
स्वरश्चतुर्दशतमः औकारो बिन्दुसंयुतः |
अधुना सम्प्रवक्ष्यामि मातृकाशक्तिमद्भुतम् ||३१||
डाकिनी राकिणी देवि लाकिनी काकिनी ततः |
शाकिनी हाकिनी नामा विख्याता वर्णमातरः ||३२||

स्त्री, शूद्र और अपने धर्म से च्युत हो गए हुए द्विज (नाम मात्र के जो द्विज हैं आचरण रहित) उनका इस वर्णित वर्तुल ॐकार में अधिकार नहीं है | उनके लिए ढाई मात्रा का पुराणोक्त तारप्रणव बताया गया है | चौदहवां स्वर जो औकार है, वह जब बिन्दु से युक्त हो जाता है तो वही 'औं' पुराणों में स्त्रीशूद्रादि के लिए बताया गया प्रणव है | अब मैं अद्भुत मातृका शक्ति को कहता हूँ | डाकिनी, राकिणी, देवी, लाकिनी, काकिनी, शाकिनी, हाकिनी ये सभी वर्ण मातृकाएँ कही गई हैं |

सत्त्वरूपा तमोरूपा रजोरूपा तथैव च |
डाकिनी राकिणी चैव लाकिनी काकिनी तथा ||३३||
शाकिनी हाकिनी देवी वर्णानां मन्त्रदेवता |
विना वर्णपरिज्ञानं किं जपैर्नियमैर्व्रतैः ||३४||

ये सत्त्वरूपा, तमोरूपा और रजोरूपा हैं | डाकिनी, राकिनी,लाकिनी काकिनी, शाकिनी और हाकिनी ये वर्णों की मन्त्र देवताएँ कही गई हैं | वर्ण के इन रहस्यों को बिना जाने हुए व्यक्ति को जप से, व्रत से या नियम से क्या लाभ होगा ?

उत्कीलनन्तु वर्णानां रहस्यं कथयाम्यहम् |
ॐ ॐ प्रणवरूपाय अं आं परमरूपिणे ||३५||
इं ईं शक्तिस्वरूपाय उं ऊं तेजोमयाय च |
ऋं ॠं रञ्जितदीप्ताय लृं ॡं स्थूलस्वरूपिणे ||३६||
एं ऐं वाचां विलासाय ओं औं अं अः शिवाय च |
कं खं कमलनेत्राय गं घं गरुडगामिने ||३७||
ङं चं श्रीचन्द्रभालाय छं जं जयकराय च |
झं ञं टं ठं जयकर्त्रे डं ढं णं तं पराय च ||३८||

अब मैं वर्ण के उत्कीलन के रहस्य को कहता हूँ | ॐ और ॐ ये दोनों प्रणवरूप के लिये हैं | अ और आ, ये परमरूपी के लिये हैं | इ और ई, ये शक्तिस्वरूप के लिये हैं | उ और ऊ, ये तेजोमय के लिये हैं | ऋ और ॠ, ये रञ्जित और दीप्त के लिये हैं । लृ और ॡ, ये स्थूलस्वरूप के लिये हैं | ए और ऐ, ये वाणी के विलास के लिये हैं | ओ, औ, अं और अः, ये कल्याणकारी शिव के लिये हैं | क और ख, ये कमलनेत्र के लिये हैं | ग और घ गरुडगामी के लिये हैं | ङ और च, ये श्रीचन्द्रभाल के लिये हैं | छ और ज जयकर के लिए हैं | झ, ञ, ट और ठ जयकर्ता के लिए हैं | ड, ढ, ण और त परदेवता के लिए हैं |

थं दं धं नं नमस्तस्मै पं फं यन्त्रमयाय च |
बं भं मं बलवीर्याय यं रं लं यशसे नमः ||३९||

वं शं षं बहुवादाय सं हं ळं क्षं स्वरूपिणे |
दिशामादित्यरूपाय तेजसे रूपधारिणे ||४०||
अनन्ताय अनन्ताय नमस्तस्मै नमो नमः |
मातृकायाः प्रकाशाय तुभ्यं तस्मै नमो नमः ||४१||

थ, द, ध और न, इनको मैं प्रणाम करता हूँ, ये नमस्कार के लिए हैं। प और फ यन्त्रमय हैं | ब, भ और म, ये बल-वीर्य के लिए हैं | य, र, ल यश के लिए नमस्कृत हैं | व, श और ष, ये बहुत प्रकारों के विवादों के लिए हैं | स, ह, ळ और क्ष, स्वरूप (आत्मरूप) के लिए हैं | दिशाओं में जो तेजोरूप में व्याप्त हैं, उन अनन्त को, अनन्त को, मैं प्रणाम करता हूँ, प्रणाम करता हूँ | मातृकाओं के प्रकाशन के लिए आपके और उसके लिए बारम्बार बारम्बार प्रणाम है |

प्राणेशायै क्षीणदायै सं सञ्जीव नमो नमः |
एवमुक्ता तु वर्णानामुत्कीलनमथाचरेत् ||४२||
अहो मोहस्य माहात्म्यं पश्यताविजितात्मनाम् |
पठन्ति मातृकां पापा मन्यन्ते न सुरानिह ||४३||

प्राण देने के लिए और आसक्तियों को क्षीण करने के लिए आप सञ्जीवित हों | इस प्रकार से वर्णों के उत्कीलन का आचरण करे | अहो ! यह अजितेन्द्रियों के मोह का कैसा माहात्म्य है कि लोग क, ख, ग इत्यादि वर्णों को (मातृकाओं को) पढ़ते तो हैं, किन्तु इनके अधिष्ठाता देवताओं को मानते ही नहीं, नास्तिकवादी हो गए हैं |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायां नवमः पटलः ||
| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में नवम पटल हुआ |

अथ दशमः पटलः

निग्रह उवाच

सङ्क्षेपेण प्रवक्ष्यामि वर्णानां वैष्णवीतनौ |
नाम रूपं स्थितिर्न्यासमागमेषु प्रकाशितम् ||०१||
जीवानां देहबद्धानां तत्तत्सन्मार्गदर्शिका |
शब्दब्रह्मात्मिका या सा मातृका प्रकृतिः परा ||०२||
अकारश्चाप्रमेयश्च व्यापको धृष्टसंज्ञिकः |
आकार आदिदेवश्चानन्दो वै गोपनः स्मृतः ||०३||
इकारो रामनामायं मायाबन्धुस्त्रिलोचनः |
ईकारः पञ्चबिन्दुर्वै महामायो मनोभवः ||०४||

निग्रहाचार्य ने कहा- वर्णों का वैष्णवी शरीर में जो स्थान है, जो नाम है और जैसा रूप है, जो आगमों में बताया गया है, मैं संक्षेप में ही उसको कहता हूँ | जो देह में बद्ध जीवों को सन्मार्ग का प्रदर्शन करती है, सन्मार्ग दिखाती है, जो शब्दब्रह्मात्मिका है, वही परा प्रकृति मातृका है | अकार अप्रमेय है, व्यापक है और धृष्ट संज्ञा से युक्त है | आकार आदिदेव है, आनन्द है और गोपन बताया गया है | इकार को राम-नाम, मायाबन्धु और त्रिलोचन कहते हैं | ईकार पञ्चबिन्दु, महामाया और मनोभव कहलाता है |

उकारो भुवनाख्यश्च उद्दाम उदयः स्मृतः |
ऊकार ऊर्जो लोकेशो विश्वरूपो गुहाशयः ||०५||
ऋकारो विष्टराख्यश्च सुखदो लोकनायकः |

ॠकारः पीठनामा स्याद्योगिनागपतिस्तथा ||०६||
लृकारो विश्वमूर्तिश्च महेशश्छिन्नसंशयः |
विराड्दीर्घल्ॣकारो देवदत्तो भूतभव्यवान् ||०७||
एकारः सात्त्वतस्त्र्यश्रो जगद्योनिरविग्रहः |
ऐकारो वीरसेनः स्याद्दमनो गोधनः स्मृतः ||०८||

उकार भुवन, उद्दाम और उदय बताया गया है | ऊकार ऊर्जलोकेश, विश्वरूप और गुहाशय कहा गया है | ऋकार विष्टर, सुखद और लोकनायक बताया गया है | ॠकार को पीठ, योगी और नागपति कहते हैं | लृकार विश्वमूर्ति, महेश और छिन्नसंशय है एवं जो दीर्घ लृकार(ॣ) है, उसे विराट्, देवदत्त और भूत-भव्यवान् कहते हैं | एकार सात्वत है, त्र्यश्र है, जगद्योनि है और अविग्रह है | ऐकार वीरसेन, दमन और गोधन बताया गया है |

ओकारो भूषणो भूतिरोतदेवश्च विक्रमी |
औकारः औषधः प्रोक्तस्त्रयी विश्वावसुर्हरिः ||०९||
अङ्कारः कपिलाक्षः स्याद्व्योमः पीताम्बरः स्मृतः |
अःकारः सर्ववित्साङ्ख्यो विसर्गः सृष्टिकृत्तथा ||१०||

ओकार भूषण, भूति, ओतदेव और विक्रमी बताया गया है | औकार को औषध, त्रयी, विश्वावसु और हरि कहते हैं | अंकार कपिलाक्ष, व्योम और पीताम्बर बताया गया है | अःकार सर्वविध, साङ्ख्य, विसर्ग और सृष्टिकृत् कहलाता है |

ककारः कमलो ब्रह्मा शङ्खी च प्रकृतिस्तथा |
खकारः खर्वदेवश्च चक्री गरुडवाहनः ||११||

गकारः पद्मपाणिश्च गदध्वंसी गदाधरः |
घकारः शार्ङ्गधारी स्याद्धर्मांशुर्दीप्तिमान् रविः ||१२||
ङकार एकदंष्ट्रश्च वक्रतुण्डश्च खड्गधृक् |
चकारश्चञ्चलश्चन्द्रः कुण्डली च तमोपहा ||१३||
छकारश्छलविध्वंसी मुसली जन्महा गुरुः |
जकारो जन्महन्ता च जितक्रोधश्च शाश्वतः ||१४||

ककार को कमल, ब्रह्मा, शङ्खी और प्रकृति कहते हैं | खकार को खर्वदेव, चक्री और गरुडवाहन कहते हैं | गकार को पद्मपाणि, गदध्वंसी और गदाधर कहते हैं | घकार को शार्ङ्गधारी, धर्म, अंशु, दीप्तिमान् और रवि कहते हैं | ङकार एकदंष्ट्र, वक्रतुण्ड और खड्गधृक् कहलाता है | चकार चञ्चल, चन्द्र, कुण्डली और तमोपहा कहलाता है | छकार छलविध्वंसी, मुसली, जन्महा और गुरु है | जकार को जन्महन्ता, जितक्रोध और शाश्वत कहते हैं |

झकारः सामवेदात्मा सुवर्णो झषसंज्ञिकः |
ञकारश्चन्द्रधवलः पाशपाणिर्भृगूत्तमः ||१५||
टकारो हृदयाह्लादी खेटकी पर्वताधरः |
ठकारः कौस्तुभो मेधी तोमरो दुःसहः स्मृतः ||१६||
डकारः पुण्डरीकाक्षो मौसलोऽखण्डविक्रमः |
ढकारः पुष्पभद्रश्च वृषकर्मा प्रतर्दनः ||१७||
णकारो वनमाली च शास्ता वैकुण्ठपालकः |
तकारस्तालक्ष्मा च वैराजः स्रग्धरः स्मृतः ||१८||
थकारः सर्वरोधश्च धन्वी भुवनपालकः |

दकारो दमनो दान्तः अत्रिश्च त्रिपुरान्तकः ||१९||
धकारो धनदः पुण्यः सुभगो मोहनाशनः |
नकारो भद्रपाणिश्च रोधनो नन्दकस्तथा ||२०||

झकार को सामवेद, आत्मा, सुवर्ण और झषसंज्ञक कहते हैं | ञकार चन्द्रधवल है, पाशपाणि है और भृगूत्तम है | टकार हृदयाह्लादी, खेटकी और पर्वताधर है | ठकार कौस्तुभ, मेधी, तोमर और दुःसह बताया गया है | डकार पुण्डरीकाक्ष, मौसल और अखण्डविक्रम है | ढकार पुष्पभद्र है, वृषकर्मा है और प्रतर्दन है | णकार वनमाली, शास्ता और वैकुण्ठपालक है | तकारताललक्ष्मा है, वैराज है और स्रग्धर बताया गया है | थकार सर्वरोध, धन्वी और भुवनपालक है | दकार दमन, दान्त, अत्रि और त्रिपुरान्तक है | धकार धनद, पुण्य, सुभग और मोहनाशन है | नकार को भद्रपाणि, रोधन और नन्दक कहते हैं |

पकारः पद्मनेत्रश्च पवित्रः पश्चिमाननः |
फकारः फुल्लनयनः शिखण्डी श्वेतवाहनः ||२१||
बकारो निमिषो ह्रस्वो मतिमान्कालनेमिजित् |
भकारो ज्ञेयसिद्धिश्च सुभद्रः सूक्ष्मदर्शनः ||२२||
मकारो मन्दरः कालो माधवीपाटलप्रियः |
यकारो वायुबीजञ्च सूक्ष्मः शङ्खश्चतुर्गतिः ||२३||
रेफोऽनलो महाज्वालो विश्वात्मा सर्वदाहकः |
लकारो विबुधाख्यश्च माहेन्द्रस्तु धनेश्वरः ||२४||

पकार पद्मनेत्र, पवित्र और पश्चिमानन है | फकार फुल्लनयन, शिखण्डी और श्वेतवाहन है | बकार निमिष, ह्रस्व, मतिमान् और कालनेमिजित् है | भकार ज्ञेय,

सिद्धि, सुभद्र और सूक्ष्मदर्शन है | मकार मन्दर है, काल है, माधवी और पाटलप्रिय है | यकार वायुबीज, सूक्ष्म, शङ्ख और चतुर्गति है | रेफ (अर्थात् रकार) को अनल, महाज्वाल, विश्वात्मा और सर्वदाहक बताया गया है | लकार को विबुध कहते हैं, माहेन्द्र और धनेश्वर भी कहते हैं |

वकारस्त्वमृतासारो वरुणश्च सुधाकरः |
शकारः शुभदो लक्ष्मीः श्रीवत्सः ककुभः स्मृतः ||२५||
षकारः क्रोधनः शङ्कुरग्निरूपश्च भास्करः |
सकारस्त्वमृतस्तृप्तः सोमश्च द्वादशात्मकः ||२६||
हकारः परमात्मा च प्राणः सत्यस्तु कण्ठतः |
क्षकारस्तु नृसिंहः स्याद्ब्रह्मण्योऽन्त्याक्षरः स्मृतः ||२७||
ळकारो डुण्डुभो भर्गो विष्कम्भो विमलस्तनुः |
ततः शब्दानुसन्धानं प्रागुक्तं तु समाचरेत् ||२८||

वकार अमृतासार है, वरुण है और सुधाकर है | शकार शुभद, लक्ष्मी, श्रीवत्स और ककुभ बताया गया है | षकार क्रोधन, शंकु, अग्निरूप और भास्कर है | सकार अमृत है, तृप्त, सोम और द्वादशात्मक है | हकार परमात्मा, प्राण, सत्य और कण्ठ है | क्षकार नृसिंह होता है, ब्रह्मण्य है और अन्त्याक्षर भी बताया गया है | ळकार (ये मूर्धन्य ल है) डुण्डुभ, भर्ग, विष्कम्भ, विमल और तनु बताया गया है | इस प्रकार से शब्दों का जो अनुसन्धान पहले बताया गया है, उसका आचरण करे |

तथैव वर्णभेदेन स्थानभेदे च विन्यसेत् |
कदम्बकुसुमाकारमकारं विन्यसेद्बुधः ||२९||
सीमन्ते वा शिखायां वा आकारं कुङ्कमप्रभम् |

तप्तचामीकराकारमिकारं मुखमण्डले ||३०||
ईकारं कण्ठदेशे तु कुन्देन्दुसदृशप्रभम् |
उकारं जत्रुभागे तु शुद्धस्फटिकवर्चसम् ||३१||
ऊकारं वक्षसि तथा सिन्दूरसदृशाकृतिम् |
ऋकारं हृदये न्यस्येच्छुक्लवर्णं महाप्रभम् ||३२||

फिर वर्णभेद के आधार पर उन-उन वर्णों को स्थान भेद के अनुसार बताए गए स्थानों में न्यास करे | कदम्ब के फूल के समान अकार का सीमन्त में न्यास करे | शिखा में कुङ्कमप्रभ आकार का न्यास करे | तपाए हुए सोने के सामान इकार का मुखमण्डल में न्यास करे | कुन्द के पुष्प और चन्द्रमा के समान प्रभा वाले ईकार का न्यास कण्ठ में करे | शुद्ध स्फटिक के समान उकार का जत्रुभाग में न्यास करे | सिन्दूर के समान आकृति वाले ऊकार का न्यास वक्षस्थल में करे | शुक्लवर्ण तथा महान् प्रभा वाले ऋकार का न्यास हृदय में करे |

ॠकारं जाठरे भागे लाक्षारससमद्युतिम् |
लृकारं नाभिदेशे तु तप्तकाञ्चनसन्निभम् ||३३||
लिङ्गे दीर्घल‍ृकारन्तु विन्यसेदसितप्रभम् |
एकारं द्रुतहेमाभमूरुयुग्मं समाश्रितम् ||३४||

लाक्षारस के समान तेज वाले ॠकार का न्यास जठरभाग में करे | तपाए हुए सोने के सामान आभा वाले लृकार का न्यास नाभि में करे | काजल के समान प्रभाव वाले दीर्घ लृकार (ॡ) का न्यास लिंग में करे | विद्युत् के समान चमकते स्वर्ण की आभा वाले एकार का न्यास दोनों उरुओं में करे |

ऐकारं जानुयुग्मे तु सन्ध्याजलदसन्निभम् |
ओकारं जङ्घयोस्तद्वच्छुक्लवर्णं नियोजयेत् ||३५||
औकारं रक्तवर्णञ्च गुल्फद्वयगतं तथा |
अङ्कारमङ्घ्रिसद्भागे लौहकान्तसमप्रभम् ||३६||
अःकारं चरणाङ्गुष्ठे पद्मरागसमप्रभम् |
ककारं तु ललाटस्थं रक्तवर्णं तु विन्यसेत् ||३७||
खकारं पीतलनिभं भ्रुवोर्मध्यमदेशगम् |
गकारं नासिकायां तु तुषारसदृशाकृतिम् ||३८||
घकारं सितवर्णं तु दशनस्थानसंश्रितम् |
ङकारं चिबुकोद्देशे शरद्गगनसन्निभम् ||३९||

सायंकालीन बादल के समान शोभायमान ऐकार का न्यास दोनों घुटनों में करे | शुक्लवर्ण के ओकार का न्यास भी दोनों जंघाओं में करे | रक्तवर्ण के औकार का न्यास गुल्फभाग में करे | दोनों चरणों में लौहप्रभा वाले अंकार का न्यास करे | पद्मराग के समान प्रभा वाले अःकार का न्यास पैर के अंगूठे में करे | ललाट में रक्तवर्ण के ककार का न्यास करे | पीतल के समान प्रभा वाले खकार का न्यास दोनों भौंह के मध्य में करे | बर्फ के समान आकृति वाले गकार का न्यास नासिका में करे | सफेद वर्ण वाले घकार का दाँतों में न्यास करे | ठुड्डी में ङकार का न्यास करे जो शरत्कालीन गगन के समान है |

चकारं रक्तवर्णञ्च कृकाटीगोचरे न्यसेत् |
छकारं पृष्ठभागे तु ज्वलितानलसन्निभम् ||४०||
जकारं कटिदेशस्थं काञ्चनाद्रिसमप्रभम् |

झकारमूरुमूले तु शुद्धस्फटिकसन्निभम् ||४१||
ञकारं पादगुल्फाग्रे पद्मरागसमप्रभम् |
टकारं भ्रूयुगगतं तुषारसदृशाकृतिम् ||४२||
रक्तवर्णं ठकारन्तु नेत्रयोर्विनियोजयेत् |
डकारङ्गण्डयोश्चैव पीतवर्णं महाद्युतिम् ||४३||
ढकारं हनुयुग्मस्थमिन्द्रनीलसमप्रभम् |
णकारङ्कुचयुग्मे तु हरितालसमद्युतिम् ||४४||

रक्तवर्णीय चकार का न्यास गले को घेरने वाली अस्थि में करे | जलते हुए अग्नि के समान छकार का न्यास पृष्ठभाग में करे | सोने के पहाड़ के समान प्रभा वाले जकार का न्यास कमर में करे | शुद्ध स्फटिक के समान आभा वाले झकार का न्यास दोनों उरु के मूल में करे | ञकार को दोनों पैरों के गुल्फभाग के आगे न्यास करे, जो पद्मराग के समान प्रभा वाले हैं | टकार को दोनों भौहों में न्यास करे, जो बर्फ के समान आकृति वाले हैं | लालवर्ण वाले ठकार का दोनों नेत्रों में न्यास करे | दोनों गालों के नीचे पीले वर्ण तथा बहुत प्रभाव वाले डकार का न्यास करे | इन्द्रनील के समान प्रभाव वाले ढकार का दोनों गालों के ऊपर के भाग में न्यास करे | हरिताल के समान प्रभाव वाले णकार का दोनों स्तनों में न्यास करे |

तकारं श्रवसोर्युग्मे प्रवालोपलसन्निभम् |
थकारं स्कन्धयुगले चम्पकप्रसवाकृतिम् ||४५||
दकारं भुजयोर्मध्ये ज्वलितानलसन्निभम् |
धकारं तु प्रकोष्ठस्थं खद्योतचयसुप्रभम् ||४६||
नकारं करयोर्न्यस्य पद्मपत्रसमद्युतिम् |
पकारं रोमकूपस्थं पलाशदलसन्निभम् ||४७||

फकारं कक्षभागस्थं सन्ध्याभ्रसदृशप्रभम् |
बकारं पार्श्वयुग्मे तु पूर्णचन्द्रसमप्रभम् ||४८||

मूंगारत्न के समान आभा वाले तकार का न्यास दोनों कानों में करे | चम्पक के फूल के समान आभा वाले थकार का न्यास दोनों कन्धों में करे | दोनों भुजाओं के मध्य में दकार का न्यास करे, जो जलते हुए अग्नि के समान है | जुगनू के समूह के समान प्रभा वाले धकार का दोनों प्रकोष्ठ (कन्धे से मणिबन्ध) में न्यास करे | नकार का दोनों हाथों में न्यास करे जो पद्मपत्र के समान आभा वाले हैं | पलाश के पत्तों के समान प्रभाव वाले पकार का न्यास रोमकूपों में करें | संध्याकालीन बादलों के समान आभा वाले फकार का न्यास दोनों काँख में करे | पूर्णचन्द्र के समान प्रभा वाले बकार का न्यास दोनों पार्श्वभागों में करे |

भकारं सक्थिदेशस्थं नीलाञ्जनचयोपमम् |
मकारं पिण्डिकासंस्थं शरद्गगनसन्निभम् ||४९||
यकारं पाञ्चजन्ये तु धूम्रवर्णञ्च विन्यसेत् |
सुदर्शने रकारञ्च रक्तपङ्कजसन्निभम् ||५०||
लकारञ्च गदायां वै सौदामिनिसमप्रभम् |
वकारमरविन्दे तु शारदाभ्रसमप्रभम् ||५१||
शकारं शोणिते न्यस्यामृतसंकाशविग्रहम् |
षकारमस्थिनिचये शशशोणितसन्निभम् ||५२||

नीले काजल के समूह के समान प्रभा वाले भकार का न्यास सक्थि (घुटने से थोडा ऊपर) क्षेत्र में करे | शरत्कालीन आकाश के समान आभा वाले मकार का न्यास दोनों पिण्डिकाओं में करे | भगवान् के पाञ्चजन्य शंख में यकार का न्यास करे जो

धूम्रवर्ण का है | सुदर्शन चक्र में लाल कमल के समान रकार का न्यास करे | गदा में लकार का न्यास करे जो विद्युत् के समान है और पद्म में वकार का न्यास करे जो शरत्कालीन बादल के समान है | शकार का रक्त में न्यास करे जो अमृत के समूह के समान है | खरगोश के रक्त के समान आभा वाले षकार का न्यास अस्थिसमूह में करे |

सकारं मांसदेशे तु हिमकुन्दसमप्रभम् |
हकारं प्राणदेशस्थं शुद्धस्फटिकविग्रहम् ||५३||
क्षकारं सर्वतोव्याप्तं सूर्यवैश्वानरप्रभम् |
एवमेवं महाविष्णोः कथिता परमेश्वरे ||५४||
अनिर्देश्योपमा संविन्माया वर्णमयी तनुः |
अथवा मातृकान्यासमेवमेवं समाचरेत् ||५५||

सकार का न्यास मांसदेश में करे, जो बर्फ या कुन्दपुष्प के समान आभा वाला है | हकार का प्राणदेश में न्यास करे जो शुद्ध स्फटिक के समान है | क्षकार का सर्वत्र न्यास करे जो सूर्य एवं वैश्वानर के समान है | इस प्रकार से महाविष्णु का न्यास परमेश्वर संहिता में कहा गया है | यह जो मातृकाओं वर्णों से युक्त शरीर है वह संवित् ज्ञानरूपी है, मायायुक्त है और इसका निर्देश्य या उपमा नहीं बताया जा सकता | इसी प्रकार से न्यास करे अथवा मातृकाओं के न्यास का भी इसी प्रकार से आचरण करे |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायां दशमः पटलः ||
| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में दशम पटल हुआ |

अथैकादशः पटलः

निग्रह उवाच

मातृकाणां यथा न्यासं तथोक्तं वैष्णवागमे |
सङ्क्षेपतः प्रवक्ष्यामि वर्णानां देहसंस्थितिः ||०१||
अकारं तालौ विन्यस्य मुखे चाकारमेव च |
इईं लोचनयोर्न्यस्य उऊं श्रवणयोस्तथा ||०२||
ऋॠं नासापुटे चैव लृॡं गण्डद्वये तथा |
एऐं वा दन्तपङ्क्तौ च ओऔमोष्ठगते स्मरेत् ||०३||
अनुस्वारं ललाटे तु विसर्गं रसने तथा |
यकारं त्वग्गतं न्यस्य रेफं चक्षुषि विन्यसेत् ||०४||
लकारं नासिकायां तु वकारं दशनाग्रतः |
श्रोत्रे शकारं विन्यस्य षकारमुदरे तथा ||०५||
सकारं कटिदेशे तु हकारं हृदये न्यसेत् |
क्षकारं नाभिदेशे तु विन्यसेद्वैष्णवो नरः ||०६||
पवर्गो बाहुरेकस्तु तवर्गस्तु द्वितीयकः |
टवर्गश्च चवर्गश्च जङ्घाद्वयमुदाहृतम् ||०७||
कवर्गोऽङ्गुलयः सर्वा विज्ञातव्या मनीषिभिः |
एवं हि वर्णसन्धानं कृत्वा चैव ततः परम् ||०८||
आत्मस्थितं महाविष्णुमात्मानं विष्णुसंस्थितम् |
ध्यात्वा ज्ञाता जपेन्मन्त्रं मोक्षमार्गमवाप्नुयात् ||०९||

निग्रहाचार्य ने कहा – जिस प्रकार से वैष्णव आगमों में मातृकाओं का न्यास बताया गया है, वर्णों की देहस्थिति के आधार पर उनको संक्षेप में ही कहता हूँ | अकार को तालु में न्यास करे, मुख में आकार का न्यास करे | इ और ई को दोनों नेत्रों में न्यास करे तथा उ और ऊ का न्यास दोनों कानों में करे | ऋ और ॠ का न्यास दोनों नासापुटों में करे तथा लृ और ॡ का न्यास दोनों गण्डस्थानों में करे | ए और ऐ का न्यास दोनों दन्तपंक्तियों में करना चाहिए तथा ओ और औ का दोनों ओष्ठ में स्मरण करे | अनुस्वार का ललाट में तथा विसर्ग का जिह्वा में न्यास करे | यकार का न्यास त्वचा में एवं रेफ (अर्थात् रकार) का न्यास नेत्रों में करे | लकार का नासिका में, वकार का दांतों के अग्रभाग में, शकार का कान में न्यास करके षकार का न्यास पेट में करे | सकार का कमर में, हकार का हृदय में और क्षकार का नाभिदेश में वैष्णव व्यक्ति न्यास करे | पवर्ग का दक्षिण बाहु में तथा तवर्ग का वाम बाहु में न्यास करे | टवर्ग और चवर्ग दोनों का जंघाओं में न्यास करे, ऐसा विधान बताया गया है | कवर्ग के पाँच अक्षरमातृका, जो मनीषियों के द्वारा जाने गए हैं, उनका न्यास सभी अँगुलियों में किया जाना चाहिए | इस प्रकार सभी वर्णों का सन्धान करके अपने अन्दर भगवान् विष्णु को स्थित और स्वयं को भगवान् विष्णु के अन्दर स्थित जानने वाला, ऐसा ध्यान करके मन्त्र का जप करे, इससे वह मोक्षमार्ग को प्राप्त कर जाता है |

शब्दब्रह्म नरो ज्ञात्वा मुच्यते सर्वपातकैः |
शब्दब्रह्मपरो विष्णुः शब्दब्रह्मास्ति विश्वराट् ||१०||
शब्दब्रह्ममयं यत्तन्महावाक्यादिकं भुवि |
तद्विचारोद्भवं ज्ञानं परं मोक्षस्य साधनम् ||११||
परमोङ्काररूपञ्च शब्दब्रह्ममयं वपुः |
यस्याराधनतः पुंसां न दूरं ब्रह्मणः पदम् ||१२||

शब्दं तद्वैभवं पूर्वं परस्मिन् परमेश्वरे |
तत्रान्तर्लीनममलं शब्दन्तु परिभावयेत् ||१३||
भुक्तिमुक्तिप्रसिद्ध्यर्थं दोषदुःखक्षयङ्करम् |
इह लोके सुखं भुक्त्वा चान्ते ब्रह्मपदं लभेत् ||१४||
पृथग्ध्यानन्तु वर्णानां वाचनन्तु पृथक्पृथक् |
वदिष्येऽहञ्च तन्त्रोक्तं वर्णज्ञानप्रसिद्धये ||१५||

शब्द-ब्रह्म को इस प्रकार से जानकर व्यक्ति सभी पापों से मुक्त हो जाता है | शब्द-ब्रह्म में ही विष्णु आश्रित रहते हैं और शब्द-ब्रह्म ही विश्व का स्वामी है | इस संसार में जो भी महावाक्य आदि हैं वे सब शब्द-ब्रह्ममय ही हैं | इस प्रकार से ज्ञान विचारों के द्वारा उत्पन्न होता है वह परम मोक्ष का साधन होता है | ब्रह्म का जो परम ओंकार रूप है और शब्दब्रह्ममय रूप शरीर है उसका आराधन करने पर व्यक्ति के लिए ब्रह्मपद दूर नहीं रहता अर्थात् वह ब्रह्मपद को प्राप्त कर जाता है | परमेश्वर में ये शब्दों का वैभव पूर्वकाल से ही स्थित रहता है | जो निर्मल शब्द लीन हैं, उसी परमेश्वर की परिभावना करे | जो शब्द भोग और मोक्ष के लिए जो प्रसिद्ध हैं, दोष और दुःख का क्षय करने वाला हैं, (उसका ध्यान करने वाला व्यक्ति) इस संसार में सुख भोगकर अन्त में ब्रह्मपद को प्राप्त कर जाता है | वर्ण के ज्ञान के प्रसिद्धि के लिए तन्त्रों में जैसा बताया गया है, वैसे अलग-अलग वर्णों का भिन्न भिन्न ध्यान और वाचन मैं अलग-अलग कहने जा रहा हूँ |

प्रणवे नित्ययुक्तस्य न भयं विद्यते क्वचित् |
ग्रहाणां भास्करो यद्वन्मन्त्राणां प्रणवस्तथा ||१६||
शिवो वा प्रणवो ह्येष प्रणवो वा शिवः स्मृतः |
वाच्यवाचकयोर्भेदो नात्यन्तं विद्यते यतः ||१७||

प्रणवो वाचकस्तस्य शिवस्य परमात्मनः |
प्रणवो हि परं ब्रह्म तज्जपः सर्वपापहा ||१८||
चैतन्यः परमानन्दः प्रणवो बीजमुत्तमम् |
ओङ्कारं यो न जानाति ब्राह्मणो न भवेत्तु सः ||१९||
प्रणवाद्या यतो वेदाः प्रणवे पर्यवस्थिताः |
वाङ्मयं प्रणवः सर्वं तस्मात्प्रणवमभ्यसेत् ||२०||
ॐकारः प्रणवस्तारो वेदादिर्वर्तुलो ध्रुवः |
त्रिशिखो त्रिगुणो ब्रह्म सत्यो मन्त्रादिरव्ययः ||२१||
ब्रह्मबीजं त्रितत्त्वञ्च पञ्चरश्मिस्त्रिदैवतः |
बिन्दुशक्तिस्त्रिकूटे च वामश्च हंसकारणम् ||२२||
सर्वजीवोत्पादकश्च पञ्चदेवो ध्रुवस्त्रिकः |
सावित्री बीजपञ्चांशौ गायत्री गुणजीवकः ||२३||
आदिबीजं वेदसारो वेदबीजमतः परम् |
मन्त्रविद्याप्रसूश्चैव प्रभुश्च भवनाशनः ||२४||
अक्षरं मातृकासूश्चानादिरद्वैतमोक्षदौ |
एवं प्रणववाच्यानि सम्प्रोक्तानि मयाधुना ||२५||

जो व्यक्ति सदैव प्रणव के ध्यान से युक्त रहता है, उसे किसी भी बात का भय नहीं रहता | जिस प्रकार ग्रहों में सूर्य हैं, उसी प्रकार मन्त्रों में प्रणव बताया गया है | शिव साक्षात् प्रणव बताए गए हैं और प्रणव को शिव कहा गया है क्योंकि वाच्य और वाचक में कोई भेद नहीं है | प्रणव उस परमात्मा शिव का वाचक है | प्रणव ही परब्रह्म है और उसका जप सभी प्रकार के पापों का नाश करने वाला है | प्रणव चैतन्यरूप है और परमानन्दरूपी उत्तम बीज है | जो ओंकार को नहीं जानता वह

ब्राह्मण नहीं होता है | प्रणव से ही सभी वेद निःसृत होते हैं और प्रणव में ही सभी वेद स्थित रहते हैं | प्रणव सब प्रकार से वांग्मय है, इसलिए प्रणव का अभ्यास करना चाहिए | ओंकार, प्रणव, तार, वेदादि, वर्तुल, ध्रुव, त्रिशिख, त्रिगुण, ब्रह्म, सत्य, मन्त्रादि, अव्यय, ब्रह्मबीज, त्रितत्त्व, पञ्चरश्मि, त्रिदैवत, बिन्दुशक्ति, त्रिकूट, वाम, हंस, कारण, सर्वजीवोत्पादक, पञ्चदेव, ध्रुव, त्रिक, सावित्री, बीज, पञ्चांश, गायत्री, गुणजीवक, आदिबीज, वेदसार, वेदबीज, मन्त्रविद्या, प्रसू, प्रभु, भवनाशन, अक्षर, मातृकासू, अनादि, अद्वैत और मोक्षद ये सभी मेरे द्वारा अभी-अभी प्रणव के वाच्य कहे गए हैं |

वर्णध्यानमकारस्यतिगोप्यं प्रवदाम्यहम् |
शरच्चन्द्रप्रतीकाशं पञ्चकोणमयं सदा ||२६||
पञ्चदेवमयं वर्णं शक्तित्रयसमन्वितम् |
निर्गुणं त्रिगुणोपेतं स्वयं कैवल्यमूर्तिमान् ||२७||
बिन्दुतत्त्वमयं वर्णं स्वयं प्रकृतिरूपिणी |
अकारो मातृकाद्योऽनन्तश्च विष्णुरनुत्तरः ||२८||
श्रीकण्ठश्च सुरेशश्च ललाटश्चैकमात्रकः |
पूर्णोदरी सृष्टिमेधौ सारस्वतः प्रियंवदः ||२९||
महाब्राह्मी वासुदेवो धनेशः केशवोऽमृतम् |
कीर्त्तिर्निवृत्तिर्वागीशो नरकारिर्हरो मरुत् ||३०||
ब्रह्मा वामाद्यजो ह्रस्वः करसूः प्रणवाद्यकः |
ब्रह्माणी कामरूपश्च कामेशी वासिनी वियत् ||३१||
विश्वेशः श्रीविष्णुकण्ठौ प्रतिपत्तिथिरंशिनी |
अर्कमण्डलवर्णाद्यौ ब्राह्मणः कामकर्षिणी ||३२||

अकार वर्ण का जो गुप्त ध्यान है उसे मैं कहता हूँ | शरत्कालीन चन्द्रमा के समान प्रकाश वाले पांच कोणों से युक्त, पञ्चदेवता वाला यह वर्ण तीन शक्तियों से युक्त होकर रहता है | यह तीनों गुणों से घिरा हुआ है, निर्गुण है, स्वयं केवल मूर्तिमान् है | बिन्दुतत्व से युक्त यह वर्ण स्वयं प्रकृतिरूप है | मैं अकार के पर्याय बताता हूँ | मातृका, आद्य, अनन्त, विष्णु, अनुत्तर, श्रीकंठ, सुरेश, ललाट, एकमात्रक, पूर्णोदरी, सृष्टि, मेधा, सारस्वत, प्रियंवद, महाब्राह्मी, वासुदेवो, धनेश, केशव, अमृत, कीर्त्ति, र्निवृत्ति, वागीश, नरकारि, हर, मरुत्, ब्रह्मा, वामा, आद्यज, ह्रस्व, करसू, प्रणव, आद्यक, ब्रह्माणी, कामरूप, कामेशी, वासिनी, वियत्, विश्वेश, श्रीविष्णु, कण्ठ, प्रतिपत्, तिथि, अंशिनी, अर्कमण्डल, वर्णाद्य, ब्राह्मण, कामकर्षिणी ये सब अकार के पर्याय हैं |

आकारं परमाश्चर्यं शङ्खज्योतिर्मयं वपुः |
ब्रह्मविष्णुमयं वर्णं तथा रुद्रमयं स्मृतम् ||३३||
पञ्चप्राणमयं वर्णं स्वयं परमकुण्डली |
एवं ध्यानं पुरा प्रोक्तमाकारस्य महर्षिभिः ||३४||
आकारो विजयानन्तो दीर्घच्छायो विनायकः |
क्षीरोदधिः पयोदश्च पाशो दीर्घास्यवृत्तकौ ||३५||
प्रचण्ड एकजो रुद्रो नारायण इभेश्वरः |
प्रतिष्ठा मानदाकान्तो विश्वान्तकगजान्तकौ ||३६||
पितामहो द्विठान्तो भूः क्रिया कान्तिश्च सम्भवः |
द्वितीया मानदा काशी विघ्नराजः कुजो वियत् ||३७||
स्वरान्तकश्च हृदयमङ्गुष्ठो भगमालिनी |
इकारस्य यथा प्रोक्तं तन्त्रे ध्यानं वदाम्यहम् ||३८||

आकार परम आश्चर्यरूप है | इसका शरीर शंख की ज्योति के समान है | इस वर्ण को ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्रमय बताया गया है | पांच प्राणों से युक्त यह स्वयं परम-कुण्डलिनी का स्वरूप है | इस प्रकार से आकार का ध्यान पूर्वकाल में महर्षियों के द्वारा बताया गया है | आकार के वाचक निम्न हैं - विजय, अनन्त, दीर्घच्छाया, विनायक, क्षीरोदधि, पयोद, पाश, दीर्घास्य, वृत्त या वृत्तक, प्रचण्ड, एकज, रुद्र, नारायण, इभेश्वर, प्रतिष्ठा, मानदाकान्त, विश्वान्तक, गजान्तक,पितामह, द्विठान्त, भूः, क्रिया, कान्ति, सम्भव, द्वितीया, मानदा, काशी, विघ्नराज, कुज, वियत्, स्वरान्तक, हृदय, अङ्गुष्ठ और भगमालिनी | तन्त्र में इकार का जैसा ध्यान बताया गया है, उसे कहता हूँ |

इकारं परमानन्दसुगन्धकुसुमच्छविम् |
हरिब्रह्ममयं वर्णं गुरुब्रह्ममयं तथा ||३९||
सदा रुद्रयुतञ्चैव सदा शक्तिमयं स्मृतम् |
सदाशिवमयं वर्णं परं ब्रह्मसमन्वितम् ||४०||
हरिब्रह्मात्मकं ध्यायेद्गुणत्रयसमन्वितम् |
इकारस्य वपुर्दिव्यं स्वयं कुण्डलिमूर्तिमान् ||४१||
इः सूक्ष्मा शाल्मली विद्या चन्द्रः पूषा सुगुह्यकः |
सुमित्रः सुन्दरो वीरः कोटरः काटरः पयः ||४२||
भ्रूमध्यं माधवस्तुष्टिर्दक्षनेत्रञ्च नासिका |
शान्तः कान्तः कामिनी च कामो विघ्नविनायकः ||४३||
नेपालो भरणी रुद्रो नित्या क्लिन्ना च पावकः |
ईकारस्य यथा प्रोक्तं तन्त्रे ध्यानं वदाम्यहम् ||४४||

इकार परमानन्द को देने वाले सुगन्धित पुष्प के समान छवि वाला है | यह वर्ण हरिब्रह्म और गुरुब्रह्म से युक्त, रुद्र एवं शक्ति से युक्त सदाशिवस्वरूपी और परब्रह्म

से समन्वित है | हरिब्रह्मरूपी इस वर्ण का ध्यान तीनों गुणों से युक्त स्वरूप में करना चाहिए | इस प्रकार से स्वयं मूर्तिमान् कुण्डलिनीरूपी इकार का दिव्य स्वरूप बताया गया है | सूक्ष्मा, शाल्मली, विद्या, चन्द्र, पूषा, सुगुह्यक, सुमित्र, सुन्दर, वीर, कोटर, काटर, पय, भ्रूमध्य, माधव, तुष्टि, दक्षनेत्र, नासिका, शान्त, कान्त, कामिनी, काम, विघ्नविनायक, नेपाल, भरणी, रुद्र, नित्या, क्लिन्ना और पावक, ये सभी ईकार के वाचक हैं | तन्त्र में ईकार का जैसा ध्यान बताया गया है, उसे कहता हूँ |

ईकारमपि पूर्वोक्तप्रकारेण प्रकीर्तितम् |
ब्रह्मविष्णुमयं रुद्रमयं परमकुण्डली ||४५||
पञ्चदेवमयं वर्णं पीतविद्युल्लताकृतिम् |
चतुर्ज्ञानमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा ||४६||
ईस्त्रिमूर्तिर्महामाया लोलाक्षी वामलोचनम् |
गोविन्दः शेखरः पुष्टिः सुभद्रा रत्नसंज्ञकः ||४७||
विष्णुर्लक्ष्मीः प्रहासश्च वाग्विशुद्धः परापरः |
कालोत्तरीयो भेरुण्डा रतिश्च पौण्ड्रवर्द्धनः ||४८||
शिवोत्तमः शिवा तुष्टिश्चतुर्थी बिन्दुमालिनी |
वैष्णवी वैन्दवी जिह्वा शान्तिस्त्रिपुरसुन्दरी ||४९||
पावकः कोटरः कीर्त्तिर्मोहनी कालकारिका |
सनादका कामकला कुचद्वन्द्वञ्च तर्जनी ||५०||

ईकार भी पूर्वोक्त (इकार) प्रकार से ही बताया गया है | यह परम कुण्डलिनीरूपी वर्ण ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्रमय है | यह पीले रंग के बिजली की रेखा के समान दिखता है, पांच देवता, चार ज्ञान एवं पांच प्राणों से युक्त है | त्रिमूर्ति, महामाया,

लोलाक्षी, वामलोचन, गोविन्द, शेखर, पुष्टि, सुभद्रा, रत्नसंज्ञक, विष्णु, लक्ष्मी, प्रहास, वाग्विशुद्ध, पर, अपर, काल, उत्तरीय, भेरुण्डा, रति, पौण्ड्रवर्द्धन, शिवोत्तम, शिवा, तुष्टि, चतुर्थी, बिन्दुमालिनी, वैष्णवी, वैन्दवी, जिह्वा, शान्ति, त्रिपुरसुन्दरी, पावक, कोटर, कीर्त्ति, मोहनी, कालकारिका, सनादका, कामकला, कुचद्वन्द्व और तर्जनी, ये सब ईकार के वाचक हैं |

ध्यानं वक्ष्याम्युकारस्याधोमुखी कुण्डली स्वयम् |
पीतचम्पकसङ्काशं पञ्चदेवमयं सदा ||५१||
पञ्चप्राणमयं प्रोक्तं चतुर्वर्गप्रदायकम् |
तस्य वाच्यानि वक्ष्यामि यथा शङ्करभाषितम् ||५२||
उः शङ्करो वर्त्तुलाक्षी भूतः कल्याणवाचकः |
अमरेशो दक्षकर्णः षड्वक्रो मोहनः शिवः ||५३||
उग्रः प्रभुर्धृतिर्विष्णुर्विश्वकर्मा महेश्वरः |
शत्रुघ्नश्चेटिका पुष्टिः पञ्चमी वह्निवासिनी ||५४||
कामघ्नः कामना चेशो मोहिनी विघ्नहृन्मही |
उटसूः कुटिला श्रोत्रं पारद्वीपो वृषो हरः ||५५||

उकार का ध्यान कहता हूँ जो नीचे की ओर मुख की हुई कुण्डलिनी है | पीले रंग के चम्पा के फूल के समान इसकी आभा है और यह पांच देवता तथा पांच प्राणों से युक्त है, चारों वर्ग (पुरुषार्थ) को देने वाला है | जैसा शिवजी ने कहा है, वैसा ही उसके वाच्यों को कहता हूँ | शङ्कर, वर्त्तुलाक्षी, भूत, कल्याण-वाचक, अमरेश, दक्षकर्ण, षड्वक्र, मोहन, शिव, उग्र, प्रभु, धृति, विष्णु, विश्वकर्मा, महेश्वर, शत्रुघ्न, चेटिका, पुष्टि, पञ्चमी, वह्निवासिनी, कामघ्न, कामना, ईश, मोहिनी, विघ्नहृत्, मही, उटसू, कुटिला, श्रोत्र, पारद्वीप, वृष और हर, ये सब उकार के पर्याय हैं |

शङ्खकुन्दसमाकारमूकारं परकुण्डली |
पञ्चप्राणमयं वर्णं पञ्चदेवमयं सदा ||५६||
धर्मार्थकाममोक्षञ्च सर्वदा सुखदायकम् |
ऊकारं चिन्तयेदेवं पीतविद्युल्लता तथा ||५७||
ऊः कण्टको रतिः शान्तिः क्रोधनो मधुसूदनः |
कामराजः कुजेशश्च महेशो वामकर्णकः ||५८||
अर्घीशो भैरवः सूक्ष्मो दीर्घघोणा सरस्वती |
विलासिनी विघ्नकर्त्ता लक्ष्मणो रूपकर्षिणी ||५९||
महाविद्येश्वरी षष्ठी षण्डो भूः कान्यकुब्जकः |
शेषाणां वर्णवाच्यानामग्रतः प्रवदाम्यहम् ||६०||

शंख एवं कुन्द के समान (श्वेत) वर्ण वाला परमकुण्डलिनीरूपी ऊकार है | यह सदैव पांच प्राण एवं पांच देवताओं से युक्त रहता है | धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष एवं सुख को सदैव प्रदान करता है | इस प्रकार से पीले रंग की बिजली की रेखा के समान ऊकार का चिन्तन करे | ऊकार के अभिधान निम्न प्रकार से हैं - कण्टक, रति, शान्ति, क्रोधन, मधुसूदन, कामराज, कुजेश, महेश, वामकर्णक, अर्घीश, भैरव, सूक्ष्म, दीर्घघोणा, सरस्वती, विलासिनी, विघ्नकर्त्ता, लक्ष्मण, रूपकर्षिणी, महाविद्येश्वरी, षष्ठी, षण्ड, भू एवं कान्यकुब्जक | शेष वर्णों के वाच्यों को आगे कहूँगा |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायामेकादशः पटलः ||
| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में एकादश पटल हुआ |

अथ द्वादशः पटलः

निग्रह उवाच

ऋकारस्य यथा रूपमागमेषु प्रकाशितम् |
तदहं संविधास्यामि वाच्यनामसमाश्रितम् ||०१||
ऋकारमीश्वरयुतङ्कुण्डली मूर्तिमान्स्वयम् |
अत्र ब्रह्मा च विष्णुश्च रुद्रश्चैव सदाशिवः ||०२||
पञ्चवर्णमयं वर्णं चतुर्ज्ञानमयं तथा |
रक्तविद्युल्लताकारमृकारं प्रणमाम्यहम् ||०३||
ऋः पूर्दीर्घमुखी रुद्रो देवमाता त्रिविक्रमः |
भावभूतिः क्रिया क्रूरा रेचिका नाशिका धृतः ||०४||
पूर्णगिरिः शिरो माला मण्डला शान्तिनी जलम् |
कर्णः कामलता मेषो निवृत्तिर्गणनायकः ||०५||
रोहिणी शिवदूती च एकपादश्च सप्तमी |
ॠकारस्य ज्वलद्रूपं वर्णयाम्यधुना शुभम् ||०६||

निग्रहाचार्य ने कहा - ऋकार का जैसा ध्यान आगमों में बताया गया है, उसे वाच्यनामों के साथ युक्त करके मैं कहूँगा | ऋकार ईश्वर से युक्त स्वयं मूर्तिमान् कुण्डली है | यहाँ ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र एवं सदाशिव हैं | पांच वर्ण एवं चार ज्ञान से युक्त, लाल रंग की बिजली की रेखा के समान ऋकार को मैं प्रणाम करता हूँ | पू, दीर्घमुखी, रुद्र, देवमाता, त्रिविक्रम, भाव, भूति, क्रिया, क्रूरा, रेचिका, नाशिका, धृत, पूर्णगिरि, शिर, माला, मण्डला, शान्तिनी, जल, कर्ण, कामलता, मेष, निवृत्ति, गणनायक, रोहिणी, शिवदूती, एकपाद और सप्तमी, ये सभी ऋकार के वाच्य हैं | अब मैं ॠकार के प्रज्वलित शुभ स्वरूप का वर्णन करता हूँ |

ॠकारं शक्तिसहितं त्रिभिः परमकुण्डलम् |
पीतविद्युल्लताकारं पञ्चदेवमयं सदा ||०७||
चतुर्ज्ञानमयं वर्णं पञ्चप्राणयुतं तथा |
ॠः क्रोधो वामनो वाणी गोऽतिथीशोऽथ श्रीर्धृतिः ||०८||
ऊर्द्धमुखी निशानाथः पद्ममाला विनष्टधीः |
शशिनी मोचिका श्रेष्ठा दैत्यमाता प्रतिष्ठिता ||०९||
एकदन्ताह्वयो माता हरिता मिथुनोदया |
कोमलः श्यामला मेधी प्रतिष्ठा पतिरष्टमी ||१०||
ब्रह्मण्यमपि कीलालं पावको गन्धकर्षिणी |
ऌकारन्तु महातेजा कुण्डली परदेवता ||११||
पञ्चप्राणयुतं वर्णं तथा गुणत्रयात्मकम् |
ब्रह्मादयः सुराः सर्वे तिष्ठन्ति सततं शुचौ ||१२||
पञ्चदेवमयं वर्णं चतुर्ज्ञानमयं सदा |
बिन्दुत्रयात्मकं वर्णं पीतविद्युल्लता यथा ||१३||

ॠकार अपनी तीन शक्तियों से युक्त और परमकुण्डलिनीस्वरूप है | यह पीले रंग की बिजली की रेखा के समान है और पांच देवता, चार ज्ञान तथा पांच प्राण से युक्त रहता है | क्रोध, वामन, वाणी, गो, अतिथि, ईश, श्री, धृति, ऊर्द्धमुखी, निशानाथ, पद्ममाला, विनष्टधी, शशिनी, मोचिका, श्रेष्ठा, दैत्यमाता, प्रतिष्ठिता, एकदन्ताह्वय, माता, हरिता, मिथुनोदया, कोमल, श्यामला, मेधी, प्रतिष्ठा, पति, अष्टमी, ब्रह्मण्य, कीलाल, पावक एवं गन्धकर्षिणी, ये सभी ॠकार के वाच्य हैं | ऌकार महान् तेजस्विता से युक्त परदेवता कुण्डलिनी है | यह वर्ण पञ्चप्राण एवं त्रिगुण से युक्त है | ब्रह्मादि सभी देवता इस पवित्र वर्ण में नित्य निवास करते हैं |

यह वर्ण पांच देवता एवं चार ज्ञान से युक्त है | तीन बिन्दुओं वाला यह वर्ण पीले रंग की बिजली की रेखा के समान प्रतीत होता है |

स्थाणुः श्रीधरः शुद्धो मेधा धूम्रो वको वियत् |
देवयोनिर्दक्षगण्डो वाहगः कुन्तरुद्रकौ ||१४||
विश्वेश्वरो दीर्घजिह्वा महेन्द्रो लाङ्गलिः परा |
चन्द्रिका पार्थिवो धूम्रा द्विदन्तः कामवर्द्धनः ||१५||
शुचिस्मिता च नवमी कान्तिरायातकेश्वरः |
काशश्चित्ताकर्षिणी च तृतीयः कुलसुन्दरी ||१६||

ऌकार के अभिधान निम्न हैं - स्थाणु, श्रीधर, शुद्ध, मेधा, धूम्र, वक, वियत्, देवयोनि, दक्षगण्ड, वाहग, कुन्त, रुद्र अथवा रुद्रक, विश्वेश्वर, दीर्घजिह्वा, महेन्द्र, लाङ्गलि, परा, चन्द्रिका, पार्थिवो, धूम्रा, द्विदन्त, कामवर्द्धन, शुचिस्मिता, नवमी, कान्ति, आयातकेश्वर, काश, चित्ताकर्षिणी, तृतीय एवं कुलसुन्दरी |

चतुर्वर्गप्रदं ॡकारं सुचन्द्रसमप्रभम् |
पञ्चदेवात्मकं बिन्दुत्रयगुणत्रयात्मकम् ||१७||
ॡकारः कमला हर्षा हृषीकेशो मधुव्रतः |
सूक्ष्मा कान्तिर्वामगण्डो रुद्रः कामोदरी सुरा ||१८||
शान्तिकृत्स्वस्तिका शक्रो मायावी लोलुपो वियत् |
दशमी सुस्थिरो माता नीलपीतो गजाननः ||१९||
कामिनी विश्वपा कालो नित्या शुद्धः शुचिः कृती |
सूर्यो धैर्योत्कर्षिणी च एकाकी दनुजप्रसूः ||२०||

चतुर्वर्ग (पुरुषार्थ) को देने वाला ऌकार सुन्दर चन्द्रमा के समान प्रभा वाला है | यह पांच देवता, तीन बिन्दु एवं तीन गुणों से युक्त है | ऌकार के पर्याय इस प्रकार हैं - कमला, हर्षा, हृषीकेश, मधुव्रत, सूक्ष्मा, कान्ति, वामगण्ड, रुद्र, कामोदरी, सुरा, शान्तिकृत्, स्वस्तिका, शक्र, मायावी, लोलुप, वियत्, दशमी, सुस्थिर, माता, नीलपीत, गजानन, कामिनी, विश्वपा, काल, नित्या, शुद्ध, शुचि, कृती अथवा कृति, सूर्य, धैर्योत्कर्षिणी अथवा धैर्य एवं उत्कर्षिणी, एकाकी एवं दनुजप्रसू |

एकारं परमं दिव्यं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् |
रञ्जिनीकुसुमप्रख्यं पञ्चदेवमयं सदा ||२१||
पञ्चप्राणात्मकं वर्णं तथा बिन्दुत्रयात्मकम् |
चतुर्वर्गप्रदं नित्यं स्वयं परमकुण्डली ||२२||
एकारो वाग्भवः शक्तिर्झिण्टीशोष्ठौ भगं मरुत् |
सूक्ष्मामृतोर्द्धकेशी च ज्योत्स्ना श्रद्धा प्रमर्दनः ||२३||
भयं ज्ञानं कृशा धीरा जङ्घा सर्वसमुद्भवः |
वह्निर्विष्णुर्भगवती कुण्डली मोहिनी रसः ||२४||
योषिदाधारशक्तिश्च त्रिकोणा ईशसंज्ञकः |
सन्धिरेकादशी भद्रा पद्मनाभः कुलाचलः ||२५||
विजया वामगण्डान्तः माक्षबीजञ्च कथ्यते |
ऐकारस्य स्वरूपं यत्तस्य वाच्यानि संश्रृणु ||२६||

एकार परम दिव्य है, ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव से युक्त है | रञ्जिनी के फूल के समान ख्यापित है, सदैव पञ्चदेवता से युक्त रहता है | पञ्च प्राण तथा तीन बिन्दु से युक्त रहता है | एकार चारों पुरुषार्थ की सिद्धि देने वाला स्वयं परमकुण्डलिनीरूप है | एकार को वाग्भव, शक्ति, झिण्टीश, ओष्ठ, भग, मरुत्, सूक्ष्म, अमृत, ऊर्द्धकेशी,

ज्योत्स्ना, श्रद्धा, प्रमर्दन, भय, ज्ञान, कृशा, धीरा, जङ्घा, सर्वसमुद्भव, वह्नि, विष्णु, भगवती, कुण्डली, मोहिनी, रस, योषित्, आधारशक्ति, त्रिकोणा, ईशसंज्ञक, सन्धि, एकादशी, भद्रा, पद्मनाभ, कुलाचल, विजया, वामगण्डान्त और माक्षबीज कहा जाता है | ऐकार के जो स्वरूप और वाच्य हैं, उन्हें सुनो |

ऐकारं परमं दिव्यं महाकुण्डलिनी स्वयम् |
कोटिचन्द्रप्रतीकाशं पञ्चप्राणमयं सदा ||२७||
ब्रह्मविष्णुमयं वर्णं तथा रुद्रमयं स्मृतम् |
सदाशिवमयं वर्णं बिन्दुत्रयसमन्वितम् ||२८||
ऐर्लज्जा भौतिकः कान्ता वायवी मोहिनी विभुः |
दक्षा दामोदरः प्रज्ञाधरो विकृतमुख्यपि ||२९||
क्षमात्मको जगद्योनिः परः परनिबोधकृत् |
ज्ञानामृता कपर्दी श्रीः पीठेशोऽग्निः समातृकः ||३०||
त्रिपुरा लोहिता राज्ञी वाग्भवो भौतिकासनः |
महेश्वरो द्वादशी च विमलश्च सरस्वती ||३१||
कामकोटो वामजानुरंशुमान् विजयो जटा |
ओकारस्य वपुर्दिव्यं पञ्चदेवमयं सदा ||३२||
रक्तविद्युल्लताकारं त्रिगुणात्मानमीश्वरम् |
पञ्चप्राणमयं वर्णं तस्य वाच्यं निशामय ||३३||
ओकारः सत्यपीयूषौ पश्चिमास्यः श्रुतिः स्थिरा |
सद्योजातो वासुदेवो गायत्री दीर्घजङ्घकः ||३४||
आप्यायनी चोर्द्धदन्तो लक्ष्मीर्वाणी सुखी द्विजः |

उद्देश्यदर्शकस्तीव्रः कैलासो वसुधाक्षरः ||३५||
प्रणवांशो ब्रह्मसूत्रमजेशः सर्वमङ्गला |
त्रयोदशी दीर्घनासा रतिनाथो दिगम्बरा ||३६||
त्रैलोक्यविजया प्रक्षा प्रीतिर्बीजादिकर्षिणी |
चतुर्दशस्वरो योऽसौ सेतुरौकारसंज्ञितः ||३७||
स चानुस्वारनादाभ्यां शूद्राणां सेतुरुच्यते |
सार्द्धद्विमात्रविस्तारं सेतोश्चास्य प्रकीर्तितम् ||३८||
रक्तविद्युल्लताकारञ्चतुर्वर्गप्रदायकम् |
सुरा ब्रह्मादयः सर्वे तिष्ठन्तीश्वरसंयुतम् ||३९||
सदाशिवपञ्चप्राणमयमौकारमीरितम् |
औकारः शक्तिको नादस्तैजसो वामजङ्घकः ||४०||
मणिबन्धो ग्रहेशश्च शङ्कुकर्णः सदाशिवः |
अधोदन्तञ्च कण्ठौष्ठौ सङ्कर्षणः सरस्वती ||४१||
आज्ञा चोर्द्धमुखी शान्तो व्यापिनी प्रकृतः पयः |
अनन्ता ज्वालिनी व्योमा चतुर्दशी रतिप्रियः ||४२||
नेत्रमात्माकर्षिणी च ज्वालामालिनिका भृगुः |
मनुरेतानि वाच्यानि प्रोक्तानि शम्भुना पुरा ||४३||

ऐकार परम दिव्य है, स्वयं महाकुण्डलिनी है | इसकी प्रभा करोड़ों चन्द्रमाओं के समान है और यह सदैव पांच प्राणों से युक्त रहता है | यह वर्ण ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्रमय बताया गया है | यह तीन बिन्दुओं से युक्त, सदाशिवमय है | ऐकार के अभिधान निम्न हैं - लज्जा, भौतिक, कान्ता, वायवी, मोहिनी, विभु, दक्षा, दामोदर, प्रज्ञाधर, विकृतमुखी, क्षमात्मक, जगद्योनि, पर, परनिबोधकृत्, ज्ञानामृता, कपर्दी,

श्री, पीठेश, अग्नि, समातृक, त्रिपुरा, लोहिता, राज्ञी, वाग्भव, भौतिकासन, महेश्वर, द्वादशी, विमल, सरस्वती, कामकोट, वामजानु, अंशुमान्, विजय और जटा | ओकार का शरीर दिव्य एवं सदैव पञ्चदेवमय है | लाल रंग की बिजली की रेखा के समान यह त्रिगुणात्मा और ईश्वर है | यह पांच प्राणों से युक्त है, इसके वाच्यों को ध्यान से सुनो | ओकार को सत्य, पीयूष, पश्चिमास्य, श्रुति, स्थिरा, सद्योजात, वासुदेव, गायत्री, दीर्घजङ्घ अथवा दीर्घजङ्घक, आप्यायनी, ऊर्द्धदन्त, लक्ष्मी, वाणी, सुखी, द्विज, उद्देश्यदर्शक, तीव्र, कैलास, वसुधाक्षर, प्रणवांश, ब्रह्मसूत्र, अजेश, सर्वमङ्गला, त्रयोदशी, दीर्घनासा, रतिनाथ, दिगम्बरा, त्रैलोक्यविजया, प्रक्षा, प्रीति, बीज, आदिकर्षिणी अथवा बीजादिकर्षिणी कहते हैं |

जो चौदहवाँ स्वर 'औकार' है, उसे सेतु कहते हैं | वह अनुस्वार एवं नाद के साथ संयुक्त (औं अथवा औम्) होकर शूद्रों का सेतु (प्रणव) कहलाता है | इस सेतु का विस्तार ढाई मात्रा का बताया गया है | लाल रंग की बिजली की रेखा के आकार वाला यह चारों पुरुषार्थों को देने वाला है | इसमें ईश्वर के साथ ब्रह्मा आदि सभी देवता रहते हैं | सदाशिव एवं पञ्चप्राण से युक्त यह औकार बताया गया है | औकार को शक्ति या शक्तिक, नाद, तैजस, वामजङ्घ अथवा वामजङ्घक, मणिबन्ध, ग्रहेश, शङ्कुकर्ण, सदाशिव, अधोदन्त, कण्ठ, ओष्ठ, सङ्कर्षण, सरस्वती, आज्ञा, ऊर्द्धमुखी, शान्त, व्यापिनी, प्रकृत, पय, अनन्ता, ज्वालिनी, व्योमा, चतुर्दशी, रतिप्रिय, नेत्र, आत्माकर्षिणी, ज्वालामालिनिका, भृगु और मनु कहते हैं | ये सब वाच्यशब्द पूर्वकाल में भगवान् शिव के द्वारा कहे गए थे |

अङ्कारं बिन्दुसंयुक्तं पीतविद्युत्समप्रभम् |
पञ्चप्राणात्मकं वर्णं ब्रह्मादिदेवतामयम् ||४४||
सर्वज्ञानमयं बिन्दुत्रययुक्तं मनोहरम् |
अङ्कारश्चक्षुषी दन्तो घटिका समगुह्यकः ||४५||

प्रद्युम्नः श्रीमुखी प्रीतिर्बीजयोनिर्वृषध्वजः |
परं शशी प्रमाणीशः सोमो बिन्दुः कलानिधिः ||४६||
अक्रूरश्चेतना नादः पूर्णा दुःखहरः शिवः |
शिरः शम्भुर्नरेशश्च सुखदुःखप्रवर्तकः ||४७||
पूर्णिमा रेवती शुद्धश्चरा कन्यावियद्रविः |
अमृताकर्षिणी शून्यं विचित्रा व्योमरूपिणी ||४८||
केदारो रात्रिनाथश्च कुब्जिका चैव बुद्बुदः |
अःकारं मूलवर्णन्तु विसर्गसहितं सदा ||४९||
पञ्चदेवमयं वर्णं रक्तविद्युत्प्रभामयम् |
आत्मादितत्त्वसंयुक्तं पञ्चप्राणमयं तथा ||५०||
बिन्दुत्रयसर्वज्ञानशक्तित्रयमयं स्मृतम् |
अः कण्ठको महासेनः कला पूर्णामृता हरिः ||५१||
इच्छा भद्रा गणेशश्च रतिर्विद्यामुखी सुखम् |
द्विबिन्दू रसना सोमोऽनिरुद्धो दुःखसूचकः ||५२||
द्विजिह्वः कुण्डलं वक्त्रं सर्गः शक्तिर्निशाकरः |
सुन्दरी सुयशानन्ता गणनाथो महेश्वरः ||५३||
स्वराः किशोरवयसाः गीतवाद्यादितत्पराः |
शिवस्य किङ्करा ह्येता नादब्रह्मकलायुताः ||५४||

अङ्कार बिन्दु से युक्त, पीले रंग की बिजली के समान प्रभा वाला है | यह वर्ण पञ्चप्राणात्मक और ब्रह्मादि देवताओं से युक्त है | यह सभी ज्ञानों से युक्त है, तीन बिन्दुओं से युक्त एवं मनोहर है | अङ्कार के अभिधान इस प्रकार हैं - चक्षु, दन्त,

घटिका, समगुह्यक, प्रद्युम्न, श्रीमुखी, प्रीति, बीजयोनि, वृषध्वज, पर, शशी अथवा शशि, प्रमाणीश, सोम, बिन्दु, कलानिधि, अक्रूर, चेतना, नाद, पूर्णा, दुःखहर, शिव, शिर, शम्भु, नरेश, सुखदुःखप्रवर्तक, पूर्णिमा, रेवती, शुद्ध, चरा, कन्या, वियत्, रवि, अमृताकर्षिणी अथवा अमृता एवं आकर्षिणी, शून्य, विचित्रा, व्योमरूपिणी, केदार, रात्रिनाथ, कुब्जिका और बुद्बुद |

अःकार मुख्यवर्ण (अकार) ही है किन्तु यह सदैव विसर्ग के साथ रहता है | यह पञ्चदेवमय है, लाल रंग की बिजली के समान प्रभा से युक्त है | आत्मा आदि तत्त्वों से युक्त है, पञ्चप्राणमय भी है | यह तीन बिन्दु, सभी प्रकार के ज्ञान एवं तीन शक्तियों से युक्त बताया गया है | अःकार के पर्याय इस प्रकार हैं - कण्ठक, महासेन, कला, पूर्णा, अमृता, हरि, इच्छा, भद्रा, गणेश, रति, विद्या-मुखी, सुख, द्विबिन्दू, रसना, सोम, अनिरुद्ध, दुःखसूचक, द्विजिह्व, कुण्डल, वक्र, सर्ग, शक्ति, निशाकर, सुन्दरी, सुयशा, अनन्ता, गणनाथ और महेश्वर | ये सभी स्वरवर्ण किशोरावस्था की आयु धारण करते हैं, गीत-वाद्य आदि में संलिप्त रहते हैं, नादब्रह्म (शब्दब्रह्म) की कला से युक्त हैं एवं भगवान् शिव के सेवक हैं |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायां द्वादशः पटलः ||

| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में द्वादश पटल हुआ |

अथ त्रयोदशः पटलः

निग्रह उवाच

अधुना संप्रवक्ष्यामि ककारतत्त्वमुत्तमम् |
रहस्यं परमाश्चर्यं त्रैलोक्यानान्निशामय ||०१||
जवायावकसिन्दूरसदृशीं कामिनीं पराम् |
चतुर्भुजां त्रिनेत्राञ्च बाहुवल्लीविराजिताम् ||०२||
कदम्बकलिकाकारस्तनद्वयविभूषिताम् |
रत्नकङ्कणकेयूरमङ्गदैरुपशोभिताम् ||०३||
रत्नहारैः पुष्पहारैः शोभितां परमेश्वरीम् |
ककारमातृकामेवं भक्त्या सञ्चिन्तयेत्सुधीः ||०४||

निग्रहाचार्य ने कहा - अब मैं उत्तम ककार तत्त्व को कहूँगा जो तीनों लोकों का परम आश्चर्य है, उसे ध्यान से सुनो | गुडहल, महावर अथवा सिन्दूर के समान लाल वर्ण की पराशक्ति कामिनी, जो चार भुजा एवं तीन नेत्रों से युक्त हैं, बाहुलता से विराजित हैं, रत्न से बने कंगन, केयूर एवं अंगद से शोभायमती हैं, रत्न एवं पुष्प से बने मालाओं से जो परमेश्वरी शोभित हो रही हैं, ऐसी ककार की मातृका का बुद्धिमान् व्यक्ति ध्यान करे |

कः क्रोधीशो महाकाली कामदेवः प्रकाशकः |
कपाली तेजसः शान्तिर्वासुदेवो जयानलः ||०५||
चक्री प्रजापतिः सृष्टिर्दक्षस्कन्धो निशापतिः |
अनन्तः पार्थिवो बिन्दुस्तापिनी परमार्थकः ||०६||

वर्गाद्यश्च मुखं ब्रह्मा सखाद्योऽम्भः शिवो जलम् |
माहेश्वरी तुला पुष्पं मङ्गलश्चरणं करः ||०७||
नित्या कामेश्वरी मुख्यः कामरूपो गजेन्द्रकः |
श्रीपुरं रमणो रङ्गः कुसुमा परमात्मकः ||०८||

ककार को क्रोधीश, महाकाली, कामदेव, प्रकाशक, कपाली, तेजस, शान्ति, वासुदेव, जयानल, चक्री, प्रजापति, सृष्टि, दक्षस्कन्ध, निशापति, अनन्त, पार्थिव, बिन्दु, तापिनी, परमार्थक, वर्गाद्य, मुख, ब्रह्मा, सखाद्य, अम्भ, शिव, जल, माहेश्वरी, तुला, पुष्प, मङ्गल, चरण, कर, नित्या, कामेश्वरी, मुख्य, कामरूप, गजेन्द्र अथवा गजेन्द्रक, श्रीपुर, रमण, रङ्ग, कुसुमा और परमात्मक भी कहते हैं |

खकारं परमाश्चर्यं शङ्खकुन्दसमप्रभम् |
कोणत्रययुतं शून्यं बिन्दुत्रयसमन्वितम् ||०९||
गुणत्रययुतं नित्यं पञ्चदेवमयं सदा |
त्रिशक्तिसंयुतं वर्णं खकारं प्रणमाम्यहम् ||१०||
बन्धूकपुष्पसङ्काशां रत्नालङ्कारभूषिताम् |
वराभयकरीं नित्यामीषद्धास्यमुखीं पराम् ||११||
एवं खमातृकां ध्यायेत् खवर्णस्य सुसिद्धये |
खः प्रचण्डः कामरूपी ऋद्धिर्वह्निः सरस्वती ||१२||
आकाशमिन्द्रियं दुर्गा चण्डीशस्तापिनी गुरुः |
शिखण्डी दन्तजातीशः कफोणिर्गरुतो यतिः ||१३||
शून्यं कपाली कल्याणी सूर्पकर्णोऽजरामरः |
शुभ्राग्नेया चण्डलिङ्गो जनव्याहारखड्गकौ ||१४||

खकार परमाश्चर्य है, शङ्ख और कुन्द के समान शुभ्र प्रभा वाला है | तीन कोणों से युक्त, शून्यरूपी, तीन बिन्दुओं से युक्त है | तीनों गुणों से युक्त हैं, नित्य है और सदैव पञ्चदेवताओं से युक्त रहता है | तीन शक्तियों से युक्त ऐसे खकार वर्ण मैं प्रणाम करता हूँ | बन्धूक के पुष्प के समान आभा वाली, रत्नों के आभूषणों से सजी हुई, वर एवं अभय मुद्रा को धारण करने वाली, नित्या और परा, मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई खमातृका का इस प्रकार से खवर्ण की सिद्धि के लिये ध्यान करे | खकार के पर्याय इस प्रकार हैं - प्रचण्ड, कामरूपी, ऋद्धि, वह्नि, सरस्वती, आकाश, इन्द्रिय, दुर्गा, चण्डीश, तापिनी, गुरु, शिखण्डी, दन्तजातीश, कफोणि, गरुत्, यति, शून्य, कपाली, कल्याणी, सूर्पकर्ण, अजर, अमर, शुभ्र, आग्नेय, चण्डलिङ्ग, जनव्याहार और खड्गक |

गकारो गाणपत्याख्यं पञ्चदेवात्मकं सदा |
निर्गुणं त्रिगुणोपेतं निरीहं निर्मलं सदा ||१५||
पञ्चप्राणमयं वर्णं सर्वशक्त्यात्मकं स्मृतम् |
दाडिमीपुष्पसङ्काशां चतुर्बाहुसमन्विताम् ||१६||
रक्ताम्बरधरां नित्यां रत्नालङ्कारभूषिताम् |
अरुणादित्यसङ्काशां मातृकां प्रणमाम्यहम् ||१७||
गो गौरी गौरवो गङ्गा गणेशो गोकुलेश्वरः |
शार्ङ्गी पञ्चान्तको गाथा गन्धर्वः सर्वगः स्मृतिः ||१८||
सर्वसिद्धिः प्रभा धूम्रा द्विजाख्यः शिवदर्शनः |
विश्वात्मा गौः पृथग्रूपा बालबद्धस्त्रिलोचनः ||१९||
गीतं सरस्वती विद्या भोगिनी नन्दनो धरा |
भोगवती च हृदयं ज्ञानं जालन्धरो लवः ||२०||

गकार को गाणपत्यबीज कहते हैं जो सदैव पञ्चदेवात्मक है | यह निर्गुण भी है और तीनों गुणों से ढका हुआ भी है, सदैव निरीह एवं निर्मल है | इस वर्ण को पांच प्राण एवं सभी शक्तियों से युक्त बताया गया है | अनार के फूल के समान आभा वाली, चार भुजाओं से युक्त, लाल रंग के वस्त्रों को धारण करने वाली, नित्य-स्वरूपिणी, रत्न के बने आभूषणों से सुसज्जित, प्रातःकाल के सूर्य के समान दिखाई देने वाले वाली गकार की मातृका को मैं प्रणाम करता हूँ | गकार को गौरी, गौरव, गङ्गा, गणेश, गोकुलेश्वर, शार्ङ्गी, पञ्चान्तक, गाथा, गन्धर्व, सर्वग, स्मृति, सर्वसिद्धि, प्रभा, धूम्रा, द्विजाख्य, शिवदर्शन, विश्वात्मा, गौ, पृथग्रूपा, बालबद्ध, त्रिलोचन, गीत, सरस्वती, विद्या, भोगिनी, नन्दन, धरा, भोगवती, हृदय, ज्ञान, जालन्धर एवं लव कहते हैं |

घकारवर्णपुरुषश्चतुष्कोणात्मकः सदा |
पञ्चदेवमयं वर्णमरुणादित्यसन्निभम् ||२१||
निर्गुणं त्रिगुणोपेतं सदा त्रिगुणसंयुतम् |
घकारमातृकां शान्तां सर्वदां प्रणमाम्यहम् ||२२||
मालतीपुष्पवर्णाभां षड्भुजां रक्तलोचनाम् |
शुक्लाम्बरपरीधानां शुक्लमाल्यविभूषिताम् ||२३||
सदा स्मेरमुखीं रम्यां लोचनत्रयराजिताम् |
एवं ध्यात्वा घकारस्य वाचकानि ब्रवीम्यहम् ||२४||
घः खड्गी घुर्घुरो घण्टी घण्टीशस्त्रिपुरान्तकः |
वायुः शिवोत्तमः सत्या किङ्किणी घोरनायकः ||२५||
मरीचिर्वरुणो मेधा कालरूपी च दाम्भिकः |
लम्बोदरा ज्वालमूलं नन्देशो हननं ध्वनिः ||२६||
त्रैलोक्यविद्या संहर्त्ता कामाख्यमनघामयः |

सर्वदेवमयं वर्णं त्रिगुणं लोललोचनम् ||२७||
पञ्चप्राणमयं वर्णं ङकारं प्रणमाम्यहम् |
धूम्रवर्णां महाघोरां ललज्जिह्वां चतुर्भुजाम् ||२८||
पीताम्बरपरीधानां साधकाभीष्टसिद्धिदाम् |
वर्णमाता ङकारस्य स्वयं परमकुण्डली ||२९||
ङः शङ्खी भैरवश्चण्डो बिन्दूत्तंसः शिशुप्रियः |
एकरुद्रो दक्षनखः खर्परो विषयस्पृहा ||३०||
कान्तिः श्वेताह्वयो धीरो द्विजात्मा ज्वालिनी वियत् |
मन्त्रशक्तिश्च मदनो विघ्नेशी चात्मनायकः ||३१||
एकनेत्रो महानन्दो दुर्द्धरश्चन्द्रमा यतिः |
शिवयोषा नीलकण्ठः कामेशी च मयांशुकौ ||३२||

घकार का वर्णपुरुष सदैव चार कोणों से युक्त रहता है | यह वर्ण पांच देवताओं से युक्त एवं प्रातःकाल के सूर्य के समान प्रभा वाला है | निर्गुण होने पर भी तीन गुणों से ढका हुआ एवं उनसे संयुक्त होता है | सबकुछ प्रदान करने वाली, शान्त स्वभाव वाली घकार की मातृका को मैं प्रणाम करता हूँ | वे मालती के पुष्प के समान वर्ण वाली हैं, छः हाथों एवं लाल आंखों से युक्त हैं, शुक्लवर्ण के वस्त्रों को धारण करती हैं, शुक्लवर्ण के ही पुष्पों की माला धारण करती हैं | वे मुस्कुराते हुए मुखमण्डल वाली, आनन्द देने वाली एवं तीन नेत्रों से युक्त हैं, इस प्रकार से ध्यान करके मैं घकार के वाचकों को कहता हूँ खड्गी, घुर्घुर, घण्टी, घण्टीश, त्रिपुरान्तक, वायु, शिवोत्तम अथवा शिव एवं उत्तम, सत्या, किङ्किणी, घोरनायक, मरीचि, वरुण, मेधा, कालरूपी, दाम्भिक, लम्बोदरा, ज्वालमूल, नन्देश, हनन, ध्वनि, त्रैलोक्यविद्या, संहर्त्ता, कामाख्य अथवा काम, अनघामय अथवा अनघ एवं आमय, ये सब घकार के वाचक हैं |

चञ्चल नेत्रों वाले, सभी देवताओं से युक्त, तीन गुणों एवं पांच प्राणों वाले ङकार वर्ण को मैं प्रणाम करता हूँ | धुवें के समान वर्ण वाली, अत्यन्त घोर, लपलपाती जीभ एवं चार भुजाओं वाली, पीले रंग के वस्त्रों को धारण करने वाली, साधक को उसकी मनोवांछित सिद्धि देने वाली, स्वयं परमकुण्डलिनी ङकार की वर्णमातृका होती हैं | ङकार को शङ्खी, भैरव, चण्ड, बिन्दूत्तंस अथवा बिन्दु एवं उत्तंस, शिशुप्रिय, एकरुद्र, दक्षनख, खर्पर, विषयस्पृहा अथवा विषय एवं स्पृहा, कान्ति, श्वेताह्वय, धीर, द्विजात्मा, ज्वालिनी, वियत्, मन्त्रशक्ति, मदन, विघ्नेशी, आत्मनायक, एकनेत्र, महानन्द, दुर्द्धर, चन्द्रमा, यति, शिवयोषा, नीलकण्ठ, कामेशी, मय एवं अंशुक कहते हैं |

चवर्णं कुण्डलीयुक्तञ्चतुर्वर्गप्रदायकम् |
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं सदा ||३३||
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिबिन्दुसहितं स्मृतम् |
तुषारकुन्दपुष्पाभां नानालङ्कारभूषिताम् ||३४||
सदा षोडशवर्षीयां वराभयकरां पराम् |
शुक्लवस्त्रावृतकटिं शुक्लवस्त्रोत्तरीयिणीम् ||३५||
वरदां शोभनां रम्यामष्टबाहुसमन्विताम् |
एवं ध्यात्वा चकारस्य मातृकां परिचिन्तयेत् ||३६||
चः पुष्करो हली वाणी चात्मशक्तिः सुदर्शनः |
चतुर्मुण्डधरो भौमो महिषाचारसम्बिनी ||३७||
एकरूपो रुचिः कूर्मश्चामुण्डा दीर्घबालुकः |
वामबाहुर्मूलमाया चतुर्मूर्तिस्वरूपिणी ||३८||
दयितश्च द्विनेत्रश्च लक्ष्मीस्त्रितयलोचनः |
चन्दनं चन्द्रमा दैवश्चेतना वृश्चिको बुधः ||३९||

देवी कीटमुखीच्छात्मा कौमारी पूर्वफाल्गुनी |
मूलावती मेदिनी च वायुरनङ्गमेखला ||४०||

चवर्ण कुण्डलिनी से युक्त, चतुर्वर्ग को देने वाला, सदैव पञ्चदेवता एवं पञ्चप्राण से युक्त रहता है | इस वर्ण को तीन शक्ति एवं तीन बिन्दुओं से युक्त बताया गया है | बर्फ एवं कुन्द के पुष्प के समान श्वेतवर्ण वाली, अनेकों आभूषणों से सुसज्जित, सदैव सोलह वर्ष की अवस्था वाली पराशक्ति, जिसने हाथों में वर तथा अभय मुद्रा को धारण किया है, अपनी कमर में श्वेतवर्ण के वस्त्र को लपेट रखा है, श्वेतवस्त्र को ही उत्तरीय (दुपट्टा अथवा ओढनी) के रूप में धारण किया हुआ है, ऐसी वर प्रदान करने वाली, सुन्दर, आठ भुजाओं से युक्त चकार की मातृका का चिन्तन करे | चकार के वाचक इस प्रकार हैं - पुष्कर, हली, वाणी, आत्मशक्ति, सुदर्शन, चतुर्मुण्डधर, भौम, महिषाचारसम्बिनी, एकरूप, रुचि, कूर्म, चामुण्डा, दीर्घबालुक, वामबाहु, मूलमाया, चतुर्मूर्तिस्वरूपिणी, दयित, द्विनेत्र, लक्ष्मी, त्रितयलोचन, चन्दन, चन्द्रमा, दैव, चेतना, वृश्चिक, बुध, देवी, कीटमुखी, इच्छा, आत्मा, कौमारी, पूर्वफाल्गुनी, मूलावती, मेदिनी, वायु और अनङ्गमेखला |

छकारं कुण्डलीयुक्तं सदा ईश्वरसंयुतम्|
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं सदा ||४१||
पीतविद्युल्लताकारं छकारं प्रणमाम्यहम् |
पीताम्बरधरा नित्या वरदा भक्तवत्सला ||४२||
ध्यानमस्य मातृकाया द्विभुजा तु त्रिलोचना |
छश्छन्दनं सुषुम्णा च पशुः पशुपतिर्मृतिः ||४३||
निर्मलं तरलं वह्निर्भूतमात्रा विलासिनी |
एकनेत्रश्च वृषली द्विशिरा वामकूर्परः ||४४||

गोकर्णा लाङ्गली वामः कामकर्ता सदाशिवः |
माता निशाचरः पायुर्विक्षतः स्थितिशब्दकः ||४५||

छकार सदा कुण्डलिनी एवं ईश्वर से संयुक्त रहता है | यह वर्ण पञ्चदेवता एवं पञ्चप्राणों से सदैव युक्त रहता है | पीले रंग की बिजली की रेखा के समान दिखने वाले छकार को मैं प्रणाम करता हूँ | वह अविनाशिनी शक्ति पीले रंग के वस्त्रों को धारण करती है, वरदान देती है, भक्तों का पुत्रभाव से पालन करती है, दो हाथ एवं तीन नेत्रों वाली है, इस प्रकार से इस (छकार) की मातृका का ध्यान है | छकार के पर्याय इस प्रकार हैं - छन्दन, सुषुम्णा, पशु, पशुपति, मृति, निर्मल, तरल, वह्नि, भूतमात्रा, विलासिनी, एकनेत्र, वृषली, द्विशिरा, वामकूर्पर, गोकर्णा, लाङ्गली, वाम, कामकर्ता, सदाशिव, माता, निशाचर, पायु, विक्षत, स्थितिशब्दक अथवा स्थिति एवं शब्द |

शरच्चन्द्रप्रतीकाशञ्जाख्यं त्रिगुणसंयुतम् |
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा ||४६||
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिबिन्दुसहितं तथा |
नानालङ्कारसंयुक्तैर्भुजैर्द्वादशभिर्युता ||४७||
रक्तचन्दनदिग्धाङ्गी विचित्राम्बरधारिणी |
त्रिलोचना जगद्धात्री वरदा भक्तवत्सला ||४८||
ध्यानमस्य मातृकाया आमगेषु प्रकाशितम् |
जः शवो वानरः शूली भोगदा विजया स्थिरा ||४९||
ललदेवो जयो जेता धातकी सुमुखी विभुः |
लम्बोदरी स्मृतिः शाखा सुप्रभा कर्त्तृका धरा ||५०||
दीर्घबाहू रुचिर्हंसो नन्दी तेजः सुराधिपः |

जवनो वेगितो वामो मानवाक्षः सदात्मकः ||५१||
हृन्मारुतेश्वरो वेगी चामोदो मदविह्वलः |
झकारमातृकाध्यानं ब्रह्मरूपेति कीर्तितम् ||५२||
सन्तप्तहेमवर्णाभा रक्ताम्बरविभूषिता |
रक्तचन्दनलिप्ताङ्गी रक्तमाल्यसुशोभिता ||५३||
चतुर्दशभुजा देवी रत्नहारोज्ज्वला परा |
झकारमातृका साक्षात्कुण्डली मोक्षरूपिणी ||५४||
रक्तविद्युल्लताकारं वर्णं त्रिगुणसंयुतम् |
पञ्चदेवमयं प्रोक्तं पञ्चप्राणात्मकं सदा ||५५||
त्रिबिन्दुसहितं वर्णं त्रिशक्तिसहितं तथा |
झो झङ्कारी गुहो झञ्झावायुः सत्यः षडुन्नतः ||५६||
अजेशो द्राविणी नादः पाशी जिह्वा जलं स्थितिः |
विराजेन्द्रो धनुर्हस्तः कर्कशो नादजः कुजः ||५७||
दीर्घबाहुबलो रूपमाकन्दितः सुचञ्चलः |
आत्मा च दुर्मुखो नष्टो विकटा कुचमण्डलम् ||५८||
कलहंसप्रिया वामा अङ्गुलीमध्यपर्वकः |
दक्षहासाट्टहासश्च पापात्मा व्यञ्जनं स्वरः ||५९||

शरद्दतु के चन्द्रमा के समान प्रकाश वाला जकार तीन गुणों से युक्त रहता है | यह वर्ण सदैव पांच देवता, पांच वर्ण, तीन बिन्दु एवं तीन शक्तियों से युक्त रहता है | अनेक प्रकारों के आभूषणों से सजी हुई, बारह हाथों वाली, रक्तचन्दन से विलेपित अंगों वाली, विचित्र वस्त्रों को धारण करने वाली, तीन नेत्रों से युक्त, संसार का पालन करने वाली, वरदान देने वाली एवं भक्तों के प्रति वात्सल्यभाव का प्रदर्शन

करने वाली, इस प्रकार से जकार की मातृका का ध्यान आगमग्रन्थों में बताया गया है | जकार के पर्याय निम्न हैं - शव, वानर, शूली, भोगदा, विजया, स्थिरा, ललदेव, जय, जेता, धातकी, सुमुखी, विभु, लम्बोदरी, स्मृति, शाखा, सुप्रभा, कर्त्तृका, धरा, दीर्घबाहू, रुचि, हंस, नन्दी, तेज, सुराधिप, जवन, वेगित, वाम, मानवाक्ष, सदात्मक, ह्न्मारुतेश्वर, वेगी, आमोद एवं मदविह्वल | झकार की मातृका का ध्यान 'ब्रह्मरूपा', ऐसा कहा गया है | तपाये गये सुवर्ण के समान आभा वाली, लाल रंग के वस्त्रों से विभूषित, लाल चन्दन से लिप्त शरीर वाली, लाल रंग के फूलों की माला से सुशोभित, चौदह हाथों वाली देवी, रत्नों से बने हार के समान उज्ज्वल, पराशक्ति, जो साक्षात् मोक्षरूपिणी कुण्डलिनी है, वह झकार की मातृका कही गयी है | झकार लाल रंग की बिजली की रेखा के समान आकृति वाला है, तीन गुणों से युक्त है, इसे सदैव पांच देवता एवं पांच प्राणों से युक्त बताया गया है | यह वर्ण तीन बिन्दु एवं तीन शक्तियों से युक्त है | झकार के अभिधान इस प्रकार हैं - झङ्कारी, गुह, झञ्झावायु, सत्य, षडुन्नत, अजेश, द्राविणी, नाद, पाशी, जिह्वा, जल, स्थिति, विराजेन्द्र, धनुर्हस्त अथवा धनु एवं हस्त, कर्कश, नादज, कुज, दीर्घबाहुबल अथवा दीर्घ, बाहु एवं बल, रूप, आकन्दित, सुचञ्चल, आत्मा, दुर्मुख, नष्ट, विकटा, कुचमण्डल, कलहंसप्रिया, वामा, अङ्गुलीमध्यपर्वक, दक्षहास, अट्टहास, पापात्मा, व्यञ्जन एवं स्वर |

चतुर्भुजां धूम्रवर्णां कृष्णाम्बरविभूषिताम् |
नानालङ्कारसंयुक्तां जटामुकुटराजिताम् ||६०||
ईषद्धास्यमुखीं नित्यां वरदां भक्तवत्सलाम् |
एवं ञमातृकां ध्यायेद्यथा प्रोक्ता महर्षिभिः ||६१||
सर्वदेश्वरसंयुक्तं ञकारं परकुण्डली |
रक्तविद्युल्लताकारं त्रिशक्तिबिन्दुसंयुतम् ||६२||

पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं सदा |
ञकारो बोधनी विश्वा कुण्डली सुखदो वियत् ||६३||
कौमारी नागविज्ञानी सव्याङ्गुलनखो वकः |
शर्वेशश्चूर्णिता बुद्धिः स्वर्गात्मा घर्घरध्वनिः ||६४||
धर्मैकपादः सुमुखो विरजा चन्दनेश्वरी |
गायनः पुष्पधन्वा च रागात्मा च वराक्षिणी ||६५||
एवं वै कचवर्गाभ्यां मातरो वाचकानि च |
सम्प्रोक्तानि मया शेषान्यग्रे चैव वदाम्यहम् ||६६||

चार भुजाओं वाली, धुवें के समान रंग वाली, काले वस्त्रों से विभूषित, अनेकों अलङ्कारों से युक्त, जटाओं का ही मुकुट धारण करने वाली, मन्द-मन्द मुस्कुराहट से युक्त, अविनाशिनी, वरदान देने वाली, भक्तों का पुत्रभाव से पालन करने वाली, इस प्रकार से जैसे रूप में महर्षियों के द्वारा कही गयी है, उस प्रकार से ञमातृका का ध्यान करे | ञकार सदैव ईश्वर से युक्त रहने वाली परमकुण्डलिनी ही है | लाल रंग की बिजली की रेखा के समान आकृति वाली, तीन शक्ति एवं तीन बिन्दुओं से युक्त है | यह वर्ण सदैव पञ्चदेव एवं पञ्चप्राण से युक्त है | ञकार को बोधनी, विश्वा, कुण्डली, सुखद, वियत्,कौमारी, नागविज्ञानी, सव्याङ्गुलनख, वक, शर्वेश अथवा शर्व एवं ईश, चूर्णिता, बुद्धि, स्वर्गात्मा, घर्घरध्वनि, धर्म, एकपाद, सुमुख, विरजा, चन्दनेश्वरी अथवा चन्दन एवं ईश्वरी, गायन, पुष्पधन्वा, रागात्मा एवं वराक्षिणी कहते हैं | इस प्रकार से कवर्ग एवं चवर्ग के वर्णों की मातृका तथा वाचक मेरे द्वारा कहे गए हैं तथा शेष वर्णों के विषय में आगे कहता हूँ |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायां त्रयोदशः पटलः ||

| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में त्रयोदश पटल हुआ |

अथ चतुर्दशः पटलः

निग्रह उवाच

टकारमातृकाध्यानं प्रवक्ष्याम्यधुना श्रृणु |
मालतीपुष्पवर्णाभा पूर्णचन्द्रनिभेक्षणा ||०१||
दशबाहुसमायुक्ता सर्वालङ्कारसंयुता |
परमोक्षप्रदा नित्या सदा स्मेरमुखी परा ||०२||
टकारं वै पञ्चप्राणगुणत्रयसमन्वितम् |
कोटिविद्युल्लताकारं पञ्चदेवमयं सदा ||०३||
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिबिन्दुसहितं स्मृतम् |
टष्टङ्कारः कपाली च सोमजा खेचरी ध्वनिः ||०४||
मुकुन्दो विनदा पृथ्वी वैष्णवी वारुणी नवः |
दक्षाङ्गकार्द्धचन्द्रश्च जरा भूतिः पुनर्भवः ||०५||
बृहस्पतिर्धनुश्चित्रा प्रमोदा विमला कटिः |
गिरिर्महाधनू राजा घ्राणात्मा सुमुखो मरुत् ||०६||

निग्रहाचार्य ने कहा - अब मैं टकार की मातृका का ध्यान कहता हूँ, उसे सुनो | मालती के पुष्प के समान वर्ण वाली, देखने में पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान, दस हाथों एवं सभी प्रकार के आभूषणों से युक्त, परम मोक्ष को देने वाली अथवा दूसरों को मोक्ष देने वाली पराशक्ति सदैव मन्द मन्द मुस्कुराती रहती है | टकार पञ्चप्राण एवं त्रिगुण से युक्त रहता है | करोड़ों बिजलियों की रेखा के समान प्रकाशित होता है एवं पञ्चदेवताओं से युक्त रहता है | यह वर्ण तीन शक्ति एवं तीन बिन्दुओं के सहित बताया गया है | टकार के वाचक इस प्रकार है - टङ्कार, कपाली, सोमजा,

खेचरी, ध्वनि, मुकुन्द, विनदा, पृथ्वी, वैष्णवी, वारुणी, नव, दक्षाङ्कक, अर्द्धचन्द्र, जरा, भूति, पुनर्भव, बृहस्पति, धनु, चित्रा, प्रमोदा, विमला, कटि, गिरि, महाधनु, राजा, घ्राणात्मा, सुमुख और मरुत् |

ठकारमातृका या तु तस्या ध्यानं निशामय |
पूर्णचन्द्रप्रभां देवीं विकसत्पङ्कजेक्षणाम् ||०७||
सुन्दरीं षोडशभुजां धर्मकामार्थमोक्षदाम् |
एवं ध्यात्वा ब्रह्मरूपां वर्णरूपं सुचिन्तयेत् ||०८||
पञ्चप्राणपञ्चदेवयुतं ठवर्णमुच्यते |
पीतविद्युल्लताकारं त्रिशक्तिगुणबिन्दुभिः ||०९||

ठकार की जो मातृका है, उसका ध्यान सावधानीपूर्वक सुनो | पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान प्रकाशित देवी, जिसके नेत्र खिले हुए कमल की पंखुड़ियों के समान हैं, ऐसी सोलह भुजाओं वाली, धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष को देने वाली ब्रह्मरूपा सुन्दरी का ध्यान करने के बाद वर्ण के रूप का चिन्तन करे | पांच प्राण एवं पांच देवताओं से युक्त ठवर्ण कहा जाता है | यह पीले रंग की बिजली की रेखा के समान आकृति वाला है तथा तीन शक्ति, तीन गुण एवं तीन बिन्दुओं से युक्त रहता है |

ठः शून्यं मञ्जरी बीजं पाणिनी लाङ्गली क्षया |
वनजो नन्दनो जिह्वा सुनञ्जो घूर्णकः सुधा ||१०||
वर्त्तुलः कुण्डलो वह्निरमृतं चन्द्रमण्डलः |
दक्षजानूरुभावौ च देवभक्षो बृहद्धनिः ||११||
एकपादो विभूतिश्च ललाटं सर्वमित्रकः |
वृषघ्नो नलिनी विष्णुर्महेशो ग्रामणीः शशी ||१२||

ठकार को शून्य, मञ्जरी, बीज, पाणिनी, लाङ्गली, क्षया, वनज, नन्दन, जिह्वा, सुनञ्ज, घूर्णक, सुधा, वर्त्तुल, कुण्डल, वह्नि, अमृत, चन्द्रमण्डल, दक्षजानु, उरुभाव, देवभक्ष, बृहद्ध्वनि, एकपाद, विभूति, ललाट, सर्वमित्रक, वृषघ्न, नलिनी, विष्णु, महेश, ग्रामणी एवं शशी अथवा शशि कहते हैं |

जवासिन्दूरसङ्काशां वराभयकरां पराम् |
त्रिनेत्रां वरदां नित्यां परमोक्षप्रदायिनीम् ||१३||
एवं ध्यात्वा डकारस्य तस्या वर्णं समुच्चरेत् |
पञ्चप्राणपञ्चदेवयुतं डवर्णमुच्यते ||१४||
चतुर्ज्ञानमयं वर्णमात्मादितत्त्वसंयुतम् |
पीतविद्युल्लताकारं डकारं प्रणमाम्यहम् ||१५||
डः स्मृतिर्दारुको नन्दिरूपिणी योगिनीप्रियः |
कौमारी शङ्करस्त्रासस्त्रिवक्रो नदको ध्वनिः ||१६||
दुरूहो जटिली भीमा द्विजिह्वः पृथिवी सती |
क्षमा कोलगिरिर्कान्तिर्नाभिः स्वाती च लोचनम् ||१७||

जवा (गुडहल) के पुष्प एवं सिन्दूर के समान रक्तवर्ण वाली पराशक्ति, हाथों में वर एवं अभय मुद्राओं को धारण करने वाली, तीन नेत्रों वाली, अभीष्ट वरदान को देने वाली, अविनाशिनी, परमपद को देने वाली अथवा दूसरों को मोक्ष देने वाली, इस प्रकार से डकार की मातृका का चिन्तन करके उसके वर्ण का उच्चारण करे | डवर्ण पांच प्राण एवं पांच देवताओं से युक्त कहा जाता है | चार ज्ञान एवं आत्मादि तत्त्वों से युक्त, पीले रंग की बिजली की रेखा के समान दिखने वाले डकार को मैं प्रणाम करता हूँ | डकार को स्मृति, दारुक, नन्दिरूपिणी, योगिनीप्रिय अथवा योगिनी एवं प्रिय, कौमारी, शङ्कर, त्रास, त्रिवक्र, नदक, ध्वनि, दुरूह, जटिली, भीमा, द्विजिह्व, पृथिवी, सती, क्षमा, कोलगिरि, कान्ति, नाभि, स्वाती और लोचन कहते हैं |

रक्तोत्पलनिभां रम्यां रक्तपङ्कजलोचनाम् |
अष्टादशभुजां भीमां महामोक्षप्रदायिनीम् ||१८||
एवं ध्यात्वा ब्रह्मरूपां ढकारमातृकाञ्जपेत् |
ढकारं परमाराध्यं या स्वयं कुण्डली परा ||१९||
पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा |
सदा त्रिगुणसंयुक्तमात्मादितत्त्वसंयुतम् ||२०||
रक्तविद्युल्लताकारं ढकारं प्रणमाम्यहम् |
ढो ढक्का निर्णयः पूर्वो यज्ञेशश्च नदेश्वरः ||२१||
अर्द्धनारीश्वरस्तोयमीश्वरी त्रिशिखी नवः |
दक्षपादाङ्गुलेर्मूलं सिद्धिदण्डो विनायकः ||२२||
प्रहासस्त्रिभवा ऋद्धिर्निर्गुणो निधनं ध्वनिः |
विघ्नेशः पालिनी त्वक्कधारिणी क्रोडपुच्छकः ||२३||
एलापुरं त्वगात्मा च विशाखा श्रीर्मनो रतिः |
ध्यानमस्य णकारस्य प्रवक्ष्यामि च तच्छृणु ||२४||

लाल कमल के समान दिखने वाली, रमणीया, लाल कमल के समान नेत्रों वाली, अठारह भुजाओं वाली, भयंकर, महान् मोक्ष को देने वाली, इस प्रकार से ब्रह्मरूपा का ध्यान करके ढकार की मातृका का जप करे | ढकार सबों का परम आराध्य स्वयं पराशक्ति कुण्डलिनी है | यह वर्ण सदैव पांच प्राण एवं पांच देवताओं से युक्त है | जो तीन गुणों तथा आत्मादि तत्त्वों से सदा युक्त है, ऐसे लाल रंग की बिजली की रेखा के समान दिखने वाले ढकार को मैं प्रणाम करता हूँ | ढकार के पर्याय इस प्रकार हैं - ढक्का, निर्णय, पूर्व, यज्ञेश, नदेश्वर, अर्द्धनारीश्वर, तोय, ईश्वरी, त्रिशिखी, नव, दक्षपादाङ्गुलेर्मूल (दाहिने पैर की अंगुली का मूल), सिद्धिदण्ड,

विनायक, प्रहास, त्रिभवा, ऋद्धि, निर्गुण, निधन, ध्वनि, विघ्नेश, पालिनी, त्वक्कधारिणी, क्रोडपुच्छक, एलापुर, त्वगात्मा अथवा त्वक् एवं आत्मा, विशाखा, श्री, मन एवं रति | अब इस णकार का ध्यान कहता हूँ, उसे सुनो |

द्विभुजां वरदां रम्यां भक्ताभीष्टप्रदायिनीम् |
राजीवलोचनां नित्यां धर्मकामार्थमोक्षदाम् ||२५||
एवं ध्यात्वा ब्रह्मरूपां णकारमातृकाञ्जपेत् |
पञ्चप्राणमयं णन्तु सदा त्रिगुणसंयुतम् ||२६||
पीतविद्युल्लताकारं पञ्चदेवमयं सदा |
आत्मादितत्त्वसंयुक्तं महामोहप्रदायकम् ||२७||

दो हाथों वाली, वरदान देने वाली, रमणीया, भक्तों को अभीष्ट वस्तु प्रदान करने वाली, कमल के समान नेत्रों वाली, धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष को देने वाली ब्रह्मरूपा अविनाशिनी का ध्यान करके णकार की मातृका का जप करे | णकार सदा पांच प्राण और तीन गुणों से युक्त रहता है, यह आत्मादि तत्त्वों से युक्त एवं महान् मोह को देने वाला है |

णो निर्गुणं रतिर्ज्ञानं जृम्भणः पक्षिवाहनः |
जया शम्भुर्नरकजिन्निष्कला योगिनीप्रियः ||२८||
द्विमुखं कोटवी श्रोत्रं समृद्धिर्बोधनी मता |
त्रिनेत्रो मानुषी व्योम दक्षपादाङ्गुलिर्मुखम् (दक्षपादाङ्गुलेर्नखम्)||२९||
वीरो नारायणो माधवश्च शङ्खिनी निर्णयः |
सदा षोडशवर्षीयां रक्ताम्बरधरां पराम् ||३०||
चतुर्भुजां महाशान्तां महामोक्षप्रदायिनीम् |

नानालङ्कारभूषाञ्च सर्वसिद्धिप्रदायिनीम् ||३१||
एवं ध्यात्वा तकारस्य मातृकां परिपूजयेत् |
पीतविद्युत्समं पञ्चप्राणदेवमयं स्मृतम् ||३२||
त्रिशक्तिसहितं तकारमात्मादियुतं स्मरेत् |
तः पूतना हरिः शुद्धिः शक्ती शक्तिर्जटी ध्वजा ||३३||
वामस्फिग्वामकट्यौ च कामिनी मध्यकर्णकः |
आषाढी तण्डतुस्त्रश्च कामिका पृष्ठपुच्छकः ||३४||
रत्नकश्च श्याममुखी वाराही मकरोऽरुणा |
सुगतोऽर्द्धमुखा बुद्धजानुश्च क्रोडपुच्छकः ||३५||
गन्धो बिम्बं मरुच्छत्रश्चानुराधा च सौरकः |
जयन्ती पुलको भ्रान्तिरनङ्गमदनातुरा ||३६||

णकार को निर्गुण, रति, ज्ञान, जृम्भण, पक्षिवाहन, जया, शम्भु, नरकजित्, निष्कला, योगिनीप्रिय अथवा योगिनी एवं प्रिय, द्विमुख, कोटवी, श्रोत्र, समृद्धि, बोधनी, मता, त्रिनेत्र, मानुषी, व्योम, दक्षपादाङ्गुलि, मुख, दाहिने पैर की अंगुली का नाखून, वीर, नारायण, माधव, शङ्खिनी और निर्णय कहते हैं | जो परा-शक्ति सदैव सोलह वर्ष की अवस्था में रहती है, लाल रंग के वस्त्रों को धारण करती है, चार भुजाओं वाली, अत्यन्त शान्त स्वभाव की, महान् मोक्ष को देने वाली, अनेकों प्रकार के आभूषणों को धारण करने वाली तथा सभी सिद्धियों को देने वाली है, ऐसी तकार की मातृका का ध्यान करके उसकी पूजा करे |

इसके बाद पीले रंग की बिजली के समान, पांच प्राण एवं पांच देवताओं से परिपूर्ण, तीन शक्तियों के साथ आत्मा आदि तत्त्वों से संयुक्त तकार का स्मरण करे | पूतना हरि, शुद्धि, शक्ती, शक्ति, जटी, ध्वजा, वामस्फिक्, वामकटि, कामिनी,

मध्यकर्णक, आषाढी, तण्डतुस्र, कामिका, पृष्ठपुच्छक, रत्नक, श्याममुखी, वाराही, मकर, अरुणा, सुगत, अर्द्धमुखा, बुद्धजानु, क्रोडपुच्छक, गन्ध, बिम्ब, मरुत्, छत्र, अनुराधा, सौरक, जयन्ती, पुलक, भ्रान्ति, अनङ्गमदना एवं आतुरा, ये सब तकार के पर्याय हैं |

त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिबिन्दुसहितं सदा |
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं तथा ||३७||
अरुणादित्यसङ्काशं थकारं प्रणमाम्यहम् |
नीलवर्णा त्रिनयना षड्भुजा वरदा परा ||३८||
पीतवस्त्रपरीधाना सदा सिद्धिप्रदायिनी |
तरुणादित्यसङ्काशा स्मर्यते सा थमातृका ||३९||

जो वर्ण तीन शक्ति, तीन बिन्दु, पञ्चदेव एवं पञ्चप्राणों से परिपूर्ण है, प्रातःकाल के सूर्य के समान प्रभा वाला है, ऐसे थकार को मैं प्रणाम करता हूँ | नीलवर्ण वाली, तीन नेत्रों एवं छः भुजाओं वाली, वरदान देने वाली, पराशक्ति, पीले रंग के वस्त्रों को धारण करने वाली, सदैव सिद्धि देने वाली, मध्याह्न काल के सूर्य के समान प्रभा वाली थकार की मातृका का स्मरण किया जाता है |

थः स्थिरामी महाग्रन्थिर्ग्रन्थिग्राहो भयानकः |
शिली शिरसिजो दण्डी भद्रकाली शिलोच्चयः ||४०||
कृष्णो बुद्धिर्विकर्मा च दक्षनासाधिपोऽमरः |
वरदा भोगदा केशो वामजानू रसोऽनलः ||४१||
लोलाप्युज्जयिनी गुह्यः शरच्चन्द्रो दिवाकरः |
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा ||४२||

त्रिशक्तिबिन्दुसंयुक्तं रक्तविद्युल्लतानिभम् |
चतुर्वर्गप्रदञ्चैव दकारं प्रवदाम्यहम् ||४३||
चतुर्भुजा पीतवस्त्रा नवयौवनसंस्थिता |
अनेकरत्नघटितहारनूपुरशोभिता ||४४||
दमाता प्रोच्यते तन्त्रैर्वर्णज्ञानविचक्षणैः |
दोऽद्रीशो धातकिर्धाता दलं दाता कलत्रकम् ||४५||
दीनं ज्ञानञ्च दानञ्च भक्तिराहवनी धरा |
सुषुम्ना योगिनी सद्यः कुण्डलं वामगुल्फकः ||४६||
कात्यायनी शिवा दुर्गा लङ्गना ना त्रिकण्डकी |
स्वस्तिकः कुटिलारूपः कृष्णश्चोमा जितेन्द्रियः ||४७||
धर्महृद्वामदेवश्च भ्रमा बाहुः सुचञ्चला |
हरिद्रा पूरमद्रिश्च दक्षपाणिस्त्रिरेखकः ||४८||

थकार के वाचक इस प्रकार हैं - स्थिरा, अमी, महाग्रन्थि, ग्रन्थिग्राह, भयानक, शिली, शिरसिज, दण्डी, भद्रकाली, शिलोच्चय अथवा शिला एवं उच्चय, कृष्ण, बुद्धि, विकर्मा, दक्षनासा-धिप, अमर, वरदा, भोगदा, केश, वामजानु, रस, अनल, लोला, उज्जयिनी, गुह्य, शरच्चन्द्र अथवा शरत् एवं चन्द्र तथा दिवाकर |

जो पञ्चदेव तथा पञ्चप्राण से युक्त है, तीन शक्ति तथा तीन बिन्दुओं से भी युक्त है, लाल रंग की बिजली की रेखा के समान प्रभा वाला है, चारों पुरुषार्थों को देने वाला है, ऐसे दकार को कहता हूँ | चार भुजाओं वाली, पीले वस्त्रों को धारण करने वाली, नए यौवन की अवस्था में स्थित, अनेकों रत्नों से निर्मित हार तथा नूपुरों से शोभित दकार की वर्णमातृका वर्णज्ञान में निपुण तन्त्रों के द्वारा कही जाती है | दकार के पर्याय इस प्रकार हैं - अद्रीश, धातकि, धाता, दल, दाता, कलत्र,

दीन, ज्ञान, दान, भक्ति, आहवनी, धरा, सुषुम्ना, योगिनी, सद्यः, कुण्डल, वामगुल्फक, कात्यायनी, शिवा, दुर्गा, लङ्कना, ना, त्रिकण्डकी, स्वस्तिक, कुटिलारूप, कृष्ण, उमा, जितेन्द्रिय, धर्महृत्, वामदेव, भ्रमा, बाहु, सुचञ्चला, हरिद्रा, पूर, अर्द्रि, दक्षपाणि एवं त्रिरेखक |

पञ्चदेवपञ्चप्राणत्रिशक्तिबिन्दुसंयुतम् |
पीतविद्युल्लताकारं चतुर्वर्गप्रदायकम् ||४९||
एवं ध्यात्वा धकारन्तु पूजयेत्तस्य मातृकाम् |
षड्भुजां मेघवर्णाञ्च रक्ताम्बरधरां पराम् ||५०||
वरदां शोभनां रम्यां चतुर्वर्गप्रदायिनीम् |
धो धनार्थो रुचिः स्थाणुः सात्वतो योगिनीप्रियः ||५१||
मीनेशः शङ्खिनी तोयं नागेशो विश्वपावनी |
धिषणा धारणा चिन्ता नेत्रयुग्मं प्रियो मतिः ||५२||
पीतवासा त्रिवर्णा च धाता धर्मप्लवङ्गमः |
सन्दर्शो मोहनो लज्जा वज्रतुण्डाधरं धरा ||५३||
वामपादाङ्गुलेर्मूलं ज्येष्ठा सुरपुरं भवः |
स्पर्शात्मा दीर्घजङ्घा च धनेशो धनसञ्चयः ||५४||

पांच देवता, पांच प्राण, तीन शक्ति और तीन बिन्दुओं से युक्त, पीले रंग की बिजली की रेखा के समान आकृति वाले, चतुर्विध पुरुषार्थ को देने वाले धकार का इस प्रकार से ध्यान करके छः भुजाओं वाली, बादलों के वर्ण वाली, लाल रंग के वस्त्रों को धारण करने वाली पराशक्ति, वरदान देने वाली, सुन्दर एवं रमणीया, चतुर्विध पुरुषार्थ को देने वाली उसकी मातृका का पूजन करे | धकार के पर्याय इस प्रकार है - धन, अर्थ, रुचि, स्थाणु, सात्वत, योगिनीप्रिय अथवा योगिनी एवं

प्रिय, मीनेश, शङ्खिनी, तोय, नागेश, विश्वपावनी, धिषणा, धारणा, चिन्ता, नेत्र-युग्म, प्रिय, मति, पीतवासा, त्रिवर्णा, धाता, धर्मप्लवङ्गम अथवा धर्म एवं प्लवङ्गम, सन्दर्श, मोहन, लज्जा, वज्रतुण्डाधर, अथवा वज्र-तुण्ड-अधर, धरा, वामपादाङ्गुलेर्मूल (बाएं पैर की अंगुली का मूल), ज्येष्ठा, सुरपुर, भव, स्पर्शात्मा अथवा स्पर्श एवं आत्मा, दीर्घजङ्घा, धनेश एवं धनसञ्चय |

कोटिविद्युल्लताकारं नकारं प्रवदाम्यहम् |
पञ्चदेवपञ्चप्राणात्मकं परमकुण्डली ||५५||
दलिताञ्जनवर्णाभां ललज्जिह्वां सुलोचनाम् |
चतुर्भुजां कोटराक्षीं चारुचन्दनचर्चिताम् ||५६||
कृष्णाम्बरपरीधानामीषद्धास्यमुखीं सदा |
एवं ध्यात्वा नकारस्य मातृकां परिभावयेत् ||५७||

करोड़ों बिजलियों की रेखाओं के समान आकृति वाले नकार को कहता हूँ | पञ्चदेव एवं पञ्चप्राण से परिपूर्ण यह परम कुण्डलिनी शक्ति है | घिसे हुए काजल के समान वर्ण वाली, लपलपाती जिह्वा एवं सुन्दर नेत्र एवं चार भुजाओं वाली, अन्दर की ओर धंसे हुए नेत्रों वाली, उत्तम चन्दन से विलेपित, काले रंग के वस्त्रों को धारण की हुई, सदैव मन्द मन्द मुस्कुराहट से युक्त मुखमण्डल वाली, इस प्रकार का नकार की मातृका का ध्यान करे |

नो गर्जिनी क्षमा सौरिर्वारुणी विश्वपावनी |
मेषश्च सविता नेत्रं दन्तुरो नारदोऽञ्जनः ||५८||
ऊर्द्धवामी द्विरण्डश्च वामपादाङ्गुलिर्मुखम् (वामपादाङ्गुलेर्नखम्) |
वैनतेयस्तुतिर्वर्त्मस्तरणिर्बलिरागमः ||५९||

वामनो ज्वालिनी दीर्घो निरीहः सुगतिर्वियत् |
शब्दात्मा दीर्घघोणा च हस्तिनापुरमेचकौ ||६०||
गिरिनायकनीलौ च शिवोऽनादिर्महामतिः |
एवं वै टतवर्गाभ्यां मातरो वाचकानि च ||६१||
यथा रूपं यथा तत्त्वमागमेषु प्रकाशितम् |
सम्प्रोक्तानि मया शेषान्यग्रे चैव वदाम्यहम् ||६२||

नकार के अभिधान इस प्रकार हैं - गर्जिनी, क्षमा, सौरि, वारुणी, विश्वपावनी, मेष, सविता, नेत्र, दन्तुर, नारद, अञ्जन, ऊर्द्धवामी, द्विरण्ड, वामपादाङ्गुलि, मुख, बाएं पैर की अंगुली का नाखून, वैनतेय, स्तुति, वर्त्म, तरणि, बलि, आगम, वामन, ज्वालिनी, दीर्घ, निरीह, सुगति, वियत्, शब्दात्मा अथवा शब्द एवं आत्मा, दीर्घघोणा, हस्तिनापुर, मेचक, गिरिनायक, नील, शिव, अनादि एवं महामति | इस प्रकार से टवर्ग एवं तवर्ग की वर्णमातृका तथा वाचकों का जैसा रूप एवं तत्त्व आगमों में प्रकाशित किया गया है, वे मेरे द्वारा कहे गए हैं, शेष वर्णों के विषय में आगे कहता हूँ |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायां चतुर्दशः पटलः ||

| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में चतुर्दश पटल हुआ |

अथ पञ्चदशः पटलः

निग्रह उवाच

अतः परं प्रवक्ष्यामि पकाराक्षरमव्ययम् |
चतुर्वर्गप्रदं वर्णं शरच्चन्द्रसमप्रभम् ||०१||
महामोक्षप्रदं पञ्चदेवप्राणमयं वपुः |
त्रिशक्तिगुणसंयुक्तमात्मादितत्त्वसंयुतम् ||०२||
विचित्रवसनां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणाम् |
रक्तचन्दनलिप्ताङ्गीं पद्ममालाविभूषिताम् ||०३||
मणिरत्नादिकेयूरहारभूषितविग्रहाम्|
चतुर्वर्गप्रदां नित्यां नित्यानन्दमयीं पराम् ||०४||
एवं ध्यात्वा पकारस्य मातृकां परिपूजयेत् |
पः पूरप्रियता तीक्ष्णा लोहितः पञ्चमो रमा ||०५||
गुह्यकर्त्ता निधिः शेषः कालरात्रिः सुवाहिता |
तपनः पालनः पाता पद्मरेणुर्निरञ्जनः ||०६||
सावित्री पातिनी पानं वीरतत्त्वं धनुर्द्धरः |
दक्षपार्श्वश्च सेनानीर्मरीचिः पवनः शनिः ||०७||
उड्डीशं जयिनी कुम्भोऽलसो रेखा च मोहकः |
मूला द्वितीयमिन्द्राणी लोकाक्षी मन आत्मकः ||०८||

इसके बाद मैं अविनाशी पकार अक्षर को कहूँगा | चारों पुरुषार्थों को देने वाला, शरत् काल के चन्द्रमा के समान प्रभा वाला, महामोक्ष को देने वाला, पांच देवता एवं पांच प्राण से युक्त स्वरूप वाला, तीन गुण एवं आत्मादि तत्त्वों से युक्त पकार

होता है | अद्भुत वस्त्रों को धारण करने वाली देवी, जिसके दो हाथ एवं कमल के समान नेत्र हैं, जिन्होंने अपने अंगों में लाल चन्दन का लेप लगा रखा है, कमल के पुष्पों की माला धारण करती हैं, मणि-रत्न आदि से बने केयूर एवं आदि से सज्जित विग्रह वाली, चतुर्विध पुरुषार्थ को देने वाली, अविनाशिनी, सदैव आनन्दमयी पराशक्ति, इस प्रकार से ध्यान करके पकार की मातृका का पूजन करे | पकार को पूरप्रियता, तीक्ष्णा, लोहित, पञ्चम, रमा, गुह्यकर्त्ता, निधि, शेष, कालरात्रि, सुवाहिता, तपन, पालन, पाता, पद्मरेणु, निरञ्जन, सावित्री, पातिनी, पान, वीरतत्त्व, धनुर्द्धर, दक्षपार्श्व, सेनानी, मरीचि, पवन, शनि, उड्डीश, जयिनी, कुम्भ, अलस, रेखा, मोहक, मूला, द्वितीय, इन्द्राणी, लोकाक्षी, मन और आत्मक कहते हैं |

चतुर्वर्गप्रदं फन्तु रक्तविद्युल्लतोपमम् |
आत्मापञ्चदेवप्राणत्रिबिन्दुगुणसंयुतम् ||०९||
नीलपङ्कजवर्णाभां ललज्जिह्वां चतुर्भुजाम् |
भक्ताभयप्रदां नित्यां नानालङ्कारभूषिताम् ||१०||
एवं ध्यात्वा फकारस्य मातृकां परिपूजयेत् |
फः सखी दुर्गिणी धूम्रा वामपार्श्वो जनार्दनः ||११||
जया पादः शिखा रौद्री फेत्कारः शाखिनीप्रियः |
उमा विहङ्गमः कालः कुब्जिनी प्रियपावकौ ||१२||
प्रलयाग्निर्नीलपादोऽक्षरः पशुपतिः शशी |
फुत्कारो यामिनी व्यक्ता पावनो मोहवर्द्धनः ||१३||
निष्फला वागहङ्कारः प्रयागो ग्रामणीः फलम् |
शरच्चन्द्रप्रतीकाशं बकारं समुदाहृतम् ||१४||
चतुर्वर्गप्रदं पञ्चदेवप्राणात्मकं स्मृतम् |

त्रिबिन्दुसहितं ध्यात्वा मातृकां समनुस्मरेत् ||१५||
नीलवर्णां त्रिनयनां नीलाम्बरधरां पराम् |
नागहारोज्ज्वलां देवीं द्विभुजां पद्मलोचनाम् ||१६||
बोऽवनी भूधरो मार्गो घर्घरी लोचनप्रियः |
प्रचेताः कलसः पक्षी स्थलगण्डः कपर्दिनी ||१७||
पृष्ठवंशोऽभया माता शिखिवाहो युगन्धरः |
मुखबिन्दुर्बली घण्टा योद्धा त्रिलोचनप्रियः ||१८||
क्लेदिनी तापिनी भूमिः सुगन्धिश्च बलिः प्रियः |
सुरभिर्मुखविष्णू च संहारो वसुधाधिपः ||१९||
षष्ठी पुरञ्च पेटा च मोदको गगनं प्रति |
पूर्वाषाढामध्यलिङ्गौ शनिः कुम्भतृतीयकौ ||२०||

फकार चारों पुरुषार्थों की सिद्धि कराने वाला है, लाल रंग के विद्युत् की रेखा के समान दृष्टिगत होता है | आत्मा, पञ्चदेव, पञ्चप्राण, त्रिबिन्दु एवं त्रिगुण से संयुत रहता है | नीलकमल के समान वर्ण वाली, लपलपाती जिह्वा और चार भुजाओं वाली, भक्तों को अभयदान देने वाली, अविनाशिनी, अनेकों आभूषणों से सज्जित, इस प्रकार से ध्यान करके फकार की मातृका की पूजा करे | सखी, दुर्गिणी, धूम्रा, वामपार्श्व, जनार्दन, जया, पाद, शिखा, रौद्री, फेत्कार, शाखिनीप्रिय, उमा, विहङ्गम, काल, कुब्जिनी, प्रिय, पावक, प्रलयाग्नि अथवा प्रलय एवं अग्नि, नीलपाद, अक्षर, पशुपति, शशी अथवा शशि, फुत्कार, यामिनी, व्यक्ता, पावन, मोहवर्द्धन, निष्फला, वाक्, अहङ्कार, प्रयाग, ग्रामणी और फल, ये सब फकार के वाचक हैं | बकार शरत् ऋतु के चन्द्रमा के समान प्रकाश वाला बताया गया है | चारों पुरुषार्थों को देने वाला, पांच देवता एवं प्राणों से परिपूर्ण बताया गया है | बकार का तीन बिन्दुओं के साथ ध्यान करके उसकी मातृका का स्मरण करे जो

नीलवर्ण की, तीन नेत्रों वाली, नीले रंग के वस्त्रों को धारण करने वाली पराशक्ति, नागों का हार धारण करने वाली, उज्ज्वला, दिव्या, दो हाथ एवं कमल के समान नेत्रों वाली है | अवनी, भूधर, मार्ग, घर्घरी, लोचनप्रिय, प्रचेता, कलस, पक्षी, स्थलगण्ड, कपर्दिनी, पृष्ठवंश, उभया, माता, शिखिवाह, युगन्धर, मुखबिन्दु, बली, घण्टा, योद्धा, त्रिलोचनप्रिय, क्लेदिनी, तापिनी, भूमि, सुगन्धि, बलि, प्रिय, सुरभि, मुख, विष्णु, संहार, वसुधाधिप, षष्ठी, पुर, पेटा, मोदक, गगन, पूर्वाषाढा, मध्यलिङ्ग, शनि, कुम्भ एवं तृतीय, ये सब बकार के पर्याय है |

तरुणादित्यसङ्काशं महामोक्षप्रदं सदा |
भकारमुज्ज्वलं पञ्चदेवप्राणमयं वपुः ||२१||
तडित्प्रभां महादेवीं नागकङ्कणशोभिताम् |
षड्भुजां वरदां भीमां रक्तपङ्कजलोचनाम् ||२२||
रक्तवस्त्रपरीधानां रक्तपुष्पोपशोभिताम् |
चतुर्वर्गप्रदां देवीं साधकाभीष्टसिद्धिदाम् ||२३||
एवं ध्यात्वा ब्रह्मरूपां मातृकां परिभावयेत् |
भः क्लिन्ना भ्रमरो भीमो विश्वमूर्तिर्निशाभयम् (निशामयम्)||२४||
द्विरण्डो भूषणं मूलं यज्ञसूत्रस्य वाचकः |
नक्षत्रं भ्रमणा दीप्तिर्वयो भूमिः पयो नभः ||२५||
नाभिर्भद्रं महाबाहुर्विश्वमूर्तिर्विभाण्डकः |
प्राणात्मा तापिनी वज्रा विश्वरूपी च चन्द्रिका ||२६||
भीमसेनः सुधासेनः सुखं माया पुरं (मायापुरं) हरः |
तरुणादित्यसङ्काशं चतुर्वर्गप्रदायकम् ||२७||
पञ्चदेवमयं पञ्चप्राणयुक्तं मवर्णकम् |

कृष्णां दशभुजां भीमां पीतलोहितलोचनाम् ||२८||
कृष्णाम्बरधरां नित्यां धर्मकामार्थमोक्षदाम् |
एवं ध्यात्वा मकारस्य मातृकां हृदि भावयेत् ||२९||
मः काली क्लेशितः कालो महाकालो महान्तकः |
वैकुण्ठो वसुधा चन्द्रो रविः पुरुषवाचकः ||३०||
कालभद्रो जया मेधा विश्वदा दीप्तसंज्ञकः |
जठरञ्च भ्रमा मानं लक्ष्मीर्मातोग्रबन्धनौ ||३१||
विषं शिवो महावीरः शशिपुत्रो जनेश्वरः |
प्रमत्तः प्रियसू रुद्रः सर्वाङ्गं वह्निमण्डलम् ||३२||
मातङ्गमालिनी बिन्दुः श्रवणाभं रथो वियत् |
पलालधूमसङ्काशञ्चतुष्कोणमयं वपुः ||३३||
त्रिशक्तिबिन्दुसहितं यकारं मोक्षमव्ययम् |
धूम्रवर्णां महारौद्रीं षड्भुजां रक्तलोचनाम् ||३४||
रक्ताम्बरपरीधानां नानालङ्कारभूषिताम् |
महामोक्षप्रदां नित्यामष्टसिद्धिप्रदायिनीम् ||३५||
एवं ध्यात्वा यकारस्य मातृकां परिपूजयेत् |
यो वाणी वसुधा वायुर्विकृतिः पुरुषोत्तमः ||३६||
युगान्तः श्वसनः (युगान्तश्वसनः) शीघ्रं धूमार्चिः प्राणिसेवकः |
शङ्खा भ्रमो जटी लोला वायुवेगी यशस्करी ||३७||
सङ्कर्षणः क्षपा बालो हृदयं कपिला प्रभा |
आग्नेयो व्यापकस्त्यागो होमो यानं प्रमा सुखम् ||३८||
चण्डः सर्वेश्वरी धूमश्चामुण्डा सुमुखेश्वरी |

त्वगात्मा मलयो माता हंसिनी भृङ्गनायकः ||३९||
चेतना शोषको मीनो धनिष्ठानङ्गवेदिनी |
मेष्ठः सोमः (पङ्क्ति) पक्तिनामा पापहा प्राणसंज्ञकः ||४०||

मध्याह्न काल के सूर्य के समान प्रभा वाला, सदैव महान् मोक्ष को देने वाला, पञ्चदेवता एवं पञ्चप्राणों से युक्त उज्ज्वल शरीर वाला भकार होता है | बिजली के समान चमकने वाली महादेवी, जिसने नागों का कंगन धारण करके शोभा पायी है, छः भुजाओं वाली हैं, वरदान देती हैं, भयंकर हैं, लाल कमल के समान नेत्रों वाली हैं, लाल रंग के वस्त्रों को धारण करती हैं, लाल रंग के ही फूलों से सजी हुई हैं, चारों पुरुषार्थों को देने वाली, जो साधकों को उनकी अभीष्ट सिद्धि देती हैं, ऐसी देवी का ध्यान करके ब्रह्मरूपा मातृका की भावना करे | भकार के पर्याय निम्न हैं - क्लिन्ना, भ्रमर, भीम, विश्वमूर्ति, निशा, अभय, निशामय, द्विरण्ड, भूषण, मूल, यज्ञसूत्र का वाचक, नक्षत्र, भ्रमणा, दीप्ति, वय, भूमि, पय, नभ, नाभि, भद्र, महाबाहु, विश्वमूर्ति, विभाण्डक, प्राणात्मा अथवा प्राण एवं आत्मा, तापिनी, वज्रा, विश्वरूपी, चन्द्रिका, भीमसेन, सुधासेन, सुख, माया, पुर, मायापुर और हर | मवर्ण मध्याह्नकाल के सूर्य के समान प्रभा वाला, पञ्चदेव एवं पञ्चप्राणों से युक्त होता है | काले रंग की, दस भुजाओं वाली, लाल-पीले (कपिल) नेत्रों वाली, काले रंग के वस्त्रों को धारण करने वाली, अविनाशिनी, धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष को देने वाली, इस प्रकार से ध्यान करके मकार की मातृका का हृदय में भाव करे | काली, क्लेशित, काल, महाकाल, महान्तक, वैकुण्ठ, वसुधा, चन्द्र, रवि, पुरुष-वाचक, कालभद्र, जया, मेधा, विश्वदा, दीप्तसंज्ञक, जठर, भ्रमा, मान, लक्ष्मी, माता, उग्रबन्धन, विष, शिव, महावीर, शशिपुत्र, जनेश्वर, प्रमत्त, प्रियसू, रुद्र, सर्वाङ्ग, वह्निमण्डल, मातङ्गमालिनी, बिन्दु, श्रवणाभ, रथ एवं वियत्, ये सभी मकार के वाचक हैं | मांस के धुवें के समान रंग वाला, चार कोणों से युक्त शरीर वाला, तीन शक्ति एवं तीन बिन्दुओं से युक्त यकार मोक्षरूप एवं अविनाशी है | धुवें के समान रंग वाली,

अत्यन्त भयंकर, छः भुजाओं एवं लाल नेत्रों वाली, लाल रंग के वस्त्रों को धारण की हुई, अनेकों आभूषणों से सुसज्जित, महान् मोक्ष को देने वाली, अविनाशिनी एवं अष्टसिद्धियों को देने वाली, इस प्रकार ध्यान करके यकार की मातृका का पूजन करे | यकार के पर्याय इस प्रकार हैं - वाणी, वसुधा, वायु, विकृति, पुरुषोत्तम, युगान्तश्वसन अथवा युगान्त एवं श्वसन, शीघ्र, धूमार्चि, प्राणिसेवक, शङ्खा, भ्रम, जटी, लोला, वायुवेगी, यशस्करी, सङ्कर्षण, क्षपा, बाल, हृदय, कपिला, प्रभा, आग्नेय, व्यापक, त्याग, होम, यान, प्रमा, सुख, चण्ड, सर्वेश्वरी, धूम, चामुण्डा, सुमुखेश्वरी, त्वगात्मा अथवा त्वक् एवं आत्मा, मलय, माता, हंसिनी, भृङ्गनायक, चेतना, शोषक, मीन, धनिष्ठा, अनङ्गवेदिनी, मेष्ठ, सोम, पक्ति अथवा पङ्क्ति, पापहा और प्राणसंज्ञक |

रक्तविद्युल्लताकारं रकारं रेफसंज्ञकम् |
पञ्चदेवात्मकं पञ्चप्राणत्रिबिन्दुसंयुतम् ||४१||
ललज्जिह्वां महारौद्रीं रक्तास्यां रक्तलोचनाम् |
रक्तवर्णामष्टभुजां रक्तपुष्पोपशोभिताम् ||४२||
रक्तमाल्याम्बरधरां रक्तालङ्कारभूषिताम् |
महामोक्षप्रदां नित्यामष्टसिद्धिप्रदायिकाम् ||४३||
एवं ध्यात्वा ब्रह्मरूपां रवर्णमातृकां जपेत् |
रो रक्तः क्रोधिनी रेफः पावकस्तैजसो मतः ||४४||
प्रकाशो दर्शनो दीपो रक्तकृष्णः परं बली |
भुजङ्गेशो मतिः सूर्यो धातुराजः प्रकाशकः ||४५||
व्यापको रेवती दानं कुक्ष्यंशो वह्निमण्डलम् |
उग्ररेखा स्थूलदण्डो वेदकण्ठकला पुरा ||४६||
प्रकृतिः सुगलो ब्रह्मशब्दश्च गायको धनम् |

श्रीकण्ठ उष्मा हृदयं मुण्डी त्रिपुरसुन्दरी ||४७||
सबिन्दुर्योनिजो ज्वाला श्रीशैलो विश्वतोमुखी |
पीतविद्युल्लताकारं लकारं शृणु साम्प्रतम् ||४८||
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा |
त्रिशक्तिबिन्दुसहितं रत्नसौभाग्यदायकम् ||४९||
आत्मादितत्त्वसहितं ध्यात्वा तन्मातृकाञ्जपेत् |
चतुर्भुजां पीतवस्त्रां रक्तपङ्कजलोचनाम् ||५०||
सर्वदा वरदां भीमां सर्वालङ्कारभूषिताम् |
योगीन्द्रसेवितां नित्यां योगिनीं योगरूपिणीम् ||५१||
चतुर्वर्गप्रदां देवीं नागहारोपशोभिताम् |
लश्चन्द्रः पूतना पृथ्वी माधवः शक्रवाचकः ||५२||
बलानुजः पिनाकीशो व्यापको मांससंज्ञकः |
खड्गी नादोऽमृतं देवी लवणं वारुणीपतिः ||५३||
शिखा वाणी क्रिया माता भामिनी कामिनी प्रिया |
ज्वालिनी वेगिनी नादः प्रद्युम्नः शोषणो हरिः ||५४||
विश्वात्ममन्त्रौ बलवान् मेरुर्गिरिः कला रसः |
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि वकारं मोक्षमव्ययम् ||५५||

रेफसंज्ञा वाला रकार लाल रंग की बिजली की रेखा के समान आकृति वाला है | यह पांच देवता, पांच प्राण एवं तीन बिन्दुओं से युक्त है | लपलपाती हुई जिह्वा वाली, अत्यन्त भयंकर, लाल मुखमण्डल एवं लाल नेत्रों वाली, लाल रंग के शरीर एवं आठ भुजाओं वाली, लाल रंग के पुष्पों से शोभित, महान् मोक्ष को देने वाली, अविनाशिनी एवं अष्टसिद्धियों को देने वाली, इस प्रकार ध्यान करके रकार की

ब्रह्मरूपा मातृका का पूजन करे | रकार के पर्याय इस प्रकार हैं - रक्त, क्रोधिनी, रेफ, पावक, तैजस, प्रकाश, दर्शन, दीप, रक्तकृष्ण अथवा रक्त एवं कृष्ण, पर, बली, भुजङ्गेश, मति, सूर्य, धातुराज, प्रकाशक, व्यापक, रेवती, दान, कुक्ष्यंश, वह्निमण्डल, उग्ररेखा, स्थूलदण्ड, वेदकण्ठकला, पुरा, प्रकृति, सुगल, ब्रह्मशब्द, गायक, धन, श्रीकण्ठ, उष्मा, हृदय, मुण्डी, त्रिपुरसुन्दरी, सबिन्दु, योनिज, ज्वाला, श्रीशैल एवं विश्वतोमुखी | अब पीले रंग की बिजली की रेखा के समान आकृति वाले लकार को सुनो | यह वर्ण सदैव पञ्चदेव एवं पञ्चप्राणों से युक्त है, तीन शक्ति तथा तीन बिन्दुओं के साथ है, रत्न एवं सौभाग्य को देने वाला है | आत्मा आदि तत्त्वों के साथ इसका ध्यान करके फिर इसकी मातृका का जप करे जो चार भुजाओं वाली, पीले वस्त्रों को धारण करने वाली, लाल कमल के समान नेत्रों वाली, सदैव वरदान देने वाली, भयंकर, सभी आभूषणों से युक्त, योगियों के स्वामियों के द्वारा सेवित, अविनाशिनी, योगिनी, योगरूपिणी, चारों पुरुषार्थों को देने वाली और नागों के हार से सुशोभित हैं | लकार के वाचक निम्न हैं - चन्द्र, पूतना, पृथ्वी, माधव, शक्रवाचक, बलानुज, पिनाकीश, व्यापक, मांससंज्ञक, खड्गी, नाद, अमृत, देवी, लवण, वारुणीपति, शिखा, वाणी, क्रिया, माता, भामिनी, कामिनी, प्रिया, ज्वालिनी, वेगिनी, नाद, प्रद्युम्न, शोषण, हरि, विश्वात्मा, मन्त्र, बलवान्, मेरु, गिरि, कला और रस | अब मैं वकार को कहूँगा जो मोक्षरूपी एवं अविनाशी है |

पञ्चप्राणमयं वर्णं पञ्चदेवमयं सदा |
आत्मादितत्त्वसंयुक्तं पीतविद्युल्लतामयम् ||५६||
चतुर्वर्गप्रदञ्चैव सर्वसिद्धिप्रदायकम् |
त्रिशक्तिबिन्दुसहितं ध्यात्वा तन्मातृकां स्मरेत् ||५७||
कुन्दपुष्पप्रभां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणाम् |
शुक्लमाल्याम्बरधरां रत्नहारोज्ज्वलां पराम् ||५८||

साधकाभीष्टदां सिद्धां सिद्धिदां सिद्धसेविताम् |
वो बाणो वारुणी सूक्ष्मा वरुणो देवसंज्ञकः ||५९||
खड्गीशो ज्वालिनी वक्षः कलसं ध्वनिवाचकः |
उत्कारीशस्तु ना वीतो वज्रा स्फिक् सागरः शुचिः ||६०||
त्रिधातुः शङ्करः श्रेष्ठो विशेषो यमसादनम् |
पवर्गान्तःस्थवर्णानां मातरो वाचकानि च ||६१||
यथा रूपं यथा तत्त्वमागमेषु प्रकाशितम् |
सम्प्रोक्तानि मया शेषान्यग्रे चैव वदाम्यहम् ||६२||

यह (वकार) सदैव पांच देवता तथा पांच प्राणों से युक्त है | आत्मा आदि तत्त्वों से युक्त है, पीले रंग की बिजली की रेखा के समान दिखता है | इस चारों पुरुषार्थों को देने वाले, सभी सिद्धियों को देने वाले का तीन शक्ति एवं तीन बिन्दुओं के साथ ध्यान करके उसकी मातृका का स्मरण करे जो कुन्द पुष्प के समान प्रभा वाली, दो हाथों तथा कमल के समान नेत्रों वाली, श्वेत वर्ण की माला तथा वस्त्रों को धारण करने वाली, रत्न के हार को पहनने वाली, तेजस्विनी, पराशक्ति, साधक को अभीष्ट देने वाली, सिद्धा, सिद्धि देने वाली एवं सिद्धों के द्वारा सेवित हैं | बाण, वारुणी, सूक्ष्मा, वरुण, देवसंज्ञक, खड्गीश, ज्वालिनी, वक्ष, कलस, ध्वनिवाचक, उत्कारीश, ना, वीत, वज्रा, स्फिक्, सागर, शुचि, त्रिधातु, शङ्कर, श्रेष्ठ, विशेष और यमसादन, ये वकार के पर्याय हैं | पवर्ग एवं अन्तःस्थ वर्णों की मातृका एवं वाचकों का जैसा रूप एवं तत्त्व आगमों में प्रकाशित किया गया है, वह सब मेरे द्वारा कहे गए हैं, अब शेष को आगे कहता हूँ |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायां पञ्चदशः पटलः ||
| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में पञ्चदश पटल हुआ |

अथ षोडशः पटलः

निग्रह उवाच

शकारमुष्मवर्गाद्यं रक्तवर्णप्रभामयम् |
चतुर्वर्गप्रदं प्रोक्तं शकारं ब्रह्मविग्रहम् ||०१||
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं स्मृतम् |
त्रिबिन्दुगुणशक्त्यात्मादितत्त्वसंयुतं स्मरेत् ||०२||
शः सव्यश्च कामरूपी कामरूपो महामतिः |
सौख्यनामा कुमारोऽस्थिः श्रीकण्ठो वृषकेतनः ||०३||
वृषघ्नः शयनं शान्ता सुभगा विस्फुलिङ्गिनी |
मृत्युर्देवो महालक्ष्मीर्महेन्द्रः कुलकौलिनी ||०४||
बाहुर्हंसो वियद्वक्रं हृदनङ्गाङ्कुशः खलः |
वामोरुः पुण्डरीकात्मा कान्तिः कल्याणवाचकः ||०५||

निग्रहाचार्य ने कहा - शकार उष्मवर्णों के वर्ग का आरम्भ है, लाल रंग की प्रभा वाला है | इस शकार को ब्रह्मरूप एवं चारों पुरुषार्थों को देने वाला कहा गया है | यह वर्ण पञ्चदेव एवं पञ्चप्राणों से युक्त बताया गया है | तीन बिन्दु, तीन गुण, तीन शक्ति तथा आत्मा आदि तत्त्वों के साथ इसका स्मरण करे | शकार के अभिधान इस प्रकार हैं - सव्य, कामरूपी, कामरूप, महामति, सौख्य, कुमार, अस्थि, श्रीकण्ठ, वृषकेतन, वृषघ्न, शयन, शान्ता, सुभगा, विस्फुलिङ्गिनी, मृत्यु, देव, महालक्ष्मी, महेन्द्र, कुलकौलिनी, बाहु, हंस, वियद्वक्र, हृत्, अनङ्ग, अङ्कुश, खल, वामोरु, पुण्डरीकात्मा, कान्ति और कल्याणवाचक |

अष्टकोणमयं पञ्चदेवप्राणमयं सदा |
रक्तचन्द्रप्रतीकाशं सुधानिर्मितविग्रहम् ||०६||
रजःसत्त्वतमोयुक्तं चतुर्वर्गमयं वपुः |
त्रिशक्तिबिन्दुसहितमात्मादितत्त्वसंयुतम् ||०७||
षकारमेवं सद्बुद्ध्या ज्ञात्वा तन्मातृकाञ्जपेत् |
चतुर्भुजां चकोराक्षीं चारुचन्दनचर्चिताम् ||०८||
शुक्लवर्णां त्रिनयनां वरदाञ्च शुचिस्मिताम् |
रत्नालङ्कारभूषाढ्यां श्वेतमाल्योपशोभिताम् ||०९||
देववृन्दैस्सदा वन्द्यां सेवितां मोक्षकाङ्क्षिभिः |
एवं ध्यात्वा षकारस्य मातृकां परिपूजयेत् ||१०||
षः श्वेतो वासुदेवश्च पीतं प्रज्ञा विनायकः |
परमेष्ठी वामबाहुः श्रेष्ठो गर्भविमोचनः ||११||
लम्बोदरो यमोऽजेशः कामधुक्कालधूमकः |
सुश्रीरुष्मा वृषो लज्जा मरुद्धक्ष्यः प्रियः शिवः ||१२||
सूर्यात्मा जठरः कोषो मत्ता वक्षो विदारिणी |
कलकण्ठो मध्यभिन्ना युद्धात्मा मलपूः शिरः ||१३||

सदा अष्टकोण, पञ्चदेव तथा पञ्चप्राणों से युक्त, लाल चन्द्रमा के समान प्रकाश वाला, अमृत से बने शरीर वाला, रजोगुण-सत्त्वगुण-तमोगुण से युक्त, चारों पुरुषार्थों से युक्त शरीर, तीन शक्ति एवं तीन बिन्दुओं से युक्त, आत्मा आदि तत्त्वों से युक्त, इस प्रकार अच्छी बुद्धि से षकार को जानकर उसकी वर्णमातृका का जप करे | चार भुजाओं तथा चकोर के समान नेत्रों वाली, उत्तम चन्दन से विलेपित, शुक्लवर्ण एवं तीन नेत्रों वाली, वरदान देने वाली, पवित्र मुस्कान वाली, रत्न एवं

आभूषणों से भरी हुई, श्वेतवर्ण की माला से शोभित, देवताओं के समूह के द्वारा सदैव वन्दित, मोक्ष की कामना रखने वालों के द्वारा सदैव सेवित, इस प्रकार से ध्यान करके षकार की मातृका का पूजन करे | षकार को श्वेत, वासुदेव, पीत, प्रज्ञा, विनायक, परमेष्ठी, वामबाहु, श्रेष्ठ, गर्भविमोचन, लम्बोदर, यम, अजेश, कामधुक्, कालधूमक, सुश्री, उष्मा, वृष, लज्जा, मरुद्रक्ष्य, प्रिय, शिव, सूर्यात्मा, जठरः, कोष, मत्ता, वक्ष, विदारिणी, कलकण्ठ, मध्यभिन्ना, युद्धात्मा, मलपू और शिर कहते हैं |

सकारं शक्तिबीजञ्च कुण्डलीत्रयसंयुतम् |
कोटिविद्युल्लताकारं पञ्चप्राणात्मकं स्मृतम् ||१४||
त्रिबिन्दुगुणसंयुक्तं वर्णमेतत्परात्परम् |
शुक्लाम्बरां शुक्लवर्णां द्विभुजां रक्तलोचनाम् ||१५||
श्वेतचन्दनलिप्ताङ्गीं मुक्ताहारोपशोभिताम् |
गन्धर्वगीयमानाञ्च सदानन्दमयीं पराम् ||१६||
अष्टसिद्धिप्रदां नित्यां भक्तानन्दविवर्द्धिनीम् |
एवं ध्यात्वा सकारस्य मातृकां परिभावयेत् ||१७||
सो हंसः सुयशा विष्णुर्भृग्वीशश्चन्द्रसंज्ञकः |
जगद्बीजं शक्तिनामा सोऽहं वेशवती भृगुः ||१८||
प्रकृतिरीश्वरः शुद्धः प्रभा श्वेता कुलोज्ज्वलः |
दक्षपादोऽमृतं ब्राह्मी परमात्मा परोऽक्षरः ||१९||
सुरूपा च गुणेशो गौः कलकण्ठो वृकोदरी |
प्राणाद्यस्त्रिपुरादेवी लक्ष्मीः सोमो हिरण्यभूः ||२०||
दुर्गोत्तारिणी सम्मोहा जीवो मूर्तिर्मनोहरः |
कुण्डलीद्वयसंयुक्तं हकारं प्रवदाम्यहम् ||२१||

रजःसत्त्वतमोयुक्तं रक्तविद्युल्लतोपमम् |
देवप्राणात्मकं पञ्च त्रिशक्तिबिन्दुसंयुतम् ||२२||
करीषभूषिताङ्गीञ्च साट्टहासां दिगम्बराम् |
अस्थिमाल्यामष्टभुजां वरदामम्बुजेक्षणाम् ||२३||
नागेन्द्रहारभूषाढ्यां जटामुकुटमण्डिताम् |
सर्वसिद्धिप्रदां नित्यां धर्मकामार्थमोक्षदाम् ||२४||
एवं ध्यात्वा हकारस्य मातृकां सञ्जपेद्बुधः |
हः शिवो गगनं हंसो नागलोकोऽम्बिकापतिः ||२५||
नकुलीशो जगत्प्राणः प्राणेशः कपिलामलः |
परमात्मात्मजो जीवो यवाकः शान्तिदोऽङ्गनम् ||२६||
मृगोऽभयोऽरुणा स्थाणुः क्रोष्टुः कूपविरावणः |
लक्ष्मीर्ब्रह्मा हरिः शम्भुः प्राणशक्तिर्ललाटजः ||२७||
स्वकोपवारणः शूली चैतन्यं पादपूरणः |
महालक्ष्मीः परं नादो मेघनादस्तथा मनः||२८||
बिन्दुर्दुर्गा प्रिया देवी मेघः श्यामेश्वरः पुमान् |
दक्षपादः सदा शम्भुः शाखोटः सोममण्डलः ||२९||

सकार तीन कुण्डली से युक्त शक्तिबीज है | यह करोड़ों बिजलियों की रेखाओं के समान आकृति वाला एवं पञ्चप्राणात्मक बताया गया है | तीन बिन्दु एवं तीन गुणों से युक्त यह परात्पर वर्ण है | श्वेत वस्त्रों को धारण की हुई, श्वेत वर्ण के शरीर वाली, दो हाथ एवं लाल नेत्रों वाली, श्वेत चन्दन से लिप्त अंगों वाली, मोतियों की माला से सुशोभित, गन्धर्वों के द्वारा (कीर्तिगान में) गायी जाती हुई, सदैव आनन्द-मयी पराशक्ति, अष्टसिद्धियों को देने वाली, अविनाशिनी, भक्त के आनन्द को

बढाने वाली, इस प्रकार से ध्यान करके सकार की मातृका का भाव करे | सकार के वाचक इस प्रकार हैं - हंस, सुयशा, विष्णु, भृग्वीश, चन्द्रसंज्ञक, जगद्बीज, शक्ति, सोऽहम्, वेशवती, भृगु, प्रकृति, ईश्वर, शुद्ध, प्रभा, श्वेता, कुलोज्ज्वल, दक्षपाद, अमृत, ब्राह्मी, परमात्मा, पर, अक्षर, सुरूपा, गुणेश, गौ, कलकण्ठ, वृकोदरी, प्राणाद्य, त्रिपुरादेवी, लक्ष्मीः, सोम, हिरण्यभू, दुर्गोत्तारिणी, सम्मोहा, जीव, मूर्ति एवं मनोहर | अब मैं दो कुण्डलियों से युक्त हकार को कहता हूँ जो रजोगुण-सत्त्वगुण-तमोगुण से युक्त, लाल रंग की बिजली की रेखा के समान आभा वाला, पांच देवता, पांच प्राण, तीन शक्ति एवं तीन बिन्दु से युक्त है |

सूखे हुए गोबर से विभूषित अंगों वाली, अट्टहास करती हुई, दिशाओं को ही वस्त्र के रूप में धारण करने वाली (नग्नरूपा), हड्डियों की माला धारण करने वाली, आठ भुजाओं वाली, वरदान देने वाली, कमल के समान नेत्रों वाली, नागों के हार को आभूषण के समान धारण करने वाली, जटाओं के ही बने मुकुट से शोभित, सभी सिद्धियों को देने वाली, अविनाशिनी, धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष को देने वाली, इस प्रकार से ध्यान करके हकार की मातृका का बुद्धिमान् व्यक्ति जप करे | हकार को शिव, गगन, हंस, नागलोक, अम्बिकापति, नकुलीश, जगत्प्राण, प्राणेश, कपिल, अमल, परमात्मा, आत्मज, जीव, यवाक, शान्तिद, अङ्गन, मृग, अभय, अरुणा, स्थाणु, क्रोष्टु, कूपविरावण, लक्ष्मी, ब्रह्मा, हरि, शम्भु, प्राणशक्ति, ललाटज, स्वकोपवारण, शूली, चैतन्य, पादपूरण, महालक्ष्मी, पर, नाद, मेघनाद, मन, बिन्दु, दुर्गा, प्रिया, देवी, मेघ, श्यामेश्वर, पुमान्, दक्षपाद, सदा, शम्भु, शाखोट और सोममण्डल कहते हैं |

ळः पृथ्वी विमला मेघोऽनन्तो हव्यवहः सिता |
व्यापिनी शिवदा केतुर्ज्जगत्सारतरं हठः ||३०||
ग्लौर्मृडानी च वेदार्थसारो नारायणः स्वयम् |
जठरो नकुलिः पीता शिवेशोऽनङ्गमालिनी ||३१||

ळकारो विमलो जीवः शिवमूर्तिः प्रकीर्तितः |
शरच्चन्द्रप्रतीकाशङ्कारङ्कथयाम्यहम् ||३२||
येन वै सर्वमन्त्राणां जपः सर्वसमृद्धिदः |
कुण्डलीत्रयसंयुक्तञ्चतुर्वर्गमयं स्मृतम् ||३३||
त्रिशक्तिबिन्दुसंयुक्तमात्मादितत्त्वसंयुतम् |
पञ्चप्राणात्मकं विद्धि पञ्चदेवात्मकं स्मृतम् ||३४||
क्षः कोपस्तुम्बुरुः कालो रुक्षः संवर्त्तकः परः |
नृसिंहो विद्युता माया महातेजा युगान्तकः ||३५||
परात्मा क्रोधसंहारौ बलान्तो मेरुवाचकः |
सर्वाङ्गः सागरः कामः संयोगान्त्यस्त्रिपूरकः ||३६||
क्षेत्रपालो महाक्षोभो मातृकान्तोऽनलः क्षयः |
मुखं कव्यवहानन्ता कालजिह्वा गणेश्वरः ||३७||
छायापुत्रश्च सङ्घातो मलयश्रीर्ललाटकः |
अर्द्धमात्रा कला वाणी नादोऽर्धेन्दुः सदाशिवः ||३८||
अनुच्चार्या तुरीया च विश्वमातृकला परा |
क्षकारो मेरुमन्त्रश्च सर्ववर्णशिरोमणिः ||३९||
एवं नानाप्रकारेण कथितं मातृकाक्षरम् |
पञ्चाशल्लिपिभिर्माला विहिताखिलकर्मसु ||४०||
अकारादिक्षकारान्ता वर्णमाला प्रकीर्तिता |
यस्मै कस्मै न दातव्या गोपनीया प्रयत्नतः ||४१||
अगोचरं परब्रह्म शब्दब्रह्म तु गोचरम् |
शब्दब्रह्म परब्रह्म एवं ज्ञात्वा विमुच्यते ||४२||

ळकार (मूर्धन्य ल) के अभिधान इस प्रकार हैं - पृथ्वी, विमला, मेघ, अनन्त, हव्यवह, सिता, व्यापिनी, शिवदा, केतु, जगत्, सारतर, हठ, ग्लौ, मृडानी, वेदार्थसार, नारायण, जठर, नकुलि, पीता, शिवेश अथवा शिव एवं ईश तथा अनङ्गमालिनी | ळकार को विमल, जीव और शिवमूर्ति भी कहते हैं | अब मैं शरदृतु के चन्द्रमा के समान आभा वाले क्षकार को कहता हूँ जिससे सभी मन्त्रों का जप सभी समृद्धियों को देने वाला हो जाता है | यह तीन कुण्डलियों से युक्त एवं चारों पुरुषार्थों से पूर्ण है | तीन शक्ति, तीन बिन्दु और आत्मा आदि तत्त्वों से युक्त है | इसे पञ्चप्राणों से युक्त जानो, यह पञ्चदेवात्मक बताया गया है | कोप, तुम्बुरु, काल, रुक्ष, संवर्त्तक, पर, नृसिंह, विद्युता, माया, महातेजा, युगान्तक, परात्मा, क्रोध, संहार, बलान्त, मेरुवाचक, सर्वाङ्ग, सागर, काम, संयोग, अन्त्य, त्रिपूरक, क्षेत्रपाल, महाक्षोभ, मातृकान्त, अनल, क्षय, मुख, कव्यवह, अनन्ता, कालजिह्वा, गणेश्वर, छायापुत्र, सङ्घात, मलयश्री, ललाटक, अर्द्धमात्रा, कला, वाणी, नाद, अर्धेन्दु, सदाशिव, अनुच्चार्या, तुरीया, विश्वमातृकला और परा, ये सब क्षकार के वाचक हैं | क्षकार को मेरुमन्त्र एवं सभी वर्णों का शिरोमणि भी कहते हैं | ऐसे अनेकों प्रकार से मातृकाक्षर कहे गए | सभी कर्मों में पचास वर्णों की लिपिमाला बतायी गयी है | (आरोह एवं अवरोह क्रम से ५० x २ = १००, तथा वर्णों के अष्टवर्ग = ८, इस प्रकार से १०८ वर्णों की मातृका पूर्ण होती है जिसमें क्षकार सुमेरुवर्ण होता है) | अकार से क्षकार तक यह वर्णमाला बतायी गयी है | इसे जिस किसी को भी नहीं देना चाहिए, प्रयत्नपूर्वक गोपनीय रखना चाहिए | परब्रह्म अगोचर है और शब्दब्रह्म गोचर है | इस प्रकार से शब्दब्रह्म एवं परब्रह्म को जानकर व्यक्ति मुक्त हो जाता है |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायां षोडशः पटलः ||

| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में षोडश पटल हुआ |

अथ सप्तदशः पटलः

निग्रह उवाच

सत्यमेकं परो धर्मः सत्यमेकं परं तपः |
सत्यमेकं परं ज्ञानं सत्ये धर्मः प्रतिष्ठितः ||०१||
श्रुतिस्मृतिपुराणेषु प्रोक्तो धर्मः सनातनः |
वर्णाश्रमानुरूपेण निषेव्यः सर्वदा जनैः ||०२||
गोदेवगुरुविप्रेषु भक्तिमान्सर्वदा भवेत् |
सतां गुरोश्च वचने विश्वासं सर्वदाचरेत् ||०३||
सत्यं त्यजेन्न सर्वत्र प्राप्तेऽपि प्राणसङ्कटे |
स्त्रीधेनुविप्ररक्षार्थमनृते नैव पातकम् ||०४||

निग्रहाचार्य ने कहा - सत्य ही एक मात्र परमधर्म है, सत्य ही एकमात्र परम तपस्या है, सत्य ही एकमात्र परम ज्ञान है, क्योंकि सत्य में ही धर्म प्रतिष्ठित रहता है | श्रुति, स्मृति और पुराणों में सनातन धर्म बताया गया है | वर्ण और आश्रम के आधार पर, उसके अनुसार सभी लोगों के द्वारा उसका सेवन किया जाना चाहिए | गाय, देवता, गुरु और ब्राह्मण में व्यक्ति को सदैव भक्तिमान् होना चाहिए | सज्जनों और गुरु के वचनों में सदैव विश्वास का आचरण करना चाहिए | प्राणसंकट की प्राप्ति होने पर भी सर्वत्र सत्य का परित्याग नहीं करना चाहिए, यद्यपि स्त्री, धेनु, विप्र इत्यादि की रक्षा के लिए असत्य बोलने में पातक नहीं है |

मातुः कोपः पितुः कोपो गुरोः कोपस्त्वनुग्रहः |
तृष्णां त्यजेत्सदा प्राज्ञो दुर्लभेष्वपि वस्तुषु ||०५||

सत्कथायां सदाचारे सद्व्रते च सदागमे |
धर्मादिसङ्ग्रहे नित्यं तृष्णां कुर्याद्विचक्षणः ||०६||
स्नाने जपे च होमे च स्वाध्याये पितृतर्पणे |
गोदेवातिथिपूजासु निरालस्यो भवेत्सुधीः ||०७||
क्रोधं द्वेषं भयं शाठ्यं पैशुन्यमसदाग्रहम् |
कौटिल्यं दम्भमुद्वेगं यत्नेन परिवर्जयेत् ||०८||

माता का कोप, पिता का कोप और गुरु का कोप उनकी कृपा ही होती है | बुद्धिमान् व्यक्ति को सदैव तृष्णा का परित्याग कर लेना चाहिए, चाहे वह तृष्णा दुर्लभ वस्तु में भी क्यों न उत्पन्न हो गई हो | सत्कथा में, सदाचार में, सद्व्रत में और सज्जनों के आगमन में, धर्म इत्यादि के संग्रह में बुद्धिमान् व्यक्ति को सदैव तृष्णा का पालन करना चाहिए, अर्थात् कभी इनसे तृप्त नहीं होना चाहिए | स्नान, जप, होम, स्वाध्याय, पितृ-तर्पण, गौ, देवता, अतिथि इत्यादि के पूजा में बुद्धिमान् व्यक्ति को सदैव आलस्यहीन रहना चाहिए, अर्थात् तत्पर रहना चाहिए | क्रोध, भय, द्वेष, शठता, चुगली और अशुद्ध आचरण का व्यवहार, कुटिलता, दंभ, उद्वेग इत्यादि को यत्नपूर्वक त्याग देना चाहिए |

अत्याहारमतिक्रोधमतिनिद्रामतिश्रमम् |
अत्यालापमतिक्रीडां सर्वदा परिवर्जयेत् ||०९||
विप्राणां तु विशेषेण दमो धर्मः सनातनः |
दमस्तेजो वर्द्धयति पवित्रो दम उत्तमः ||१०||

अत्यन्त अधिक भोजन करना, अत्यधिक क्रोध करना, अधिक सोना, अत्यधिक परिश्रम करना, अत्यधिक विनोद करना और अत्यधिक खेलकूद करना इन सभी का

सर्वदा परित्याग करना चाहिए | विशेषकर ब्राह्मणों का सनातन धर्म तो दम बताया गया है | दम अर्थात् इन्द्रियों का दमन | दम से ही तेज की वृद्धि होती है, इसलिए दम को पवित्र कहा गया है |

तत्त्वः षड्विंशको लोके तथा यः पुरुषोत्तमः |
वासुदेवः स वै प्रोक्तः परमेशः सतां पतिः ||११||
गुरुकृपां विना नैव ब्रह्मज्ञानं लभेन्नरः |
येन मार्गेण मूढोऽपि देही ब्रह्ममयो भवेत् ||१२||
यस्य श्रवणमात्रेण देही दुःखाद्विमुच्यते |
येन मार्गेण मुनयः सर्वज्ञत्वं प्रपेदिरे ||१३||
तदहं संविधास्यामि गुरुमाहात्म्यमुत्तमम् |
सारञ्च गुरुगीताया यथा शङ्करभाषितम् ||१४||

जो छब्बीसवां तत्त्व है, तथा जो दोनों क्षर और अक्षर पुरुषों में उत्तम है, उसे ही वासुदेव कहा गया है | वही परमेश्वर सभी सज्जनों का स्वामी है | गुरु की कृपा के बिना व्यक्ति को ब्रह्मज्ञान नहीं होता है | जिस मार्ग के माध्यम से मूढ़ व्यक्ति भी मूढ़ शरीरी भी ब्रह्ममय हो जाता है, जिसको सुनने मात्र से देहधारी व्यक्ति दुःख से मुक्त हो जाता है, जिस मार्ग के द्वारा मुनियों ने सर्वज्ञत्व को प्राप्त किया है, गुरु के वैसे ही माहात्म्य को मैं कहने जा रहा हूँ | जिस प्रकार भगवान शङ्कर ने पूर्व में कहा था, उसी प्रकार गुरुगीता का सार मैं बताने जा रहा हूँ |

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने |
समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ||१५||
यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ |

गुरुब्रह्म विना नान्यः सत्यं सत्यं वरानने ||१६||
यो गुरुः स शिवः प्रोक्तो यः शिवः स गुरुः स्मृतः |
विकल्पं यस्तु कुर्वीत स नरो गुरुतल्पगः ||१७||
जपस्तपो व्रतं तीर्थं यज्ञो दानं तथैव च |
गुरुतत्त्वमविज्ञाय सर्वं व्यर्थञ्च निष्फलम् ||१८||

जो अचिन्त्य है, जिनका चिन्तन नहीं किया जा सकता, जो अव्यक्त रूप है, निर्गुण है और फिर भी गुणों से युक्त है, समस्त जगत का आधार है, उस परब्रह्म परमेश्वर को मैं नमस्कार करता हूँ | जिस व्यक्ति की देवताओं में पराभक्ति है, जिस प्रकार अपने इष्ट में भक्ति है उसी प्रकार अपने गुरु में भक्ति है, उसके लिये गुरु ब्रह्म है और उसके बिना, उसके अतिरिक्त और कोई और नहीं है, हे वरानने ! ऐसा मैं सत्य-सत्य कहता हूँ | (ऐसा शिव जी ने कहा था) | जो गुरु है, वह शिव बताया गया है, जो शिव है वही गुरु बताया गया है | जो इन दोनों में भेद देखता है, वह गुरुपत्नीगमन का पाप भोगता है | जप-तप-व्रत-तीर्थ-यज्ञ-दान यह सभी गुरु के तत्त्व को जाने बिना व्यर्थ और निष्फल हैं |

वेदशास्त्रपुराणानि चेतिहासादिकानि च |
शैवशाक्तागमादीनि ये चान्ये बहवो मताः ||१९||
विज्ञानं यत्प्रसादेन गुरुशब्देन कथ्यते |
अज्ञानमूलहरणं जन्मकर्मनिवारकम् ||२०||
ज्ञानविज्ञानसिद्ध्यर्थं गुरुपादोदकं पिबेत् |
गुरोः पादोदकं पीत्वा शेषं शिरसि धारयेत् ||२१||
गुरोः पादोदकं सम्यक् संसारार्णवतारकम् |
यस्य पादोदकं गङ्गा तस्मै श्रीगुरवे नमः ||२२||

वेद-शास्त्र-इतिहास-पुराण आदि तथा शैव-शाक्त आगम इत्यादि जो भी हैं, इनके अलावा भी अन्य जो बहुत से मत हैं, जिसकी कृपा से इन सभी तत्त्वों का ज्ञान होता है, उसको ही गुरु शब्द से पुकारा जाता है | अज्ञान के मूल का हरण करने वाले, जन्मकर्म को दूर करने वाले और ज्ञान-विज्ञान की सिद्धि देने वाले गुरुदेव के चरणों का जल पिए | गुरु के चरणोदक को पी कर बचे हुए चरणोदक को मस्तक में धारण करे | गुरु के चरणोदक का पान करना संसार रूपी समुद्र से भली प्रकार से उद्धार करने वाला है, अर्थात् गुरु का चरणोदक व्यक्ति को संसाररूपी सागर से पार कर देता है | जिनके चरणोदक की गंगा संज्ञा है ऐसे श्रीसम्पन्न गुरुदेव को नमस्कार है |

गुकारश्चान्धकारो हि रुकारस्तेज उच्यते |
अज्ञानग्रासकं ब्रह्म गुरुरेव न संशयः ||२३||
गुकारः प्रथमो वर्णो मायादिगुणभासकः |
रुकारोऽस्ति परं ब्रह्म मायाभ्रान्तिविमोचनम् ||२४||

गुरु शब्द में जो 'गु'कार है वह अन्धकार का प्रतीक है और जो 'रु'कार है उसे तेज कहते है | अज्ञान को अपना ग्रास बनाने वाला अर्थात् अज्ञान को नष्ट करने वाला ब्रह्म गुरु ही है, इसमें संशय नहीं है | 'गु'कार पहला वर्ण है, जो माया आदि गुण का भास कराता है | 'रु'कार का अर्थ परब्रह्म है जो माया की भ्रान्ति का विमोचन करता है |

मधुलुब्धो यथा भृङ्गः पुष्पात्पुष्पान्तरं व्रजेत् |
ज्ञानलुब्धस्तथा शिष्यो गुरोर्गुर्वन्तरं व्रजेत् ||२५||
विना मुक्तिपदं ज्ञानं लभ्यते गुरुभक्तितः |
गुरोः प्रसादतो नान्यत् साधनं गुरुमार्गिणाम् ||२६||

महाहङ्कारगर्वेण तथाविद्याबलेन च |
भ्रमन्त्यस्मिन् कुसंसारे घटीयन्त्रं यथा पुनः ||२७||

जिस प्रकार से कोई भौंरा मधु के लोभ से अलग-अलग पुष्पों में भ्रमण करता रहता है, उसी प्रकार से ज्ञान से ज्ञानलुब्ध शिष्य अलग-अलग गुरुजनों की शरण ग्रहण करे | (अलग-अलग गुरुओं का अर्थ यह नहीं है कि किसी एक गुरु में निष्ठा न रखे अपितु इसका तात्पर्य यह है कि जहां से भी श्रेष्ठ ज्ञान की प्राप्ति हो, वहाँ से उस ज्ञान को ग्रहण कर ले, पूर्वाग्रही नहीं हो) | बिना मुक्त हुए भी व्यक्ति को गुरु की भक्ति से ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है | गुरु के अनुसार चलने वाले लोगों के लिए गुरु की कृपा के अतिरिक्त और कोई भी साधन नहीं है | अत्यन्त अहंकार के गर्व से तथा अविद्या के बल से इस अशुभ संसार में व्यक्ति उसी प्रकार से भ्रमण करता है, जैसे घड़ी के कांटे उसमें भ्रमण करते हैं |

यज्ञिनोऽपि न मुक्ताः स्युर्न मुक्ता योगिनस्तथा |
तापसा अपि नो मुक्ता गुरुतत्त्वपराङ्मुखाः ||२८||
यथा तोयं समुद्रे वै क्षीरे क्षीरञ्जले जलम् |
तथैव ज्ञानवान् जीवः सर्वदा परमात्मनि ||२९||

यज्ञ करने वाले भी मुक्त नहीं होते, योगी भी मुक्त नहीं होते, तपस्वी भी मुक्त नहीं होते, यदि वे अपने गुरुतत्त्व से विमुख हो गए हों | जिस प्रकार से समुद्र में जल है, दूध में उसकी दुग्धता है, जल में उसका जलत्व है, उसी प्रकार से ज्ञानवान् जीव सदैव परमात्मा में निवास करता है |

भवमूलविनाशाय चाष्टपाशनिवृत्तये |
सर्वयत्नप्रकारेण गुरुभक्तिं समाचरेत् ||३०||

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं धर्मसारं शिवोदितम् |
गुरुपूजा समं कृत्यं नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ||३१||

संसार के मूल के नाश के लिए और घृणा-लज्जा-जुगुप्सा इत्यादि अष्टपाशों की निवृत्ति के लिए सभी प्रकार के यत्नों को करते हुए गुरु की भक्ति का आचरण करना चाहिए | सत्य है, सत्य है, पुनः सत्य है, यह धर्म का सार शिव के द्वारा कहा गया है कि - गुरु के पूजा के सामान कृत्य कुछ नहीं है और गुरु के समान तत्त्व भी कुछ नहीं है |

आकल्पजन्मकोटीनां तपोयज्ञव्रतक्रियाः |
भवन्ति सर्वाः सफला गुरूसन्तोषमात्रतः ||३२||
गुरवो निर्मलाः शान्ताः साधवो मितभाषिणः |
कामक्रोधविनिर्मुक्ताः सदाचाराः जितेन्द्रियाः ||३३||

अनेक कल्पों के करोड़ों जन्मों के तप-यज्ञ-व्रत- इत्यादि सभी क्रियाएं गुरु के सन्तुष्ट हो जाने मात्र से ही सफल हो जाती हैं | जो निर्मल हैं, शान्त हैं, साधु हैं, कम बोलने वाले हैं, काम-क्रोध आदि से मुक्त हैं, सदाचारी और जितेंद्रिय हैं, ऐसे ही लोगों को गुरु कहा गया है |

गुरवो बहवः सन्ति शिष्यवित्तापहारकाः |
तमेकं दुर्लभं मन्ये शिष्यचिन्तापहारकम् ||३४||

अपने शिष्य के धन का अपहरण करने वाले तो इस संसार में बहुत से गुरु हैं, लेकिन मैं उसे दुर्लभ मानता हूँ जो शिष्य की चिन्ता का अपहरण कर दे |

अशास्त्रे वञ्चके धूर्ते पाषण्डे नास्तिकादिषु |
गुरुबुद्धिं न वै कुर्यात्कृत्वा दुर्गतिभाग्भवेत् ||३५||

जो शास्त्रज्ञान से रहित हो, ठग हो, धूर्त हो, वेद के ज्ञान का खंडन करता हो, नास्तिक आदि हो, उन लोगों में व्यक्ति अपने गुरु की बुद्धि न करे, यदि करता है तो वह दुर्गति का भागी होता है |

मोहमारणवश्यादितुच्छमन्त्रोपदर्शिनम् |
निषिद्धगुरुरित्याहुः पण्डितास्तत्त्वदर्शिनः ||३६||
ज्ञानाचारविहीनो यः कार्याकार्यविवेकधृक् |
तमुत्पथं परित्यज्य पुनः शुद्धं समाश्रयेत् ||३७||

जो मारण-मोहन-वशीकरण इत्यादि तुच्छ मन्त्रों का उपदेश करता है, ऐसे गुरु को तत्त्वदर्शी पण्डितजन निषिद्ध गुरु कहते हैं | जो ज्ञान के आचार से विहीन है और कार्य एवं अकार्य में अपने विवेक को धारण नहीं करता, उस उत्पथगामी मनमौजी गुरु को छोड़कर शुद्ध गुरु का आश्रय ग्रहण करना चाहिए |

अनित्यमिति निर्दिश्य संसारं सङ्कटालयम् |
वैराग्यपथदर्शी यः स गुरुर्विहितः सुधीः ||३८||

यह संसार अनित्य है और संकटों से घिरा हुआ है, इस प्रकार से जो बताकर वैराग्य-पथ का प्रदर्शन करे, उसे ही बुद्धिमान् गुरु बताया गया है |

कुलं धनं बलं शास्त्रं बान्धवास्सोदरा इमे |
मरणे नोपयुज्यन्ते गुरुरेको हि तारकः ||३९||

कुल-धन-बल-शास्त्र तथा सहोदर बन्धु-बान्धव भाई इत्यादि कोई भी मरने के समय कार्य नहीं आते (उपयोगी सिद्ध नहीं होते), केवल गुरु ही उद्धार करने वाला है |

दापयेत्स्वकृतं पापं यथा भार्या स्वभर्तरि |
तथा शिष्यकृतं पापं गुरुर्गृह्णाति निश्चितम् ||४०||
देशिकात्तत्त्वविज्ञानं ज्ञात्वा ब्रह्मप्रकाशकम् |
एवं तु ब्रह्मविज्ञानी भूत्वा नावर्तते नरः ||४१||

जिस प्रकार से पत्नी पति में अपने पाप को स्थापित कर देती है, उसी प्रकार से शिष्य के किए हुए पाप को भी गुरु ग्रहण करता है | देशिक (श्रेष्ठ गुरु) के द्वारा तत्त्वविज्ञान (जो ज्ञान ब्रह्म का प्रकाशन करने वाला है) को जान, ब्रह्मज्ञानी होकर व्यक्ति पुनः इस संसार में दुबारा जन्म नहीं लेता है |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायां सप्तदशः पटलः ||
| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में सप्तदश पटल हुआ |

अथाष्टादशः पटलः

निग्रह उवाच

सदाचारमहं वक्ष्ये सर्वोपकरणेच्छया |
यमाश्रित्य नरः सद्यो मुच्यतेऽधर्मकर्मणः ||०१||
यौवने कर्म तत्कुर्याद्येन वृद्धः सुखं वसेत् |
यावज्जीवेन तत्कुर्याद्येन प्रेत्य सुखी भवेत् ||०२||

निग्रहाचार्य ने कहा - अब मैं सभी लोगों का उपकार करने की इच्छा से सदाचार का वर्णन करता हूँ, जिसका आश्रय लेकर व्यक्ति अधर्म कर्मों से शीघ्र ही मुक्त हो जाता है | व्यक्ति जवानी में ही वह कर्म कर ले कि बुढ़ापा सुख से व्यतीत हो और जब तक जीवित है, तब तक वह कर्म कर ले कि मरने के बाद व्यक्ति सुखी हो सके |

अजरामरवल्लोके ज्ञानमर्थञ्च चिन्तयेत् |
केशैरिव गृहीतस्तु मृत्युना धर्ममाचरेत् ||०३||
पापकर्मा नरस्तप्त्वा क्षिप्रं पापाद्विमुच्यते |
नैव कुर्यां पुनरिति निवृत्या पूयते तु सः ||०४||

मैं कभी नहीं मरूंगा, कभी बूढ़ा नहीं होऊंगा, ऐसा सोच कर ज्ञान और अर्थ का चिंतन करे | मेरे केशों को मृत्यु पकड़ी हुई है, ऐसा सोच कर और मैं कभी भी मर सकता हूँ, ऐसा सोच कर धर्म का आचरण करे | जो व्यक्ति पाप करता है, वह तप्त होकर अर्थात् प्रायश्चित करके या दंड भोग कर पाप से शीघ्र ही मुक्त हो जाता है | मैं दुबारा पाप नहीं करूंगा, ऐसा सोच कर वह पवित्र हो जाता है।

दैवं पित्र्यञ्च यत्कर्म विना बद्धशिखेन च |
विना यज्ञोपवीतेन यत्कृतं नैव तत्कृतम् ||०५||
वर्जयेद्वै रहस्यानि परेषां गर्हणं बुधः |
अन्यथायुर्धनयशो नाशमायाति तत्क्षणात् ||०६||
शत्रोरपि गुणा ग्राह्या दोषाग्राह्या गुरोरपि |
विवादं न प्रकुर्वीत विप्रभूपचिकित्सकैः ||०७||
निर्णयं धर्मशास्त्राणां प्रायश्चित्तञ्च भैषजम् |
विना शास्त्रेण यो ब्रूयात्तप्यते ब्रह्महत्यया ||०८||

देवताओं का, पितरों का जो भी कर्म है, जो शिखा को बिना बांधे किया जाता है या बिना यज्ञोपवीत के किया जाता है, उसका किया जाना या न किया जाना बराबर ही है, अर्थात् वह निष्फल है | दूसरे के रहस्यों को प्रकाशित न करे अर्थात् निंदा न करे, इससे आयु-धन-यश तुरन्त ही नष्ट हो जाते हैं | शत्रु में भी यदि कोई गुण है, तो उसे अविलम्ब ही धारण कर लेना चाहिए, गुरु में भी यदि कोई अवगुण हो तो उसे ग्रहण नहीं करना चाहिए | ब्राह्मण, राजा और चिकित्सक से विवाद नहीं करना चाहिए | जो व्यक्ति धर्मशास्त्रों के निर्णय, औषधि, प्रायश्चित्त इत्यादि को बिना शास्त्र ज्ञान के ही कह देता है, वह ब्रह्महत्या के पाप से तप्त होता है |

त्वङ्कारन्नामवाच्यञ्च गुरूणां परिवर्जयेत् |
त्वङ्कारो वा वधो वापि गुरूणामुभयं समम् ||०९||
उत्तमैर्न विरुध्येत नाधमैश्च सदा बुधः |
समेन शत्रुता कुर्यात्कर्तव्या मित्रता समैः ||१०||

गुरुजनों को 'तुम' आदि शब्दों से या नाम पुकार कर संबोधित करना वर्जित किया गया है | गुरु के लिए उनकी हत्या करना या उनको 'तुम' आदि अशिष्ट वाच्यों से सम्बोधित करना समान ही बताया गया है | व्यक्ति अपने से उत्तम जनों से कभी विरोध न करे, जो अधम हों उनसे भी विरोध न करे | सम व्यक्तियों से ही शत्रुता और मित्रता करनी चाहिए |

गुरूणाञ्चैव भूपानां पुरतो महादासने |
नासीत गच्छेद्विपदमन्यथेह च प्रेत्य च ||११||
स्त्रीराजमहतां निन्दां न वै कुर्याद्विचक्षणः |
नापवस्त्रां समीक्षेत न क्रुद्धस्य गुरोर्मुखम् ||१२||
सन्त्यजेत्त्रीणि दोषाणि मैत्रीकामो नरो बुधः |
पैशुन्यमर्थवादञ्च परोक्षे दारभाषणम् ||१३||
परालयं न गच्छेतानाहूतो मानमिच्छुकः |
लघुतामन्यथा याति मरणादधिकं ततः ||१४||

गुरुजनों और राजाओं के समक्ष व्यक्ति ऊंचे आसन पर न बैठे अन्यथा वह व्यक्ति विपत्ति को प्राप्त होता है, चाहे वह विपत्ति यहां (मृत्युलोक में) प्राप्त हो या मृत्यु के बाद प्राप्त हो | स्त्री, राजा और श्रेष्ठ व्यक्तियों की निंदा बुद्धिमान् व्यक्तियों को नहीं करनी चाहिए | जिस स्त्री ने वस्त्र धारण नहीं किया हो या जो स्त्री अव्यवस्थित हो, उसे नहीं देखना चाहिए | क्रुद्ध गुरु के मुख की ओर भी व्यक्ति को दृष्टिपात नहीं करनी चाहिए | जो व्यक्ति किसी अन्य से मित्रता की इच्छा रखता हो ऐसा बुद्धिमान् व्यक्ति अपने मित्र के साथ तीन दोषों का परित्याग करे | उसकी चुगली न करे, उससे आर्थिक व्यवहार न करे, उसके अनुपस्थित रहने पर उसकी पत्नी से वार्तालाप या मिलना-जुलना न करे | जो व्यक्ति सम्मान की इच्छा रखता हो उस

व्यक्ति को बिना बुलाए किसी के भी यहां नहीं जाना चाहिए अन्यथा वह लघुता को प्राप्त होता है, जो मरण से अधिक कष्टदायक है |

रत्यर्थं मैथुनं यस्याहारं स्वतृप्तिहेतवे |
विद्याधीता तु वृत्त्यर्थं निष्फलं तस्य जीवितम् ||१५||
न स्त्रीमार्गं व्रजेन्मार्गी नैकः पन्थानमाश्रयेत् |
न गच्छंस्तु पठेद्वापि न भक्षेन्मध्यमार्गतः ||१६||

जो केवल काम सुख की तृप्ति के लिए मैथुन करता है, जो केवल पेट भरने के लिए आहार ग्रहण करता है, जो केवल अर्थार्जन या वृत्ति के लिए विद्या ग्रहण करता है, उसका जीवित रहना निष्फल है, अर्थात् वंशवृद्धि के लिए रति, देह संचालन के लिए आहार और लोगों के उपकार के लिए विद्या ग्रहण करना चाहिए, तभी जीवन सफल होता है | जिस मार्ग में केवल स्त्रियाँ आती जाती रहती हों, वहां पर पुरुष को भ्रमण नहीं करना चाहिए | अकेले ही यात्राओं पर आश्रित नहीं होना चाहिए | चलते हुए पढ़ना नहीं चाहिए और बीच रास्ते में भोजन भी नहीं करना चाहिए |

न मध्ये पूज्ययोर्यायान्न मध्ये भाषमाणयोः |
गोद्विजावग्निविप्रौ वा न गच्छेन्मध्यतः पुमान् ||१७||
श्रोत्रियो निम्नगा राजा धनाढ्यश्च चिकित्सकः |
वासं न तत्र वै कुर्याद्यत्रैषां नैव संस्थितिः ||१८||

जब दो पूज्य व्यक्ति खड़े हों अथवा बातें कर रहे हों तो उनके बीच से नहीं गुजरना चाहिए | गाय-ब्राह्मण-अग्नि-पक्षियों के बीच (दो गायों के मध्य से, दो ब्राह्मणों के मध्य से, पक्षियों के मध्य से अथवा दो अग्नि के मध्य से) व्यक्ति को नहीं गुजरना चाहिए | (यह नियम यज्ञशाला, गोशाला आदि पर लागू नहीं होता, यह विशेषकर

यात्रा, मार्ग आदि के लिये है) जहां पर कोई वेदज्ञ ब्राह्मण न हो, नदी न हो, राजा न हो, धनी व्यक्ति न हो, चिकित्सक न हो, वहां पर व्यक्ति को निवास नहीं करना चाहिए |

चण्डो मूर्खस्तथोन्मादी क्लीबो बालस्तु साहसी |
निर्णयं यत्र कुर्वन्ति तत्र सञ्जायते विपत् ||१९||
परद्रव्यं न गृह्णीयादपि सर्षपमात्रकम् |
परद्रविणहारी यो नारकीङ्गतिमाप्नुयात् ||२०||

जहाँ बहुत से क्रोधी व्यक्ति, मूर्ख व्यक्ति, उन्मादी व्यक्ति, नपुंसक, बहुत बालक या उत्तेजना में दुस्साहस करने वाले व्यक्ति निर्णय लेने वाले अधिकारी हों वहाँ सदैव विपत्तियाँ आती ही रहती हैं | दूसरे के धन को सरसों के दाने के बराबर भी ग्रहण न करे | जो दूसरे के धन को ग्रहण करता है, वह नारकीय गति को प्राप्त होता है |

श्रद्दधानः शुभां विद्याङ्गारुडीण्डामरीं यथा |
क्षुद्रतन्त्रोक्तमन्त्रान्वा हीनादपि समाप्नुयात् ||२१||
श्रेष्ठागमपुराणान्वा वैदिकान्स्मृतिसम्मतान् |
हीनैर्मन्त्रान्न गृह्णीयाद्विशेषाद्ब्राह्मणेतरैः ||२२||

जो व्यक्ति श्रद्धायुक्त हो उसे गारुड़ी, डामरी जैसे शुभा विद्याओं को अथवा छुद्र तन्त्रों में बताए गए मन्त्रों को अपने से हीन व्यक्तियों से भी ले लेना चाहिए लेकिन श्रेष्ठ आगम, पुराण, वैदिक, स्मृतिसम्मत शास्त्र के मन्त्रों को हीन व्यक्ति से ग्रहण न करे, विशेषकर यदि वह हीन व्यक्ति ब्राह्मण न हो |

स्वोदरे परिपूर्णे च स्वतनौ वस्त्रवेष्टिते |
अधिकं कामयन्सद्भिस्तेन इत्यभिधीयते ||२३||

रजसा शुद्ध्यते नारी सरिद्वेगेन शुद्ध्यति |
पाकेन मृण्मयं पात्रं गोमयेन तु वैणवम् ||२४||
काष्ठसङ्घं तक्षणेन कांस्यपात्रं तु भस्मना |
कथ्यते वस्त्रसंशुद्धिरूर्णानां सूर्यरश्मिभिः ||२५||
हस्ताभ्यां नैव कण्डूयेदात्मन उदरं शिरः |
नाभ्यामूर्द्धन्तु दक्षेणाधो वामेनाभिमर्दयेत् ||२६||

अपने उदर के परिपूर्ण रहने पर तथा शरीर के वस्त्र से युक्त रहने पर भी जो व्यक्ति और धन की कामना करता है उसे सन्तजनों ने स्तेन (चोर) की संज्ञा दी है | नारी रजोधर्म से शुद्ध होती है, नदी अपने वेग से शुद्ध होती है, मिट्टी का बर्तन तपाए जाने पर शुद्ध होता है, बांस का बना पात्र गोबर के लेप से शुद्ध होता है | छीलने से या काटने से लकड़ी का समूह शुद्ध होता है, कांसे का पात्र भस्म से शुद्ध होता है, ऊनी वस्त्र की शुद्धि सूर्य के किरणों से कही गई है | अपने पेट या मस्तक को दोनों हाथों से एक साथ न खुजलाए | नाभि से ऊपर के अंगों को दाहिने हाथ से और नाभि से नीचे के अंगों को बाएं हाथ से मर्दन करे अर्थात् खुजलाए |

वस्त्रं नान्यधृतं धार्यं न च वासोविपर्ययम् |
न जीर्णमलिनं नार्द्रं प्रोक्ष्य वासांसि योजयेत् ||२७||
नग्नस्नानं न कुर्वीत न शयीत कदाचन |
यातयामं न भुञ्जीत यदीच्छेदात्मनो हितम् ||२८||

जो वस्त्र दूसरे के द्वारा धारण किया गया हो उसे स्वयं धारण न करे | वस्त्रों को विपरीत क्रम से भी न पहने अर्थात् नीचे पहने जाने वाले वस्त्र को ऊपर और ऊपर पहने जाने वाले को नीचे न पहने | जो वस्त्र जीर्ण हो, मलिन और गीले हों उनको

धारण न करे | इस प्रकार से केवल शुद्ध वस्त्रों का ही प्रयोग करे | नग्न होकर स्नान न करे तथा नग्न होकर कभी भी नहीं सोए | यदि अपना हित चाहता हो तो जो भोजन सड़ गया हो या बासी हो गया हो, उस भोजन को खाए नहीं |

आचारप्रभवो धर्म आचारनिरताः सुराः |
अनाचारं जनं व्यालवद्दूरेण परित्यजेत् ||२९||
गोषु देवे गुरौ वेदे विप्रे पितरि भूपतौ |
यो द्वेषं नावमन्येत सुखं जीवति मानवः ||३०||
एवं स्मृतिपुराणोक्तानाचारानाचरेद्बुधः |
सत्त्वभावसमायुक्तो निर्गुणं सगुणं स्मरेत् ||३१||

धर्म आचार पर ही आश्रित रहता है, देवता भी आचार में ही लगे रहते हैं, जो व्यक्ति आचार से रहित है उसे उसी प्रकार से दूर से ही त्याग दे, जिस प्रकार व्यक्ति सर्प को त्याग देता है | गाय-देवता-गुरु-वेद-ब्राह्मण तथा माता-पिता और राजा के प्रति जो व्यक्ति द्वेष नहीं रखता, वही व्यक्ति सुखपूर्वक जीवित रहता है | इस प्रकार से स्मृति-पुराण इत्यादि में जो आचरण बताए गए हैं, उन आचरणों को बुद्धिमान् व्यक्ति आचरित करे और सत्वभाव से युक्त होकर निर्गुण ब्रह्म अथवा सगुण ब्रह्म का चिन्तन करे |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायामष्टादशः पटलः ||
| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में अष्टादश पटल हुआ |

अथैकोनविंशतिः पटलः

निग्रह उवाच

सगुणं निर्गुणञ्चेति द्विधा ब्रह्म उपास्यते |
निर्गुणङ्गोचरातीतं गोचरं सगुणं स्मृतम् ||०१||
गणेशशारदालक्ष्म्यो ये सूर्यादिनवग्रहाः |
शक्राग्नियमप्रेतेशादयो दिक्पालमण्डलाः ||०२||
पञ्चवक्त्रधरः शम्भुर्गौरी आकाशमेदिनी |
भैरवो वीरभद्रश्च स्कन्दो वै कालपूरुषः ||०३||
वैनतेयो ज्वरो ब्रह्मा ब्रह्माणी च प्रजापतिः |
रूपाण्येतानि वक्ष्यन्ते महाविष्णोः परात्मनः ||०४||
ध्यानं क्रमेण वक्ष्यामि यथा मार्तण्डभाषितम् |
अरुणाय पुराकाले वैनतेयाय वच्मि तत् ||०५||

निग्रहाचार्य ने कहा - ब्रह्म की उपासना दो प्रकार से होती है, निर्गुण और सगुण | जो इन्द्रियों से अतीत है, वह निर्गुण है और जो इन्द्रियों के द्वारा गम्य है वह गोचर, सगुण बताया गया है | गणेश, शारदा, लक्ष्मी और सूर्य इत्यादि नवग्रह, शक्र (इन्द्र), अग्नि, यम, प्रेतों के स्वामी (निर्ऋति) इत्यादि दिक्पालमण्डल के देवता, पांच मुखों को धारण करने वाले शम्भु, गौरी, आकाश, पृथ्वी, भैरव, वीरभद्र, स्कन्द, कालपुरुष, वैनतेय (गरुड़), ज्वर, ब्रह्मा, ब्रह्माणी, प्रजापति ये सब परमात्मा महाविष्णु के ही रूप हैं | इन सबों को अब कहा जाता | जिस प्रकार पूर्व काल में विनता के पुत्र अरुण के लिए भगवान सूर्य ने कहा था, मैं उन सबका क्रमपूर्वक ध्यान उसी प्रकार कहने जा रहा हूँ |

गजवक्त्रो विघ्नराजो मूषकोपरिसंस्थितः |
व्याघ्रचर्माम्बरधरो गणाध्यक्षश्चतुर्भुजः ||०६||
त्रिशूलमक्षमालाञ्च पूर्णकुम्भञ्च पेशलम् |
व्यालयज्ञोपवीती च पद्मासनसमन्वितः ||०७||
सरस्वती च सुमुखी सितवासा चतुर्भुजा |
पुस्तकञ्जलपात्रञ्च वैणवीमक्षमालिकाम् ||०८||
चतुर्हस्तेषु गृह्णाति भारती हंसवाहना |
समपादप्रतिष्ठा सा ध्येया सर्वाङ्गशोभना ||०९||

हाथी के समान मुख वाले, विघ्नों के राजा, मूषक के ऊपर स्थित, व्याघ्र के चर्म को ही वस्त्र के रूप में धारण करने वाले, गणों के स्वामी, चार भुजाओं वाले, त्रिशूल और अक्षमाला को धारण करके, भरे हुए कलश और फरसे को धारण करने वाले, सर्पों के यज्ञोपवीत को धारण किए, पद्मासन में बैठे हुए गणेश जी का ध्यान बताया गया है | सरस्वती जी का ध्यान इस प्रकार है - सरस्वती सुन्दर मुख वाली हैं, श्वेत वस्त्र को धारण करने वाली हैं, चार भुजाओं वाली हैं | अपने चारों हाथों में पुस्तक, जलपात्र, वीणा और अक्षमालिका को धारण करती हैं | भारती इस प्रकार हंस पर आरूढ़ रहती हैं कि उनके पैर समान रूप से भूमि पर लगे हुए हैं (अर्थात् वे सुखासन में बैठी हुई हैं) और सभी अंगों से शोभित हो रही हैं, इस प्रकार के रूप में उनका ध्यान करना चाहिए |

लक्ष्मीर्दिव्याम्बुजधरा सर्वाभरणभूषिता |
विष्णोः पार्श्वे तु द्विभुजान्यत्र ध्येया चतुर्भुजा ||१०||
समुद्रजा सुवर्णा च स्वर्णदिग्गजमण्डिता |
उलूकवाहना श्रीदा पद्मसिंहासने स्थिता ||११||

सूर्यो दिव्यः शुभाकारः सहस्रकवचावृतः |
एकचक्रे स्थितः सप्ताश्वे षडारे रथोत्तमे ||१२||
पद्मद्वयसमायुक्तोऽनन्तरश्मिप्रकाशितः |
चतुर्बाहुर्महातेजाः सर्वाभरणभूषितः ||१३||

लक्ष्मी दिव्य कमल को धारण करने वाली हैं | सभी आभूषणों से भूषित हैं | जब विष्णु भगवान के बगल में बैठी रहती हैं तो दो हाथों वाली होती हैं, अन्यत्र उनका ध्यान चार हाथों वाले रूप में किया जाता है | वह समुद्र से उत्पन्न हैं, सुन्दर वर्ण वाली हैं, स्वर्णकान्ति वाले दिग्गजों से युक्त हैं | उल्लू में बैठती हैं, धन इत्यादि देने वाली हैं और पद्म से बने सिंहासन में स्थित हैं, ये देवी लक्ष्मी का ध्यान है | सूर्य का ध्यान इस प्रकार है - सूर्य दिव्य हैं, शुभ आकृति वाले हैं, हजारों कवचों से युक्त हैं, एक चक्र वाले - छः अरों वाले, सात घोड़ों वाले उत्तम रथ में स्थित हैं | दो पद्मों को अपने हाथों में धारण किए हुए हैं, अनेक प्रकार से प्रकाशित हैं, चार भुजाओं वाले, अत्यन्त तेजस्वी और सभी प्रकार के आभूषणों से युक्त हैं, ऐसा सूर्य भगवान् का ध्यान कहा गया है |

चन्द्रः श्वेतवपुर्ध्येयस्तथा श्वेताम्बरो विभुः |
प्रकाशवदनः सौम्यः कुमुदद्वयशोभितः ||१४||
केयूरमुकुटाढ्यश्च दिव्ये हैमरथे स्थितः |
नक्षत्राभिवृतः सिंहध्वजो सद्विप्रभूपतिः ||१५||
भूमिजो वह्निरूपः स्यात्संस्थितः काञ्चने रथे |
किरीटी द्विभुजश्चोग्रस्त्रिकोणमण्डलान्वितः ||१६||
रक्तवासो रक्तगात्रो रक्तचन्दनचर्चितः |
ऋणरोगापहारी च सङ्कुले विजयप्रदः ||१७||

चन्द्रमा का ध्यान इस प्रकार है - चन्द्रमा श्वेत वर्ण के शरीर वाले हैं, सबों के स्वामी हैं, श्वेत वस्त्रों को धारण करते हैं, प्रकाशवदन हैं, सौम्य हैं, दो कुमुद पुष्पों को धारण करते हैं, केयूर और मुकुट से युक्त हैं, दिव्य सोने से बने युक्त रथ में स्थित हैं, नक्षत्रों से घिरे हुए हैं, उनके रथ में सिंह की ध्वजा सुशोभित है और वे अच्छे ब्राह्मणों के राजा हैं, ऐसा चन्द्रदेव का ध्यान कहा गया है | मङ्गल का ध्यान इस प्रकार है - मङ्गल अग्नि के समान रूप वाले हैं और सोने के बने रथ में स्थित रहते हैं | मुकुट धारण करते हैं, दो भुजाओं वाले हैं, उग्र हैं और त्रिकोण मण्डल से युक्त हैं | लाल रंग के वस्त्रों को धारण करते हैं, लाल रंग के शरीर वाले हैं और लाल चन्दन से ही सुशोभित होते हैं | ऋण और रोग का अपहरण करते हैं और संग्राम इत्यादि में विजय देने वाले हैं, ऐसा मङ्गल का ध्यान बताया गया है |

बुधः पीताम्बरधरो ध्येयः स्वर्णरथे स्थितः |
सर्वरोगहरः सौम्यः सर्वकार्यार्थसिद्धिदः ||१८||
तप्तजाम्बूनदप्रख्यो द्विभुजश्च गुरुस्स्मृतः |
पुस्तकञ्चाक्षमालाञ्च हस्तयोस्तस्य चिन्तयेत् ||१९||
शुक्रः श्वेतवपुश्चिन्त्यो श्वेताम्बरधरस्तथा |
दशाश्वरथसंयुक्तो नीतिपुस्तकधारकः ||२०||
पादहीनस्तथा लौहमयेऽष्टाश्वयुते रथे |
कृष्णवर्णः शनिर्ध्येयो कृष्णाभरणभूषितः ||२१||
दण्डाक्षसंयुतो नीलकृष्णवस्त्रधरः सदा |
मन्दगो वक्रनेत्रश्च दुःस्वरः काकवाहनः ||२२||

पीले वस्त्रों से युक्त बुध का ध्यान इस प्रकार करना चाहिए - बुध पीले वस्त्रों से युक्त हैं, सोने से बने रथ में स्थित हैं, सभी प्रकार के रोगों का हरण करते हैं, सौम्य हैं, सभी प्रकार के कार्यों की सिद्धि प्रदान करते हैं, ऐसा बुध का ध्यान है | तपाए

हुए सोने के समान दो हाथ वाले बृहस्पति बताए गए हैं | उन के दोनों हाथों में पुस्तक और अक्षमालिका का चिन्तन करना चाहिए | इस प्रकार गुरु का ध्यान करना चाहिए | शुक्र का ध्यान श्वेत वर्ण वाले शरीर और श्वेत रंग के वस्त्रों को धारण करने वाले रूप में किया जाना चाहिए | शुक्र दश घोड़ों से युक्त रथ में विराजमान हैं और अपने हाथों में नीति की पुस्तकों को धारण करते हैं | इस प्रकार शुक्र का ध्यान करना चाहिए | लोहे के बने हुए आठ घोड़ों से युक्त रथ में स्थित पैरों से हीन काले वर्ण के शरीर वाले शनि का ध्यान करना चाहिए जो काले रंग के आभूषणों से ही युक्त हैं | ये अपने हाथों में दण्ड और अक्षमालिका को धारण करते हैं | शनिदेव सदैव नीले रंग के अथवा काले रंग के वस्त्रों को धारण करते हैं, धीरे धीरे चलते हैं, वक्र दृष्टि वाले हैं, इनका स्वर बहुत ही कर्णभेदी है तथा ये कौवे के वाहन पर स्थित रहते हैं, इस प्रकार शनि का ध्यान करना चाहिए |

राहुर्धूम्रवपुर्ध्येयो रथेऽष्टाश्वे तु राजते |
संस्थितो द्विभुजः क्रूरश्चोर्ध्वकेशो भयानकः ||२३||
दक्षिणं तु करं शून्यं वामं पुस्तकसंयुतम् |
शिरोमात्रं परिध्यायेद्विचित्रघटनाकरम् ||२४||
उलूकसंस्थितः केतुरुत्तमाङ्गविवर्जितः |
द्विभुजो दक्षिणः शून्यः करो वामः सपुस्तकः ||२५||
अष्टाश्वे वा रथे दिव्ये संस्थितो कनकध्वजः |
उत्पातकारी भूपानां वातव्याधिविनाशकृत् ||२६||

राहु का शरीर धूम्रवर्ण का जानना चाहिए, ये आठ घोड़ों से युक्त चांदी के रथ पर विराजमान होते हैं | इनके दो हाथ हैं, यह अत्यन्त क्रूररूप हैं और इनके केश ऊपर की ओर हैं | ये बहुत ही भयानक दिखते हैं, इनका दाहिना हाथ तो कुछ धारण नहीं करता किंतु बायां हाथ पुस्तक धारण करता है | ये विचित्र घटनाओं को घटित

कराने वाले हैं | इनका ध्यान केवल शिरोमात्र ही करना चाहिए अर्थात् केवल मस्तक का ही ध्यान करना चाहिए | उल्लू में बैठे हुए केतु उत्तम अंग अर्थात मस्तक से रहित हैं, यह दो हाथों से युक्त हैं, इनका भी दाहिना हाथ शून्य है और बायें हाथ में पुस्तक धारण करते हैं | ये सोने की पताका से युक्त आठ घोड़ों से जुते हुए रथ में स्थित रहते हैं | ये राजाओं के उत्पात (शासन और न्याय सम्बन्धी दण्ड एवं यातनाएँ अथवा सत्ता परिवर्तन एवं युद्ध) को जन्म देते हैं और वातजन्य रोगों का नाश करते हैं |

शक्र ऐरावतारूढः सुवर्णाभश्चतुर्भुजः |
किरीटी दक्षहस्तौ तु पद्माङ्कुशविभूषितौ ||२७||
वामौ वज्राभयौ तस्य शची वामाङ्गभूषिता |
नीलपट्टाम्बरधरः सर्वदेवनमस्कृतः ||२८||
सप्तजिह्वाधरो वह्निर्द्विशिरा च महाबलः |
रक्तगात्रश्चतुःशृङ्गी वामे स्वाहा समन्विता ||२९||
त्रिनेत्रो वा चतुर्नेत्रः श्मश्रुयुक्तो महोज्ज्वलः |
रथे चतुःशुकयुते स्थितो यज्ञहुताशनः ||३०||

इन्द्र का ध्यान इस प्रकार बताया गया है - इन्द्र ऐरावत हाथी में आरूढ हैं और सोने के समान कान्तिमान् हैं | ये चार भुजाओं वाले हैं, मस्तक पर मुकुट धारण करते हैं, अपने दाहिनी ओर के दोनों हाथों में पद्म और अंकुश से सुशोभित हैं और बायीं ओर के दो हाथों में वज्र और अभयमुद्रा को धारण करते हैं | शची देवी इनके बाएँ भाग में सुशोभित हैं | ये सभी देवताओं द्वारा नमस्कृत हैं और नीले रंग के वस्त्रों को धारण करते हैं | सात जिह्वाओं वाले अग्निदेव दो मस्तकों से युक्त हैं, महाबली हैं, इनका शरीर लाल वर्ण का है | इनके चार सींग हैं, इनके बाएँ भाग में स्वाहा देवी स्थित हैं | इनके तीन अथवा चार नेत्र बताए गए हैं और इनका

चेहरा दाढ़ी मूँछ से युक्त है तथा बहुत उज्ज्वल है | उनके रथ में चार तोते जुते हुए हैं और ये यज्ञ में दी जाने वाले आहुतियों का ही भक्षण करते हैं |

हयारिवाहनः कृष्णस्तप्तचामीकराम्बरः |
यमो दण्डधरश्चोग्रः खड्गपाशधरः प्रभुः ||३१||
विकटास्यो दीर्घबाहुः स्वर्णकुण्डलमण्डितः |
नीलाम्बुदाभः कालेन चित्रगुप्तेन संयुतः ||३२||
ऊर्ध्वकेशः श्मश्रुयुक्तो द्विबाहुर्विकटाननः |
रक्षःपतिर्विरूपाक्षो दण्डपाशासिधारकः ||३३||
कृष्णरक्ताङ्गदेहश्च कृष्णाम्बरधरस्तथा |
सर्वाभरणसंयुक्तः प्रांशुर्दंष्ट्रोज्ज्वलाननः ||३४||

यमराज भैंसे पर स्थित रहते हैं, काले रंग के हैं, तपाए हुए सोने के समान प्रदीप्त वस्त्रों को धारण करते हैं | यमराज दण्ड धारण करते हैं, उग्र हैं, खड्ग और पाश को धारण करने वाले हैं, सबों के स्वामी हैं | इनका मुखमण्डल अत्यन्त विकट है, इनके हाथ बहुत लम्बे हैं और यह स्वर्णकुण्डल को धारण करते हैं | इनका शरीर काले मेघों के समान है और यह काल तथा चित्रगुप्त से युक्त रहते हैं | राक्षसों के स्वामी निर्ऋति हैं जिनके नेत्र अत्यन्त कुरूप हैं | ये दण्ड, पाश और तलवार धारण करते हैं | इनका पूरा शरीर काले और लाल रंग से युक्त है और ये काले रंगों के वस्त्रों को ही धारण करते हैं | ये सभी प्रकार के आभूषणों से युक्त हैं, अत्यन्त प्रचण्ड एवं तेजस्वी हैं, तीखे दांतों से युक्त हैं और इनका मुखमण्डल अत्यन्त प्रदीप्त है |

लम्बोदरो महाकायो वरुणो यादसां पतिः |
सप्तहंसरथारूढो वैदूर्यमणिसन्निभः ||३५||

श्वेताम्बरधरः श्रीमान् रत्नपङ्कजपाशधृक् |
सहस्रनिम्नगायुक्तश्चतुर्बाहुसमन्वितः ||३६||

अब वरुणदेव का ध्यान बताते हैं - वरुण लम्बे पेट वाले, बहुत विशाल शरीर वाले तथा जलचरों के स्वामी हैं | ये सात हंसो से जुते हुए रथ में आरूढ रहते हैं | इनका शरीर वैदूर्य मणि के समान प्रकाशमान है, ये श्वेत रंग के वस्त्रों को धारण करते हैं, श्रीसम्पन्न हैं और अपने (चारों) हाथों में रत्न, कमल और पाश को धारण करते हैं | ये हजारों नदियों से युक्त हैं और चार हाथों से समन्वित हैं |

वायुर्महाबलो ध्येयो द्विभुजो मृगवाहनः |
नीलवस्त्रवृताङ्गश्च शीघ्रगो व्यापकस्तथा ||३७||
सप्ताश्वरथ आरूढश्चतुश्चक्रे धनुर्धरः |
मुद्गरं दक्षिणे हस्ते धारको रिपुमर्दनः ||३८||

अब महाबली वायु का ध्यान किया जाना चाहिए जो दो हाथ वाले हैं, हिरण पर बैठते हैं, नीले रंग के वस्त्रों से युक्त हैं और अत्यन्त शीघ्रता से गमन करते हैं | सर्वत्र व्याप्त हैं, सात घोड़ों से जुते हुए रथ में स्थित रहते हैं और उस रथ में चार पहिए लगे हुए हैं | यह धनुष को धारण करते हैं, अपने दाहिने हाथ में मुद्गर को भी धारण करते हैं और सभी शत्रुओं का नाश करते हैं |

स्वर्णाभो धनदो ध्येयः पुष्पकासनसंस्थितः |
लम्बोदरश्चतुर्बाहुर्वामपिङ्गललोचनः ||३९||
हस्तयोश्च गदाशक्ती शिविकानरवाहनः |
निधिपूज्यो निधिपतिर्निधिदो निर्धनान्तकः ||४०||

धनराज कुबेर सोने के समान प्रभा वाले बताए गए हैं | कुबेर पुष्पक विमान पर आरूढ़ रहते हैं, इनका पेट भी विशाल है और यह चार हाथों वाले हैं | इनका बायां नेत्र पिंगल वर्ण का है | इनके दोनों हाथों में गदा और शक्ति सुशोभित होते हैं | ये कभी-कभी मनुष्यों द्वारा ढोई जाने वाली पालकी पर भी बैठते हैं | ये निधियों के द्वारा पूजनीय हैं, निधियों के स्वामी हैं, निधियों को देने वाले हैं और निर्धनों का अन्त करने वाले हैं (निर्धनों की निर्धनता का अन्त करने वाले हैं) |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायामेकोनविंशतिः पटलः ||

| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में उन्नीसवाँ पटल हुआ |

अथ विंशः पटलः

निग्रह उवाच

शिवो ध्येयस्त्रिनेत्रस्तु जटामुकुटमण्डितः |
एकाननश्चतुर्बाहुर्वृषारूढः शिवायुतः ||०१||
पञ्चवक्त्रं यदि ध्यायेद्दशबाहुस्त्रिशूलधृक् |
भीमः कपालमाली च लोकसंहारतत्परः ||०२||
भस्मेन्दुसर्पगङ्गाभिर्भूषितो मदनान्तकः |
गजचर्माम्बरधरो व्याघ्रचर्मोपरिस्थितः ||०३||

निग्रहाचार्य ने कहा - शिवजी तीन नेत्रों वाले रूप में ध्यातव्य हैं | ये जटारूपी मुकुट से युक्त हैं, एक मुख वाले हैं, चार हाथों वाले हैं, अपनी शक्ति शिवा से युक्त हैं, वृषभारूढ़ हैं | यदि उनके पांच मुखों वाले रूप का ध्यान करना हो तो – दश हाथों वाले, त्रिशूल पकड़े हुए, भयंकर, अपने गले में कपालों की माला धारण किए हुए और संसार के संहार में तत्पर रहने वाले स्वरूप का ध्यान करना चाहिए | भस्म-चन्द्रमा-गंगा इत्यादि के द्वारा इनका शरीर सुशोभित है, ये कामदेव का अन्त करने वाले हैं, गजासुर के चर्म को ही वस्त्र के रूप में धारण करने वाले हैं और व्याघ्र के चर्म पर स्थित रहते हैं |

आकाशं नीलपद्माभं ध्यायेच्चन्द्रार्कभूषितम् |
द्विभुजं सौम्यवदनं चतुरस्त्रप्रमाणकम् ||०४||
चतुर्भुजा सदा ध्येया रत्नगर्भा च मेदिनी |
पद्महस्ता रक्तवर्णा सौम्या चन्द्रार्कसंयुता ||०५||

आकाश का ध्यान इस प्रकार से बताया गया है - आकाश नीलपद्म के समान प्रभा वाला है और इसका ध्यान सूर्य और चन्द्रमा से युक्त स्वरूप में करना चाहिए | आकाश दो हाथों वाला है, सौम्यवदन वाला है, चारों ओर से आयताकार प्रमाण वाला है | रत्नों को अपने गर्भ में धारण करने वाली पृथ्वी सदैव चतुर्भुजा रूप में ध्यान की जानी चाहिए | इन के सभी हाथों में पद्म विराजमान है, यह लाल वर्ण की है, सौम्य है और सूर्य एवं चन्द्रमा से युक्त है |

गौरी ध्येया दिव्यरूपा श्वेतवस्त्रधरा शुभा |
द्विभुजा स्वर्णपीठस्था रत्नमाल्यविभूषिता ||०६||
कुमुदोत्पलनेत्रा च कौशेयवसना शुभा |
भैरवश्चैव ध्यातव्यो गजचर्माम्बरावृतः ||०७||
कपाली लम्बजठरो रौद्रः पिङ्गललोचनः |
सजलाम्बुदसङ्काशः सर्वतः सर्पभूषणः ||०८||

गौरी अत्यन्त दिव्य रूप में ध्यान की जानी चाहिए | जो श्वेत वस्त्रों को धारण करने वाली हैं, शुभा हैं, दो हाथों वाली हैं, सोने के आसन पर बैठी हुई हैं और रत्नों की माला से युक्त हैं | यह कुमुद के पुष्पों के समान नेत्रों वाली हैं, रेशमी वस्त्रों को धारण करने वाली हैं और शुभा हैं | हाथी के चर्म से युक्त भैरव का भी ध्यान किया जाना चाहिए | यह कपाल को धारण करते हैं, इनका पेट बहुत बड़ा है, यह रौद्र रूप धारण करते हैं, इनके नेत्र पिंगल वर्ण के हैं, ये जल से युक्त बादल के समान प्रभा वाले हैं और चारों ओर से आभूषण के रूप में सांपों को ही धारण करते हैं |

कुमारः षण्मुखो ध्येयो मयूरवरवाहनः |
चतुर्भिर्वा द्वादशभिर्बाहुभिः समलङ्कृतः ||०९||

शक्तिदण्डपताकानां धर्ता देवचमूपतिः |
भद्रो ध्येयश्चतुर्बाहुः सिन्दूरारुणसन्निभः ||१०||
त्रिशूलं भिन्दिपालञ्च हस्तयोस्तस्य चिन्तयेत् |
भूतादिप्रमथैर्युक्तो वीराख्यो व्यालभूषणः ||११||

छः मुख वाले कार्तिकेय का भी ध्यान किया जाना चाहिए जो श्रेष्ठ मयूर के ऊपर विराजमान रहते हैं, यह चार अथवा बारह हाथों से युक्त रहते हैं, अपने हाथों में शक्ति-दण्ड-पताका इत्यादि धारण करते हैं और देवताओं के सेनापति हैं | वीरभद्र (भद्र) का ध्यान चार हाथों से युक्त स्वरूप में करना चाहिए | इनका शरीर सिन्दूर के समान लाल रंग का है, ये हाथों में त्रिशूल और भिन्दिपाल धारण करते हैं | भूतादि प्रमथगणों से युक्त हैं । इनके नाम से पहले वीर शब्द लगाया जाता है, ये सर्पों के ही आभूषण को धारण करते हैं |

करालवदनो दीर्घदंष्ट्रो वै कालपूरुषः |
त्रिलोचनो द्विबाहुश्च द्विपाच्चैव कृशोदरः ||१२||
सर्पवृश्चिकरोमाढ्यो नीलपट्टधरो विभुः |
चर्मसूत्रधरस्तीक्ष्णनखो वज्राङ्गभीषणः ||१३||
गरुडः सर्पभोजी च महामारकतप्रभः |
स्वर्णपक्षश्चतुर्बाहुर्वृत्तनेत्रमुखस्तथा ||१४||

अत्यन्त करालवदन वाले, बड़े विशाल दांतों वाले कालपुरुष का ध्यान करना चाहिए | यह तीन नेत्रों वाला है, दो हाथों वाला है, दो पैर वाला है और इसका पेट अत्यन्त क्षीण है (दुबला पतला धँसा हुआ पेट है) | इसके रोमकूप के स्थान पर सांप-बिच्छू हैं, सबों का स्वामी यह नीले रंग के वस्त्रों को धारण करता है | यह चमड़े के बने हुए यज्ञोपवीत को धारण करता है, इसके तीक्ष्ण नख हैं और

इसका शरीर अत्यन्त भयंकर और वज्र के समान कठोर है । सर्पों का भोजन करने वाले गरुड का ध्यान करना चाहिए जो अत्यन्त महामरकत-मणि के समान प्रभाव वाले हैं | इनके दोनों पंख सोने के बने हुए हैं, इनके चार हाथ हैं, इनका नेत्र और मुख अत्यन्त विशाल है |

ज्वरस्त्रिपादो ध्यातव्यो दीर्घरूपो भयानकः |
सर्वरोगप्रणेता च त्रिबाहुर्व्याकुलेक्षणः ||१५||
उष्णो रौद्रज्वरः प्रोक्तः शीतलो वैष्णवज्वरः |
ऊर्ध्वकेशो महाकायो ज्वलत्कान्तिर्यमोपमः ||१६||

तीन पैरों वाले ज्वरदेवता का ध्यान करना चाहिए जो बहुत ही भयानक और विशाल स्वरूप वाला है, सभी रोगों का प्रणेता है, इसके तीन हाथ हैं और इसके नेत्र अत्यन्त चञ्चल और व्याकुल हैं | जो रुद्रसम्बन्धी ज्वर है, वह गर्म होता है और जो विष्णुसम्बन्धी ज्वर है, वह शीतल होता है | ऊपर की ओर केश वाले, अत्यन्त विशाल शरीर वाले, यमराज के समान अत्यन्त प्रदीप्त कान्ति वाले ज्वर का ध्यान करना चाहिए |

ब्रह्माणञ्चिन्तयेद्विद्वान्देवं सौम्यञ्चतुर्मुखम् |
बद्धपद्मासनङ्कृष्णमृगचर्माम्बरावृतम् ||१७||
जटाधरञ्चतुर्बाहुञ्चतुर्हंसे रथे स्थितम् |
वेदगानरतं लोकसर्जकं पङ्कजोद्भवम् ||१८||
यदा चतुर्भुजं रूपं त्यक्त्वा स द्विभुजो भवेत् |
तदा हंसविमानस्थो ब्रह्मा एव प्रजापतिः ||१९||

विद्वान् व्यक्ति उन ब्रह्मा का भी चिन्तन करे जो सौम्य हैं, चतुर्मुख हैं, पद्म के आसन पर अथवा पद्मासन मुद्रा में बैठे हुए हैं | इन्होंने कृष्णवर्ण के मृगचर्म को ही

वस्त्र के रूप में धारण किया हुआ है, जटाओं से युक्त हैं, चार हाथों से युक्त हैं, चार हंसों से जुते हुए रथ में स्थित रहते हैं | वेदगान करते रहते हैं, संसार की उत्पत्ति करते हैं और भगवान् विष्णु के नाभिकमल से उत्पन्न हुए हैं | जब अपने चतुर्भुज रूप का परित्याग करके ब्रह्मा द्विभुज हो जाते हैं, उस समय हंसयुक्त विमान में बैठे हुए यही ब्रह्मा प्रजापति कहलाते हैं अर्थात् ब्रह्मा और प्रजापति में यही भेद है कि जब चतुर्भुज रूप में रहें तो ब्रह्मा और दो भुजाओं से युक्त रहें तो प्रजापति के नाम से जाने जाते हैं |

ध्येया ब्राह्मी चतुर्वक्त्रा हंसपङ्कजविष्टरा |
षड्भुजा चैव पिङ्गाभा मृगचर्मोत्तरीयका ||२०||
चरुं सूत्रं स्रुवं धत्ते दक्षबाहुत्रये क्रमात् |
वामे च पुस्तकं कुण्डं विभ्रती चाक्षमालिकाम् ||२१||

चार मुखों वाली ब्राह्मी (ब्रह्माणी शक्ति) का भी ध्यान करना चाहिए जो हंस और कमल के आसन पर बैठी हैं | इनके छः हाथ हैं और हल्के पीले वर्ण के समान इनकी प्रभा है | इन्होंने मृगचर्म को ही वस्त्र के रूप में धारण किया है | यह अपने दाहिने भाग के तीन हाथों में चरु (चरुपात्र), सूत्र (यज्ञोपवीत) और स्रुवा को धारण करती हैं एवं बायीं ओर के तीन हाथों में पुस्तक, कुण्ड और अक्षमालिका को धारण करती हैं |

एतेऽनन्तानि रूपाणि विष्णोश्च परमेष्ठिनः |
सगुणानि नरो ध्यात्वा मुच्यते सर्वपातकात् ||२२||
दुष्करं निर्गुणं ध्यानं सुलभं सगुणं तथा |
सगुणं ब्रह्म वै ध्यात्वा निर्गुणं ब्रह्म गच्छति ||२३||

परमेष्ठी भगवान् विष्णु के ऐसे अनन्त रूप कहे गए हैं, इन सभी सगुण रूपों का ध्यान करके व्यक्ति सभी प्रकार के पातकों से मुक्त हो जाता है | निर्गुण का ध्यान अत्यन्त दुष्कर है और सगुण का ध्यान सुलभ है | सगुण ब्रह्म का ध्यान करके ही व्यक्ति निर्गुण ब्रह्म के प्रति गमन करता है |

अहमेव सुखं नान्यदहमेव चिदव्ययः |
अहमेवास्मि सर्वत्र स ज्ञात्वा मुक्तिभाग्भवेत् ||२४||
बद्धत्वमस्ति चेन्मोक्षो बन्धाभावे न मोक्षता |
इदं यदि तदेवापि कार्याभावे न कारणम् ||२५||
वाचा यदुच्यते यच्च मनसा मनुते च यत् |
बुद्ध्या निश्चीयते यच्च तत्तो ब्रह्म परं स्मृतम् ||२६||

मैं ही सुखरूपी हूँ, मैं कुछ और नहीं हूँ | मैं अविनाशी चित्स्वरूपी हूँ | मैं ही सर्वत्र व्याप्त हूँ, ऐसा जानकर व्यक्ति मुक्ति का भागी होता है | यदि संसार में बन्धन है तो मोक्ष भी अवश्य है क्योंकि बन्धन के अभाव में भी मोक्ष का भी कोई औचित्य सिद्ध नहीं होता | यदि यह है तो वह भी है, कार्य के अभाव में कारण भी नहीं होता है | जो वाणी के द्वारा कहा जाए, जो मन के द्वारा चिन्तन किया जाए, बुद्धि के द्वारा जिसका निश्चय किया जाए, ब्रह्म इन सभी विषयों से श्रेष्ठ और परे बताया गया है |

सर्वं मिथ्या जगन्मिथ्या यद्यज्जगति वीक्ष्यते |
यद्यज्जगति वर्तेत सर्वं मिथ्या न संशयः ||२७||
सर्वं सत्यञ्जगत्सत्यं यद्यज्जगति वीक्ष्यते |
यद्यज्जगति वर्तेत सर्वं ब्रह्म न संशयः ||२८||

निषेधेन विधानेनैवं द्विधा ब्रह्म दृश्यते |
सर्वं मिथ्याखिलं ब्रह्म द्विदृष्ट्या सर्वमीक्ष्यते ||२९||

यह सब कुछ मिथ्या है, संसार मिथ्या है, जो कुछ इस संसार में दिखता है और जो कुछ इस संसार में वर्तमान में उपस्थित है, वह सब मिथ्या है, इसमें कोई संशय नहीं | सब कुछ सत्य है, संसार भी सत्य है, जो कुछ संसार में दिखता है, संसार में जो भी घटित हो रहा है, वह सब ब्रह्म है, इसमें भी कोई संशय नहीं है | इस प्रकार से निषेध अर्थात् सब कुछ मिथ्या है और विधान अर्थात् सब कुछ सत्य है इन दोनों प्रकारों से ब्रह्म का दर्शन किया जाता है | सब कुछ मिथ्या है अथवा सब कुछ ब्रह्म है इस प्रकार से सबों के द्वारा दो दृष्टि से ब्रह्म को देखा जाना चाहिए ।

मिथ्याभावे निरासक्तिर्ब्राह्मे तत्त्वार्थदर्शनम् |
कमपि मार्गमाश्रित्य यजेत पुरुषं परम् ||३०||
नाहमस्मि न चान्योऽस्मि देहादिरहितोऽस्म्यहम् |
बन्धमोक्षादिहीनोऽस्म्यवशिष्टो यत्तदस्म्यहम् ||३१||
न त्वदीयो मदीयो वा न तुभ्यं मे न वा क्वचित् |
भावाभावविहीनोऽस्मि भावातीतोऽस्म्यसंशयम् ||३२||

जब मिथ्या का भाव होता है तो व्यक्ति की आसक्ति का नाश हो जाता है और जब सब कुछ ब्रह्म है ऐसा भाव उत्पन्न होता है तो तत्त्व के अर्थ का दर्शन हो जाता है | इन दोनों में किसी भी एक मार्ग का आश्रय लेकर परमपुरुष का आराधन करना चाहिए | मैं यह नहीं हूँ, मैं वह भी नहीं हूँ, मैं देह इत्यादि से रहित हूँ, बन्ध-मोक्ष इत्यादि से भी हीन हूँ और इन के बाद जो बच जाए, मैं वही हूँ | न कुछ मेरा है, न कुछ तुम्हारा है, न कुछ मेरे लिए है, न कुछ तुम्हारे लिए है, भाव और अभाव से जो विहीन है, भाव से जो अतीत है, वही मैं हूँ, निस्संदेह मैं वही हूँ |

अव्यक्ताद्वैतसिद्धान्तं सर्वसिद्धान्तपोषकम् |
निग्रहेणोदितं दिव्यं निग्रहागमसम्मतम् ||३३||
निग्रहे सकलास्तत्त्वा निग्रहे सकलाः सुराः |
ऋषयो निग्रहे सर्वे निर्विरोधस्तु निग्रहः ||३४||
मर्यादा निग्रहाभावे न दृश्या यत्र कुत्रचित् |
तस्माद्दण्डधरैर्देवैर्निग्रहाचरणङ्कृतम् ||३५||

सभी सिद्धान्तों का पोषण करने वाला यह अव्यक्ताद्वैत सिद्धान्त है | निग्रहाचार्य के द्वारा इसे प्रकाशित किया गया है, यह दिव्य और निग्रहागमों से सम्मत है | निग्रह शक्ति में ही सभी तत्त्व स्थित हैं, निग्रहतत्त्व में ही सभी देवता स्थित हैं और निग्रह भाव में ही सभी ऋषि स्थित रहते हैं | इसलिए निग्रह शक्ति निर्विरोध है, इसका किसी से विरोध नहीं है | निग्रह शक्ति के अभाव में कहीं भी मर्यादा नहीं दिखती, इसीलिए दण्ड धारण करने वाले देवताओं के द्वारा सदैव दुष्टों के निग्रह का ही आचरण किया गया है |

प्रभाकरविभायुतं प्रभाकरविभासुप्रदं
निरीहजनपोषकं सकलकामिनीमोषकम् |
अमरचक्ररक्षकं मरणजन्मचक्रान्तकं
भजामि पुरुषोत्तमं प्रणतदुःखशोकान्तकम् ||३६||
सुरासुरनमस्कृतं शिरसि जाह्नवीधारकं
त्रिशूलशरविष्टरान्वितमशुद्धशुद्धिप्रदम् |
हिमालयसुताप्रियं गजमुखस्कन्दसेवितं
भजामि त्रिपुरान्तकं निखिलतापोपहारकम् ||३७||

जो सूर्य के समान प्रकाश से युक्त हैं, सूर्य को भी प्रकाश प्रदान करने वाले हैं, निरीह (असहाय) जनों का पोषण करने वाले हैं, सभी स्त्रियों के मन का हरण करने वाले हैं, देवताओं के सेना की रक्षा करने वाले हैं, मरण और जीवन के चक्र को अर्थात् जीवन और मरण के चक्र को समाप्त करने वाले हैं, ऐसे पुरुषों में उत्तम भगवान विष्णु का मैं भजन करता हूँ, जो अपने शरणागतों के दुःख-शोक का अन्त करने वाले हैं | जो देवता और असुर दोनों के द्वारा नमस्कृत हैं, जो अपने मस्तक में गंगा को धारण करते हैं, त्रिशूल और पिनाक धनुष से युक्त हैं, अशुद्ध को भी शुद्ध करने वाले हैं अर्थात् अशोभनीय कपाल, अस्थि, चर्म, श्मशान इत्यादि को धारण करके उन्हें भी शुद्ध बनाने वाले हैं, हिमालय की पुत्री गिरिजा देवी के प्रिय हैं और गणेश, स्कन्द इत्यादि के द्वारा सेवित हैं, ऐसे त्रिपुरासुर का अन्त करने वाले भगवान् शिव का मैं भजन करता हूँ, जो समस्त प्रकार के तापों का हरण करने वाले हैं |

महार्हमणिधारकं दिनकरं त्रिदेवात्मकं
अशेषतिमिरापहमेकचक्ररथयानगम् |
महोत्पलद्वयान्वितं भवमहारोगभेषजं
भजाम्यदितिसम्भवं सकलतत्त्वार्थदर्शकम् ||३८||
विशालमतिसंयुतं शितमहापर्शुधारिणं
सहस्रप्रमथाधिपं गजमुखप्राणघातकम् |
चतुर्भुजमरिन्दमं भुजगब्रह्मसूत्रान्वितं
भजामि गणनायकं मधुरभुग्ब्रह्मणस्पतिम् ||३९||

जो अत्यन्त दुर्लभ मणियों को धारण करने वाले हैं, दिनकर हैं (दिन की उत्पत्ति करने वाले हैं), तीनों देवताओं के स्वरूप हैं और संसार के समस्त अन्धकार का

नाश करने वाले हैं | एक ही चक्के वाले रथ पर स्थित होकर यात्रा करते हैं, अपने दोनों हाथों में अत्यन्त श्रेष्ठ कमल को धारण करते हैं, संसाररूपी अत्यन्त असाध्य रोग के लिए औषधिस्वरूप हैं, ऐसे अदिति से उत्पन्न होने वाले भगवान् आदित्य (सूर्य) का मैं भजन करता हूँ जो सभी प्रकार के तत्त्वार्थ का दर्शन कराने वाले हैं | जो विशालमति से युक्त हैं और अत्यन्त तीक्ष्ण विशाल परशु को धारण करने वाले हैं, हजारों प्रमथगणों से युक्त हैं, गजमुखासुर के प्राणों का हरण करने वाले हैं, चार भुजा वाले हैं, शत्रुओं का संहार करने वाले हैं, सर्पों के यज्ञोपवीत से युक्त हैं, ऐसे गणपति का (गणनायक का) मैं भजन करता हूँ, जो मधुर भोजन करने वाले हैं और जो ब्रह्मवाच्यों (इसे परमाक्षरसूत्र नामक ग्रन्थ के सूत्रविस्तार भाष्य में देखें) के भी परब्रह्म हैं |

मृगेन्द्रपरिसंस्थितां विधृतहैमतन्त्वम्बरां
हयारिमदघातिनीं विकतडिल्लसद्दामिनीम् |
त्रिलोकपरिपोषिणीं विविधशास्त्रशस्त्रान्वितां
भजामि जगदम्बिकामधिगतान्नैव धीगताम् ||४०||
संहिता ब्रह्मज्ञानदा दशशतश्लोकमण्डिता
निग्रहाचार्यसत्कृता निगमतन्त्रपौराणिकैः |
सम्मता सुनिद्रालुना सुप्तब्रजेशेण वीक्षिता
पुराणपुरुषोत्तमाज्ञया धुरन्धरसंज्ञका ||४१||

जो मृगेन्द्र अर्थात् सिंह के ऊपर स्थित रहती हैं, सोने के धागों से जिस वस्त्र का निर्माण हुआ है ऐसे वस्त्रों को धारण करती हैं अर्थात् स्वर्णमय वस्त्रों से युक्त हैं और महिषासुर के मद का मर्दन करने वाली हैं, नई व्यायी हुई गाय के दूध अथवा विद्युत् के समान उज्ज्वल प्रभा वाली हैं | त्रिलोक का पोषण करने वाली हैं, अनेक प्रकार के शस्त्र और शास्त्र से युक्त हैं, ऐसी जगदम्बिका का मैं भजन करता हूँ, जो

हमारे सामने प्रकृति रूप से प्रत्यक्ष तो हैं किंतु बुद्धि की पकड़ में नहीं आती हैं | इस प्रकार से ब्रह्म ज्ञान को देने वाली एक हजार श्लोकों से युक्त यह संहिता है (अन्तिम की पञ्चदेवतास्तुति और समापन श्लोक को मिलाकर कुल १००६ श्लोक), जो निग्रहाचार्य के द्वारा अत्यन्त सद्भावना से युक्त होकर लिखी गई है | यह निगम (वेद), तन्त्र और पौराणिक सिद्धान्तों के द्वारा समर्थित है | अत्यन्त गहरी निद्रा में सोए हुए ब्रजेश (ब्रजेश पाठक-ज्यौतिषाचार्य) के द्वारा इसे देखा गया और भगवान् पुराण पुरुषोत्तम की आज्ञा से इसका नाम धुरन्धर रखा गया है |

|| इति श्रीनिग्रहाचार्यकृतायां धुरन्धरसंहितायां विंशः पटलः ||

| इस प्रकार से श्रीनिग्रहाचार्य के द्वारा रची गयी धुरन्धरसंहिता में बीसवाँ पटल हुआ |

*_*_*